R.N.I. No.HIN/2002/8718 www.aksnews.com M.P./BHOPAL/642/2021-23

In Pursuit of Truth

पाक्षिक

अक्स

वर्ष : 21 । अंक : 02
16 से 31 अक्टूबर 2022
पृष्ठ : 48
मूल्य : 25 रु.

मिशन 2022, 23 और 24

राजनीति का हॉट स्पॉट बना मध्य प्रदेश

विधानसभा और लोकसभा चुनाव के लिए
पार्टियों ने मप्र को बनाया केंद्र

मोदी, शाह, राहुल, केजरीवाल वाया मप्र
अन्य राज्यों को साधने में जुटे

ANU SALES CORPORATION

We Deal in Pathology & Medical Equipment

Address : M-179, Gautam Nagar, Near Chetak Bridge, Bhopal-462023

9329556524, 9329556530 Email : ascbhopal@gmail.com

इस अंक में

वल्लभगाथा

9 | बैंस को एक्सटेंशन या मिलेगा नया सीएस

प्रदेश में नए मुख्य सचिव की सुगबुगाहट तेज हो गई है। ऐसे में कयास लगाए जा रहे हैं कि वर्तमान मुख्य सचिव इकबाल सिंह बैंस को सरकार एक्सटेंशन देगी या कोई नया मुख्य सचिव प्रदेश को मिलेगा।

राजपथ

10-11 | मिशन 2023 में संघ बनेगा सारथी

मप्र में विधानसभा चुनाव में एक साल का समय बचा है। इससे पहले दोनों ही बड़ी राजनीतिक पार्टियां मिशन 2023 में जुट गई हैं। इसके तहत भाजपा का तीन दिवसीय प्रशिक्षण वर्ग 7 अक्टूबर से 9 अक्टूबर तक पर्यटन...

सौगात

15 | 1,373 करोड़ में बिछेगा सड़कों का जाल

विधानसभा चुनाव 2023 से पहले प्रदेश में जहां गांव से लेकर शहर तक सड़कों का जाल बिछेगा, वहीं मानसून से जर्जर हुई सड़कों का पेंचवर्क भी पूरा किया जाएगा। इसके लिए केंद्र सरकार ने पूंजीगत व्यय के लिए मप्र को विशेष सहायता योजना...

आर्थिकी

18 | भारतीय अर्थव्यवस्था की चुनौतियां

पूरी दुनिया में मंदी के बादल मंडरा रहे हैं। दुनियाभर के अर्थशास्त्री आशंकित और सशंकित हैं। दुनिया का सप्लाई चेन लगातार तीन साल से कोरोना और रूस-यूक्रेन युद्ध जैसे अनियंत्रित कारणों से प्रभावित है। कोरोना ने खपत को बड़े पैमाने पर प्रभावित किया था और रूस-यूक्रेन युद्ध आपूर्ति...

आवरण कथा 24, 25, 26, 27, 28

हिमाचल प्रदेश के विधानसभा चुनाव की घोषणा के साथ ही सभी राजनीतिक पार्टियां चुनावी मोड में आ गई हैं। भाजपा और कांग्रेस के साथ सभी पार्टियां मिशन 2022, मिशन 2023 और मिशन 2024 की तैयारी में जुट गई हैं। इसके लिए प्रमुख राजनीतिक पार्टियों ने मप्र को अपना केंद्र बनाना शुरू कर दिया है। इसलिए मप्र इन दिनों देश की राजनीति का हॉट स्पॉट बना हुआ है। हर पार्टी का प्रमुख इन दिनों मप्र से अपने चुनावी मिशन का आगाज कर रहा है।

राजनीति

30-31 | अपने पैरों पर खड़ी होगी कांग्रेस?

कांग्रेस का इतिहास कहता है कि ये पार्टी अपनी स्थापना के बाद कई बार टूटी है। लेकिन, हर बार उतनी ही मजबूती से खड़ी भी हुई है। हां, ये जरूर है कि इस बार कांग्रेस के लिए चुनौती बड़ी है। सामने नरेंद्र मोदी जैसा करिश्माई नेतृत्व और भाजपा जैसी विशाल संसाधनों वाली राजनीतिक...

महाराष्ट्र

35 | उद्धव की तीसरी हार!

उद्धव ठाकरे चुनाव निशान और पार्टी के नाम को लेकर बुरी तरह फंस गए हैं। अंधेरी विधानसभा सीट पर उपचुनाव के चलते चुनाव आयोग ने शिवसेना पार्टी का नाम और चुनाव निशान धनुष बाण दोनों फ्रीज कर दिए हैं। दोनों पक्षों को नया नाम और नया निशान चुनने को कहा गया है।

उप्र

37 | बुल्डोजर के साथ विकास भी

उप्र में योगी आदित्यनाथ की सरकार ने अपने दूसरे कार्यकाल के छह महीने पूर्ण कर लिए हैं। राज्य के राजनीतिक इतिहास में लगभग साढ़े तीन दशक के पश्चात किसी दल को दोबारा सत्ता में लाने का इतिहास रचने वाले योगी आदित्यनाथ ने अपने...

6-7 अंदर की बात
41 महिला जगत
42 अध्यात्म
43 कहानी
44 खेल
45 फिल्म
46 व्यंग्य

अपनी बात

क्या 'गांधी' से मुक्त होगी कांग्रेस...?

किसी शायर ने लिखा है...

मेरा पानी उतरा देखकर मेरे किनारे घर मत बसा लेना,
मैं समंदर हूं लौटकर वापस जरूर आऊंगा।

ये पंक्तियां गांधीमुक्त कांग्रेस का सपना देखने वालों के लिए बड़ा संकेत दे रही हैं। दरअसल, देश में इन दिनों कांग्रेस अध्यक्ष के लिए चुनावी माहौल है। मल्लिकार्जुन खड़गे और शशि थरूर के बीच मुकाबला है। यानी इन्हीं में से कोई एक कांग्रेस का अगला अध्यक्ष बनेगा। अध्यक्ष कोई भी बने लेकिन सवाल यह है कि क्या कांग्रेस 'गांधी' से मुक्त हो पाएगी। इस सवाल के साथ जिन्हें नहीं मानना, न मानें, मगर कांग्रेस की सियासत का एक नया दौर तो शुरू हो गया है। इस दौर में कांग्रेस एक नई संरचना के सांचे में ढलेगी। भारत जोड़ो यात्रा कांग्रेस की धमनियों में नई ऊर्जा उंडेल रही है। राहुल की यात्रा ने महीनेभर में तीन काम कर डाले हैं। एक, सियासी आसमान में छाया खौफ बहुत कम कर दिया है। दो, आमजन को सवाल उठाने के लिए सशक्त बनाया है। तीन, नाउम्मीदी के तालाब में बदलाव की उम्मीद का दीया प्रवाहित कर दिया है। वरना अब से चंद महीने पहले तक पूरा मुल्क असहाय-भाव से टुकुर-टुकुर ताक रहा था। 17 अक्टूबर को देशभर के प्रदेश-कांग्रेस कार्यालयों में कांग्रेस-अध्यक्ष पद के लिए होने वाले मतदान की पेटियां जब 19 अक्टूबर को दिल्ली में खुलेंगी तो 66 साल के शशि थरूर 80 साल के मल्लिकार्जुन खड़गे से हार जाएंगे। हो सकता है कि वे बुरी तरह हार जाएं। लेकिन खड़गे की भारी-से-भारी जीत से भी देशभर के कांग्रेसजन सड़कों पर आकर कमर मटका-मटका कर फुदकने वाले नहीं हैं। इसलिए कि 22 बरस बाद मतदान के जरिए हो रहे कांग्रेस अध्यक्ष के चुनाव में न तो खड़गे की उम्मीदवारी ने कांग्रेसी हृदय के तारों को झंकृत करने जैसा काम किया है और न थरूर की उम्मीदवारी से कांग्रेसजन उनके प्रति किसी खलनायकी भाव से भरे हुए हैं। खड़गे के माथे पर 'अधिकृत प्रत्याशी' की जो पगड़ी बंधी हुई है, अगर वह थरूर के माथे पर बंधी होती तो उनकी जीत पर भी कांग्रेसजन उतनी ही उत्साहहीन मुद्रा में पाए जाते, जितनी में वे खड़गे की जीत पर 19 अक्टूबर को पाए जाएंगे। कांग्रेस के लिए यह चुनाव एक शुष्क औपचारिकता है। कोई भी जीते-हारे, कांग्रेस की भावी सेहत से इस चुनाव नतीजे का कोई लेना-देना ही नहीं होगा। कांग्रेसी भाग्य के विधाता राहुल गांधी हैं और भारत जोड़ो यात्रा के जरिए तेजी से परिष्कृत और उन्नत हो रही उनकी छवि ही आने वाले दिनों में कांग्रेस का नसीब पूरी तरह बदलेगी। 2024 के आम चुनाव में राहुल और प्रियंका की केंद्रीय भूमिका पर कोई सवालिया निशान इसलिए नहीं है कि नरेंद्र मोदी के झंझावात का सामना खड़गे कर लेंगे, यह बात कौन मान सकता है? तो क्या कांग्रेस का पार्टी-संगठन अब अगले 5 साल खड़गेमय रहेगा, क्योंकि राहुल-प्रियंका में से तो कोई शिखर-कमान अब 2029 के लोकसभा चुनावों के दो साल पहले ही संभाल पाएगा? सो, आने वाला समय कांग्रेस में सामूहिक नेतृत्व की ठोस पहलकदमी का है। कार्यसमिति के चुनाव इसकी शक्ल तय करेंगे। मतदान से चुनकर आने वाले 12 सदस्यों में कई ऐसे नाम होंगे, जिन पर अभी किसी की नजर नहीं जा रही है। 12 मनोनीत सदस्य भी अजब संतुलन के खेल की गजब गाथा लिखने के खातिर नामजद होंगे। इन सबके बावजूद सवाल यह उठता है कि आजादी के बाद से अब तक 75 साल में गैर गांधी परिवार से आने वाले 14वें अध्यक्ष बगैर 'गांधी' के कांग्रेस चला पाएंगे या वे खड़ाऊ अध्यक्ष बनकर रह जाएंगे।

– राजेन्द्र आगाल

पाक्षिक अक्स

वर्ष 21, अंक 2, पृष्ठ-48, 16 से 31 अक्टूबर, 2022

प्रकाशक एवं संपादक : राजेन्द्र आगाल

सम्पादकीय कार्यालय :
प्लाट नम्बर 150, जोन-1 मनोरमा कॉम्पलेक्स,
एफ-03, 04, प्रथम तल, एम.पी. नगर
भोपाल- 462011 (म.प्र.),
फोन नं. 0755-2557777, टेलीफेक्स - 0755-4017788
email : akshmagazine@gmail.com
Website : www.akshnews.com
RNI NO. HIN/2002/8718 MPBPL/642/2021-23

ब्यूरो
कोलकाता:- इंद्रकुमार, **छत्तीसगढ़:**- संजय शुक्ला, मार्केण्डेय तिवारी,
जयपुर:- आर.के. बिन्नानी, **लखनऊ :**- मधु आलोक निगम।

प्रदेश संवाददाता
094251 25096 (इंदौर) विकास दुबे
098276 18400 (जबलपुर) धर्मेन्द्र कथूरिया
094259 85070, (उज्जैन) श्यामसिंह सिकरवार
098934 77156, (गंजबासौदा) ज्योत्सना अनूप यादव
089823 27267, (रतलाम) सुभाष सोमानी
075666 71111, (विदिशा) मोहित बंसल

क्षेत्रीय कार्यालय
नई दिल्ली : ईसी 294 माया इंक्लेव मायापुरी
फोन : 9811017939
जयपुर : सी-37, शांतिपथ, श्याम नगर (राजस्थान)
मोबाइल-09829 010331
रायपुर : एमआईजी 1 सेक्टर-3 शंकर नगर,
फोन : 0771 2282517
भिलाई : नेहरू भवन के सामने, सुपेला, रामनगर,
भिलाई, मोबाइल 094241 08015
इंदौर : नवीन रघुवंशी, रघुवंशी कॉलोनी, इंदौर,
मो.-9827227000
देवास : जय सिंह, देवास
मो.-7000526104, 9907353976

स्वत्वाधिकारी, मुद्रक व प्रकाशक, राजेन्द्र आगाल द्वारा आगाल प्रिंटर्स, प्लाट नं. 150, जोन-1, प्रथम तल, एफ-03, मनोरमा काम्पलेक्स, एम.पी. नगर भोपाल 462011 (म.प्र.), से मुद्रित एवं प्रकाशित

इस अंक में प्रकाशित सामग्री लेखकों के अपने विचार हैं इनसे सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं हैं समस्त विवादों के लिए न्याय क्षेत्र भोपाल होगा।

पेड़ लगाएं, ऑक्सीजन लाएं

मप्र सहित देशभर में पेड़ों की कटाई आम बात हो गई थी, लेकिन कोरोना महामारी के दौरान जब ऑक्सीजन की आवश्यकता बढ़ी तो लोगों को पेड़ों का महत्व समझ में आया। अब गांवों से लेकर शहरों तक लोग पौधारोपण कर रहे हैं।

● **शैलेंद्र त्रिपाठी,** राजगढ़ (म.प्र.)

नाथ को नहीं भरोसा

अपने करीबी नेताओं पर विश्वास करके सत्ता गंवा चुके कमलनाथ अब राजनीति में हर कदम फूंक-फूंककर रख रहे हैं। उनकी कार्यप्रणाली से यह साफ है कि अब उनको किसी पर विश्वास नहीं रह गया है। इसलिए वे अकेले मोर्चा संभाले हुए हैं। इससे उनके खिलाफ पार्टी में माहौल निर्मित हो रहा है।

● **प्रिया सोनी,** भोपाल (म.प्र.)

किसान के साथ दुर्व्यवहार

लोगों का पेट भरने के लिए देश का किसान दिन-रात मेहनत करता है, अनाज उगाता है, तब कहीं जाकर वह अन्न के रूप में लोगों तक पहुंचता है। लेकिन कुछ लोग किसान की परेशानी बन गए हैं, जो नकली खाद-बीज का व्यापार कर रहे हैं।

● **रेणुका दीक्षित,** इंदौर (म.प्र.)

श्योपुर को गरीबी से उबारना होगा

मप्र इस समय देशभर में छाया हुआ है। इसकी वजह हैं 70 साल बाद चीतों की उपस्थिति। लेकिन मप्र जितना चीतों को लेकर चर्चा विषय बना हुआ है, उससे कई ज्यादा श्योपुर की स्थिति को लेकर बन रहा है। चीतों को छोड़े जाने की तस्वीर देश ही नहीं बल्कि पूरे विश्व में छाई हुई है। इसके साथ ही प्रदेश के पिछड़े और आदिवासी बाहुल्य जिला श्योपुर में पर्यटन की संभावनाएं बढ़ गई हैं। यानी अब देश ही नहीं बल्कि विदेश के लोग भी श्योपुर आएंगे। देश में 70 साल बाद चीतों की वापसी वाकई गौरव की बात है। लेकिन जिस क्षेत्र में इन चीतों को बसाने की कवायद की जा रही है, वह क्षेत्र देश का सबसे पिछड़े और कुपोषित क्षेत्र माना जाता है। उसे भी सुधारने की जरूरत है।

● **हितेश सोलंकी,** जबलपुर (म.प्र.)

केजरीवाल की तैयारी

देश की राजनीति को अच्छा बनाने के लिए अच्छे नेताओं की आवश्यकता है। आज के दौर में नेता एक-दूसरे को गलत बोलकर अपनी राजनीतिक रोटियां सेंक रहे हैं। वहीं दिल्ली में केजरीवाल सरकार ने नया फरमान जारी किया है कि 200 यूनिट मुफ्त बिजली उसी को दी जाएगी, जो आवेदन करेगा। एक फार्म भी सर्कुलेट किया गया है, आवेदन सीधे मुख्यमंत्री के नाम देना होगा। ताकि वोटर को यह एहसास हो कि उसे केजरीवाल ने फ्री बिजली दी। आने वाले दिनों में कई राज्यों में विधानसभा चुनाव होने हैं, जिसकी तैयारी केजरीवाल कर रहे हैं।

● **सबा कुरैशी,** नई दिल्ली

राहुल की यात्रा

आगामी लोकसभा चुनाव में कांग्रेस की स्थिति को मजबूत करने के लिए राहुल गांधी भारत जोड़ो यात्रा कर रहे हैं। बशर्ते पूरी यात्रा के दौरान वो सबके साथ बने भी रहें। कांग्रेस की सबसे बड़ी चुनौती लोगों का पार्टी से भरोसा उठ जाना भी है और इसे फिर से हासिल करने के लिए ही वो लोगों तक पहुंचने के लिए सिविल सोसाइटी को माध्यम बनाने जा रही है। ये तो समय ही बताएगा कि कांग्रेस की भारत जोड़ो यात्रा कितनी सफल हो पाती है।

● **रामेश्वर दांगी,** सीहोर (म.प्र.)

पाठकों से निवेदन

कृपया अपनी प्रतिक्रियाएं पक्ष या विपक्ष जो भी संभव हो इस पते पर भेजें

अक्स

150 जोन-1, मनोरमा काम्पलेक्स, एफ-02, 03, एमपी नगर, भोपाल

'आप' बिगाड़ेगी भाजपा-कांग्रेस का खेल

कुछ ही महीनों के भीतर होने जा रहे हिमाचल प्रदेश के विधानसभा चुनाव के लिए आम आदमी पार्टी ने चार सीटों पर प्रत्याशी उतारकर अपनी ताकत झोंकना शुरू कर दिया है। इनमें से तीन प्रत्याशी पहले भाजपा या कांग्रेस में रहे हैं। कहा जा रहा है कि सिरमौर जिला की पावंटा साहिब, कांगड़ा जिला की नगरोटा बगवां और फतेहपुर सीट पर 'आप' भाजपा-कांग्रेस का समीकरण बिगाड़ सकती है। दरअसल भाजपा सरकार में मंत्री और सांसद रहे डॉ. राजन सुशांत इस बार 'आप' के टिकट पर फतेहपुर से चुनाव लड़ रहे हैं। डॉ. सुशांत भाजपा से चार बार विधायक रहे हैं। वे धूमल सरकार में राजस्व मंत्री थे। सुशांत वर्ष 1982 में सबसे कम उम्र के विधायक बने थे। 2009 में कांगड़ा-चंबा लोकसभा सीट से सांसद चुने गए। वहीं, हिमाचल प्रदेश युवा कांग्रेस के अध्यक्ष और राष्ट्रीय महासचिव रहे मनीष ठाकुर मार्च 2022 में 'आप' में शामिल हुए हैं। आप ने उन्हें पांवटा साहिब से प्रत्याशी बनाया है। उमाकांत डोगरा 2012 में भाजपा के साथ थे। 2017 में भाजपा से टिकट के लिए आवेदन किया था, लेकिन टिकट अरुण को दिया गया। वर्ष 2018 में उन्होंने आप का दामन थामा था। वहीं, 'माकपा' में रहे सुदर्शन जस्पा हाल ही में आप में शामिल हुए हैं। वह वर्तमान में 'आप' के लाहौल स्पीति जिला प्रभारी हैं।

फिर टूटा सचिन का सपना

राजस्थान में मचे सियासी घमासान के बीच एक बार फिर से सचिन पायलट को झटका लगता दिख रहा है। इस बार उम्मीद थी कि पायलट को मुख्यमंत्री पद की कुर्सी आसानी से मिल जाएगी, उन्हें राज्य में किसी की चुनौती का भी सामना नहीं करना पड़ेगा, लेकिन मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के समर्थक विधायकों ने ऐसा हंगामा मचाया कि इस बार भी मुख्यमंत्री की कुर्सी पायलट के हिस्से आती नजर नहीं आ रही हैं। यह पहली बार नहीं है, पायलट के हाथ से मुख्यमंत्री की कुर्सी कई बार निकल चुकी है। कभी कांग्रेस आलाकमान के निर्देश पर तो कभी बगावत में सफलता नहीं मिलने के कारण पायलट राज्य के मुखिया बनते-बनते रह गए हैं। दरअसल मुख्यमंत्री अशोक गहलोत कांग्रेस का अध्यक्ष पद का चुनाव लड़ने के लिए मैदान में थे। जीत के बाद गहलोत को मुख्यमंत्री की कुर्सी खाली करनी पड़ती, क्योंकि कांग्रेस 'एक व्यक्ति एक पद' के सिद्धांत पर चल रही है। ऐसे में गहलोत की जगह पर पायलट को आलाकमान मुख्यमंत्री बनाना चाहता था, लेकिन अब गहलोत ने फिर से खेल, खेल दिया है। गहलोत समर्थक विधायक पायलट के खिलाफ हो गए हैं और उन्होंने इस्तीफा दे दिया है, अगर ऐसा ही रहा तो फिर से पायलट के हाथ से मुख्यमंत्री की कुर्सी निकल जाएगी।

खतरे में शिंदे का सेहरा

महाराष्ट्र में एकनाथ शिंदे ने बतौर मुख्यमंत्री तीन महीने पूरे कर लिए हैं। इन तीन महीनों में उनके कामकाज का कोई खास रिकॉर्ड नहीं है, उलटे वेदांता फॉक्सकॉन प्रोजेक्ट महाराष्ट्र से गुजरात चले जाने से छवि का बड़ा नुकसान हुआ है। ऊपर से अभी तक शिवसेना पर नियंत्रण को लेकर निर्णायक तौर पर कुछ नहीं हुआ है। चुनाव आयोग को इस बारे में फैसला करना है। उसके बाद नगर निगम का चुनाव होगा। ऐसे में अटकलें लगाई जा रही हैं कि शिंदे की कुर्सी इन चुनावों तक है। दरअसल, बृहन्नमुंबई महानगर पालिका यानी बीएमसी के साथ-साथ पुणे, ठाणे जैसे बड़े शहरों के चुनाव होंगे। कहा जा रहा है कि भाजपा को उस समय तक शिंदे की जरूरत है। भाजपा को शिंदे के जरिए ही शिवसेना को निपटाना है। मुंबई और ठाणे में यह काम शिंदे कर सकते हैं। एक बार बीएमसी पर से उद्धव ठाकरे गुट का कब्जा खत्म हो गया तो फिर शिवसेना का अपने पैरों पर खड़ा होना मुश्किल हो जाएगा। ऐसी स्थिति में निगम चुनाव तक शिंदे को बनाए रखना है और उसके बाद भाजपा को कमान अपने हाथ में लेनी है। जानकारों का कहना है कि देवेंद्र फडणवीस अब भी सरकार की कमान संभाल रहे हैं। लेकिन उनके करीबियों का कहना है कि तीन से छह महीने में वे फिर से मुख्यमंत्री बन जाएंगे।

कांग्रेस का सिरदर्द

अगले साल होने वाले कर्नाटक विधानसभा चुनाव को लेकर राजनीतिक पार्टियां अभी से सक्रिय हो गई हैं। इस बीच एसडीपीआई राज्य समिति के सदस्य रियाज कदंबू ने 2023 के कर्नाटक विधानसभा चुनाव में कम से कम 100 सीटों पर चुनाव लड़ने का ऐलान कर दिया है। ऐसे में एक ओर जहां कांग्रेस 'भारत जोड़ो यात्रा' के जरिए अपनी खोई हुई जमीन और कर्नाटक को फिर से हासिल करने की कोशिश कर रही है, उसके लिए एसडीपीआई सबसे बड़ा सिरदर्द बनते जा रहा है, जो तटीय कर्नाटक में कांग्रेस के मुस्लिम वोट बैंक पर कब्जा कर रहा है। जबकि एसडीपीआई ने इस क्षेत्र में कोई भी विधानसभा क्षेत्र नहीं जीता, हालांकि उनके वोट शेयर में वृद्धि देखी गई। 2013 के कर्नाटक विधानसभा चुनाव में, एसडीपीआई को 3.2 फीसदी का वोट शेयर मिला और 2018 के चुनाव तक वोट शेयर बढ़कर 10.5 फीसदी हो गया। एसडीपीआई ने दिसंबर 2021 में कर्नाटक के शहरी स्थानीय निकाय चुनावों में भी छह सीटें जीती थीं।

एनडीए में अकाली की वापसी!

कैप्टन अमरिंदर सिंह की पार्टी के भाजपा में विलय के बाद अब पार्टी की नजर अपनी पुरानी सहयोगी अकाली दल पर है। अकाली दल के नेता सुखबीर बादल ने पिछले दिनों केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह से मुलाकात की। इससे पहले उन्होंने अपनी पार्टी को लेकर कई सुधारों की घोषणा की। बताया जा रहा है कि अकाली दल और भाजपा के बीच वापस गठबंधन हो सकता है। भाजपा ने भले कैप्टन अमरिंदर सिंह या इकबाल सिंह लालपुरा जैसे सिख चेहरों को आगे किया है लेकिन उसको पता है कि सिख उसके साथ नहीं जुड़ेंगे। उसे हिंदू वोटों की राजनीति करनी होगी। इसके लिए उसके पास सुनील जाखड़ का चेहरा है, जो कांग्रेस छोड़कर भाजपा में शामिल हुए हैं। कैप्टन के साथ उनकी काफी नजदीकी भी है। ऐसे में कहा जा रहा है कि भाजपा सुनील जाखड़ और विजय सांपला जैसे अपने हिंदू चेहरों को आगे करके सुखबीर बादल की पार्टी के साथ तालमेल कर सकती है। इसमें दोनों पार्टियों को फायदा दिख रहा है।

धरी रह गई सारी तैयारी

प्रदेश में विगत दिनों खाद को लेकर बुलाई गई समीक्षा बैठक में अफसरों ने मुख्यमंत्री को खुश करने के लिए एक प्रेजेंटेशन तैयार किया था। लेकिन अफसरों की सारी तैयारी पर उस समय पानी फिर गया, जब बैठक की शुरुआत में ही रबी सीजन में किसानों को खाद नहीं मिलने की कम्प्लेन पर मुख्यमंत्री अफसरों पर पिल पड़े। अफसरों ने उनसे कहा कि प्रदेश में खाद वितरण को लेकर हमने एक प्रेजेंटेशन बनाया है, कृपया उसका अवलोकन तो कर लें। लेकिन खाद संकट पर नाराज मुख्यमंत्री ने अफसरों को फटकार लगाते हुए कहा कि मुझे प्रेजेंटेशन नहीं देखना है। क्षेत्रों से जो शिकायतें आई हैं उनका निराकरण करें, उस पर ध्यान दें। ऑफिस में बैठने की बजाय फील्ड में जाएं। शिकायतें न मिलें, किसानों को खाद देने के लिए जो भी हो, प्रबंध करें और व्यवस्थाएं सुधारें। क्या अखबार झूठ बोल रहे हैं। इस दौरान अधिकारियों ने मुख्यमंत्री को बताया जिन जिलों में खाद वितरण की दिक्कत है उसे सुधार रहे हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि केंद्रीय मंत्री मांडविया भारत सरकर का भी पूरा सहयोग मिल रहा है। शिकायत नहीं आना चाहिए। दरअसल, प्रदेशभर में खाद के लिए किसान परेशान हो रहे हैं। जबलपुर में खाद चोरी का बड़ा मामला सामने आ चुका है। इससे सरकार की जमकर फजीहत हो रही है। अफसर हकीकत को छिपा रहे थे। जब मामला सामने आया तो मुख्यमंत्री ने जमकर फटकार लगाई।

क्या भ्रष्टों पर गिरेगी गाज ?

माफिया और अपराधियों पर कहर बरपाने के साथ ही सरकार ने भ्रष्ट और लुटेरे अफसरों पर नकेल कसने की कवायद शुरू कर दी है। इसके लिए सरकार ने इंटेलीजेंस के अधिकारियों को भ्रष्ट एवं लुटेरे अफसरों की सूची बनाने का निर्देश दिया था। सूत्रों का कहना है कि इंटेलीजेंस ने वह सूची ईओडब्ल्यू को पहुंचा दी है। इस सूची में थाना स्तर के कई अफसरों की काली करतूतों का कच्चा चिट्ठा है। लेकिन प्रदेश की प्रशासनिक वीथिका में आशंका जताई जा रही है कि शायद ही इस सूची के आधार पर ईओडब्ल्यू कोई कार्रवाई करे। इसकी वजह यह है कि जिन अफसरों के नाम सूची में हैं, उनमें अधिकांश मंत्रियों के चहेते हैं। विभाग उन अफसरों पर कोई कार्रवाई नहीं कर पा रहा है। ताजा मामला प्रदेश की व्यवसायिक राजधानी में सामने आया है। यहां एक थाने के टीआई को शिकायतों के बाद हटा दिया गया था, लेकिन एक मंत्रीजी के चहेते इस अफसर को बचाने के लिए उनके चहेते दूसरे अफसर को जांच की जिम्मेदारी दी गई है। ऐसे में निष्पक्ष जांच की आशा कैसे की जा सकती है। यही नहीं लोकायुक्त और ईओडब्ल्यू में पहले से ही भ्रष्ट अफसरों की शिकायतों का अंबार लगा हुआ है।

मंत्री और डायरेक्टर में ठनी

मप्र में सरकार की प्राथमिकता में किसान सबसे ऊपर है। सरकार किसानों की आमदनी दोगुना करने और कृषि को लाभ का धंधा बनाने के लक्ष्य पर काम कर रही है, लेकिन इस लक्ष्य की पूर्ति के लिए जिन विभागों को जिम्मेदारी दी गई है, उनमें से एक विभाग के मंत्री और डायरेक्टर के बीच पटरी नहीं बैठ रही है। यह वह विभाग है, जो भ्रष्टाचार के लिए लगातार चर्चा में रहता है। इस विभाग को केंद्र सरकार की तरफ से बड़ा बजट मिलता है, ताकि विभाग किसानों को विभिन्न प्रकार के अनुदान देकर कृषि को लाभ का धंधा बनाए। लेकिन वर्तमान समय में विभाग में जिस महिला आईएएस अधिकारी को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी दी गई है, उनकी मंत्री से ठनी हुई है। 2012 बैच की यह महिला अधिकारी अपनी कारस्तानियों के लिए हमेशा सुर्खियों में रहती हैं। कहा तो यहां तक जाता है कि उनकी भाजपा नेताओं से हमेशा ठनी रहती है। इस बार उनकी विभागीय मंत्री से ठनी हुई है। सूत्रों का कहना है कि वे मंत्री को तनिक भी भाव नहीं देती हैं। ऐसे में मंत्री और डायरेक्टर की खींचतान में विभाग का काम प्रभावित हो रहा है। न अफसर ठीक से काम कर पा रहे हैं और न ही विभाग के कर्मचारी। इसका खामियाजा किसानों को उठाना पड़ रहा है। सूत्र बताते हैं कि दोनों के बीच मची तकरार की खबर शासन और प्रशासन के मुखिया तक पहुंच गई है। अब देखना यह है कि दोनों में मची तनातनी का पटाक्षेप कैसे होता है।

रिचार्ज करने का सीजन

त्यौहारी सीजन होने के कारण बाजारों में जमकर कारोबार हो रहा है। आम से लेकर खास तक खरीदारी में जुटे हुए हैं। ऐसे में इस सीजन का फायदा उठाने के लिए मंत्री और संत्री भी जुट गए हैं। सूत्रों का कहना है कि लोगों के स्वास्थ्य से जुड़े लोगों को भी रिचार्ज करवाने के लिए भी दबाव बनाया जा रहा है। दरअसल, विभागीय अफसरों द्वारा स्वास्थ्य से जुड़े लोगों को फोन करके कहा जा रहा है कि मंत्रीजी इंतजार कर रहे हैं, आप लोग जल्द से जल्द अपने हिस्से का रिचार्ज कर दें। कहीं देर हो गई तो इसका खामियाजा भुगतना पड़ सकता है। वहीं तबादलों का मौसम होने के कारण कई विभागों के स्टाफ भी वसूली में जुटे हुए हैं। खनिज संपदा से जुड़े एक विभाग के साहब मंत्रीजी के नाम पर तबादले की दुकान खोले हुए हैं। बताया जाता है कि मंत्रीजी के दिशा-निर्देश पर तबादले के लिए कई लोगों से एडवांस जमा करवा लिए गए। लेकिन जब तबादले की सूची फाइनल की गई तो विभाग के पीएस ने ठेंगा दिखा दिया। इसी तरह कई विभागों में इस समय त्यौहारी रिचार्ज का मौसम जोरों पर है।

सीएस के मैसेज से हड़कंप

प्रदेश में सरकार ने तबादलों पर से जो प्रतिबंध हटाया था, उसकी अवधि समाप्त हो गई है। लेकिन उसके बाद भी विभाग तबादले की सूची जारी कर रहे हैं। इससे प्रदेश के मुख्य सचिव काफी नाराज हैं। नाराज सीएस ने रात 10 बजे सभी प्रमुख सचिवों और कलेक्टरों को एक मैसेज भेजकर जवाब मांगा है कि तबादलों की अवधि खत्म होने के बाद भी किस तरह तबादले किए जा रहे हैं। सीएस के इस मैसेज से प्रदेश की प्रशासनिक वीथिका में हड़कंप मच गया है। उधर, सूत्रों का कहना है कि लगभग हर विभाग में तबादलों का धंधा जमकर चला है और बड़े स्तर पर लेनदेन हुआ है। तबादले की अंतिम तारीख तक तबादला चाहने वालों से लक्ष्मीजी का आशीर्वाद लेकर उनकी मनमाफिक जगह दिलाने के लिए प्रयास होते रहे हैं। उसके बाद लक्ष्मी पुत्रों की सूची बनाई गई और उन्हें बैक डेट में अब जारी किया जा रहा है। बताया जाता है कि तबादलों में हुए बड़े खेल की भनक शासन और प्रशासन के मुखिया तक पहुंच गई है। इसलिए मुख्य सचिव ने मैसेज भेजकर जवाब मांगा है कि बैक डेट में किस तरह ट्रांसफर किए जा रहे हैं।

दहशत में आईएएस

5 करोड़ की जमीन की खरीदी

छत्तीसगढ़ में प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) द्वारा आईएएस अधिकारियों और कोल कारोबारियों के यहां मारे गए छापे के बाद छत्तीसगढ़ के साथ ही मप्र के नौकरशाहों में भी दहशत है। दरअसल, छत्तीसगढ़ में जिस अंदाज से अफसरों के खिलाफ कार्रवाई की गई है, उससे नौकरशाही में हड़कंप मचा हुआ है। गौरतलब है कि गत दिनों ईडी में छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर, बिलासपुर, रायगढ़, दुर्ग, महासमुंद में तीन आईएएस- रानू साहू, जेपी मौर्य, समीर विश्नोई और पूर्व विधायक और शराब-कोल कारोबारियों के डेढ़ दर्जन ठिकानों पर जांच की है। इन सभी ठिकानों से 4 करोड़ की नगदी और जेवरात सीज किया गया है। इनके यहां से निवेश के साथ-साथ खनन लाइसेंस से जुड़े दस्तावेज भी बड़ी संख्या में मिले हैं। इधर रायगढ़ की कलेक्टर रानू साहू के बंगले के चार कमरों को ईडी ने दो दिनों तक सील कर रखा था। क्योंकि वे बाहर गई हुई थी। उनके आने के बाद ईडी ने कमरों की तलाशी ली।

ईडी के छापे से प्रदेश में पदस्थ आईएएस दहशत में हैं। दरअसल, पहली बार किसी आईएएस को ईडी ने गिरफ्तार किया है। इस कार्रवाई के बाद माइनिंग के कारोबार में हाथ काला करने वाले अधिकारियों की नींद उड़ गई है। एक वरिष्ठ आईएएस ने अपने मातहत कर्मचारियों को सख्त चेतावनी दी है कि फिलहाल विवाद वाली कोई भी फाइल उनके टेबल तक नहीं पहुंचनी चाहिए। वहीं, रेत के ठेके को लेकर एक कलेक्टर ने अपने करीबी के लिए पूरी ताकत लगा रखी है। उन्होंने उसे पिछले साल ठेका तो दिला दिया, लेकिन अब जांच शुरू हुई है तो चिंता सताने लगी है कि कहीं उनकी फाइल भी न खुल जाए। ऐसा नहीं है कि ईडी ने सिर्फ माइनिंग की गड़बड़ी को लेकर कार्रवाई की है, बल्कि उनसे जुड़े कारोबारी भी शामिल हैं। एक आईएएस के विरूद्ध तो विभाग से जुड़े कुछ कारोबारियों ने तो सीधे दिल्ली में शिकायत की थी।

ईडी के छापे में फंसे आईएएस समीर विश्नोई के घर से चार किलो सोना मिला। समीर ने ईडी के अधिकारियों को पूछताछ में बताया कि यह सोना उन्हें उपहार में मिला है। हालांकि समीर ने इस उपहार का अपने किसी भी आयकर रिटर्न में जिक्र नहीं किया है। इसके साथ ही 24 कैरेट के हीरे का भी जिक्र आयकर रिटर्न में नहीं है। ईडी की पूछताछ के दौरान समीर की पत्नी ने सोना और अन्य ज्वैलरी से संबंधित दस्तावेज देने से इनकार कर दिया। ईडी के अधिकारियों ने कोर्ट में पेश हलफनामे में कहा कि समीर ने पूछताछ के दौरान सहयोग नहीं किया। उनसे पूछे जाने वाले सवालों का जवाब उनकी पत्नी प्रीति विश्नोई ने दिया। ईडी ने समीर को रिमांड पर लेने के लिए कोर्ट में यह भी कहा कि वह पूछताछ में सहयोग नहीं कर रहे हैं। अपने पद का दुरुपयोग करके सबूतों को नष्ट भी कर सकते हैं। खनिज परिवहन की अवैध वसूली गैंग में समीर विश्नोई सक्रिय रूप से भागीदार हैं और उनके पास अवैध राशि पहुंचती है।

समीर के घर से मिली डायरी के बारे में जब पूछताछ की गई तो उन्होंने इस डायरी को प्रीति विश्नोई की डायरी बताई। इसमें किसी मुल्कराज को 5 करोड़ रुपए देने का जिक्र है। समीर ने मुल्कराज को पहचानने से इनकार कर दिया, लेकिन बाद में प्रीति ने स्वीकार किया कि उसने जमीन खरीदने के लिए 5 करोड़ रुपए का भुगतान किया है। इसके साथ ही डायरी में कुछ करोड़ रुपए के और निवेश के बारे में पेन से लिखा मिला है। ईडी के वकील ने कहा कि पूछताछ के दौरान समीर ने किसी भी सवाल का सही जवाब नहीं दिया। उनकी पत्नी प्रीति बार-बार जांच में हस्तक्षेप करती रहीं। जांच में समीर ने घर से मिले दस्तावेज और खनिज विभाग में संचालक के पद पर रहते हुए किए गए बदलाव के बारे में भी कोई जानकारी नहीं दी।

ईडी ने कोर्ट में बताया कि कारोबारी सूर्यकांत तिवारी के ठिकानों पर आयकर की कार्रवाई में जो दस्तावेज मिले, उसमें समीर विश्नोई की संलिप्तता उजागर हुई। इसके बाद मनी लॉन्ड्रिंग का केस दर्ज करके जांच शुरू की गई। महासमुंद के कारोबारी रजनीकांत तिवारी के घर से आईटी छापे में मिली डायरी में समीर विश्नोई को 50 लाख रुपए देने की एंट्री मिली है। यह एंट्री 9 मार्च 2022 की है। इसके साथ ही अवैध लेन-देन की और भी एंट्री दर्ज की गई है। ईडी के वकीलों ने कहा कि समीर विश्नोई कारोबारी सूर्यकांत तिवारी के द्वारा तैयार किए गए अवैध वसूली के नेटवर्क का हिस्सा हैं और अवैध कमाई में हर महीने लाखों रुपए समीर को मिलते थे। ईडी ने कोर्ट में बताया कि उनके घर से किसी प्रकार का कोई कारोबार नहीं होता है। ऐसे में उनके घर से बरामद 47 लाख रुपए अवैध तरीके से प्राप्त किए गए हैं। समीर ने नकद पैसे के बारे में भी कोई ठोस जवाब नहीं दिया। समीर के वॉट्सअप चैट से साफ हो रहा है कि उनको यह राशि सूर्यकांत गैंग के सदस्यों से मिली है।

ईडी ने पुलिस के कुछ अधिकारियों और उनके करीबी लोगों पर डंडा चलाया तो स्वयं को सुपरमैन समझने वाले पुलिस अधिकारी सन्नाटे में आ गए। ईडी के इस एक्शन के बाद कुछ ने अपना मोबाइल फोन स्वीच ऑफ कर दिया है। वे सरकारी फोन नंबर पर भी उन्हीं का फोन उठा रहे हैं, जिनका नंबर सेव है। एसपी स्तर के एक अधिकारी ने बताया कि दिवाली की सफाई दशहरा के अगले दिन ही पूरी कर ली। सफाई के दौरान सारे संदिग्ध कागजात ठिकाने लगाए। एसपी के करीबी ने बताया कि अब साहब राहत की सांस ले रहे हैं, क्योंकि उनके घर में कोई ऐसा कागज नहीं बचा है, जिससे वह जांच में फंसे। सरकार के करीबी माने जाने वाले एक एएसपी के घर छापे का शोर मचा तो सबसे ज्यादा खुशी पीएचक्यू में देखी गई। आखिर खुशी हो भी क्यों न, एडीजी स्तर का काम जो साहब के जिम्मे था।

● **डॉ. जयसिंह सेंधव**

प्रदेश में नए मुख्य सचिव की सुगबुगाहट तेज हो गई है। ऐसे में कयास लगाए जा रहे हैं कि वर्तमान मुख्य सचिव इकबाल सिंह बैंस को सरकार एक्सटेंशन देगी या कोई नया मुख्य सचिव प्रदेश को मिलेगा। नए मुख्य सचिव के लिए 1987 बैच से लेकर 1990 बैच तक के अधिकारी कतार में हैं। अब देखना यह है कि सरकार किसके नाम पर मुहर लगाती है।

बैंस को एक्सटेंशन या मिलेगा नया सीएस

मुख्य सचिव इकबाल सिंह बैंस का कार्यकाल इसी साल नवंबर में समाप्त हो रहा है। उनका स्थान लेने वाले अधिकारी को लेकर प्रशासनिक स्तर पर सुगबुगाहट शुरू हो गई है। मुख्य सचिव पद का प्रबल दावेदार 1989 बैच के अधिकारी अनुराग जैन को माना जा रहा है, वह फिलहाल केंद्रीय प्रतिनियुक्ति पर दिल्ली विकास प्राधिकरण में पदस्थ हैं। इसी बैच के अधिकारी स्वास्थ्य विभाग के अपर मुख्य सचिव मोहम्मद सुलेमान भी हैं। यदि जैन केंद्रीय प्रतिनियुक्ति से नहीं लौटते हैं तो सुलेमान को मौका दिया जा सकता है। वैसे मुख्य सचिव के लिए 1987 बैच से लेकर 1990 बैच तक के अधिकारी कतार में हैं। ऐसे में अगले मुख्य सचिव के लिए 1987 बैच के अजय तिर्की, 1988 बैच के संजय बंदोपाध्याय, वीरा राणा, 1989 बैच के अनुराग जैन, मोहम्मद सुलेमान, विनोद कुमार तथा जेएन कंसोटिया के नाम चर्चा में हैं। वहीं 1990 बैच के राजेश राजौरा और एसएन मिश्रा भी कतार में हैं। प्रशासनिक सूत्रों के अनुसार मप्र और केंद्र के महत्वपूर्ण विभागों में अपनी कर्तव्यनिष्ठा का लोहा मनवाने वाले 1989 बैच के आईएएस अधिकारी अनुराग जैन प्रदेश के नए मुख्य सचिव बन सकते हैं। सूत्रों का कहना है कि मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान भी अनुराग जैन के नाम पर लगभग सहमत हैं।

मंत्रालय के उच्च पदस्थ सूत्र बताते हैं कि नए प्रशासनिक मुखिया को लेकर संभावनाएं टटोली जाने लगी हैं। क्योंकि वर्ष 2023 में होने वाले विधानसभा और 2024 के लोकसभा चुनाव के लिए मैदानी जमावट नए अधिकारी के हिसाब से ही जमाई जाएगी। प्रशासनिक हल्कों में बैंस का कार्यकाल बढ़ाए जाने की बातें भी चल रही हैं, पर अब तक मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान की ओर से ऐसे संकेत नहीं मिले हैं। जिससे माना जा रहा है कि उनका कार्यकाल नहीं बढ़ाया जाएगा। ऐसे में आसन्न चुनाव को देखते हुए सरकार की पहली पसंद अनुराग जैन हो सकते हैं। क्योंकि वे वित्त के अच्छे जानकार माने जाते हैं और मुख्य सचिव पद के प्रबल दावेदार भी हैं। दो बार वित्त विभाग में रहकर मुख्यमंत्री के साथ काम भी कर चुके हैं। अनुराग जैन जिस विभाग में रहे हैं वहां उन्होंने अपने काम का लोहा मनवाया है। मुख्यमंत्री लाडली लक्ष्मी योजना से लेकर प्रधानमंत्री जनधन खाता जैसी योजना को शुरू कराने में अनुराग जैन की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। वे वर्ष 2011 में प्रतिनियुक्ति पर गए थे, वे दिसंबर 2014 तक पदस्थ रहे हैं। अनुराग जैन शिवराज सरकार के पहले और दूसरे कार्यकाल में लगभग 5 साल तक मुख्यमंत्री के सचिव रहे हैं। इसलिए उन्हें मप्र के अगले मुख्य सचिव के लिए सबसे काबिल माना जा रहा है। लेकिन सूत्रों का कहना है कि अनुराग जैन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के फ्रेम में भी फिट बैठ रहे हैं। उन पर चीन से 10 हजार करोड़ से अधिक के उद्योग लाने की जिम्मेदारी भी है। अत: केंद्र सरकार उन्हें फाइनेंस सेक्रेटरी बनाकर देश में निवेश बढ़ाने की जिम्मेदारी दे सकती है। अगर वे फाइनेंस सेक्रेटरी बनते हैं तो रिटायरमेंट के बाद भी उनके लिए संभावनाओं के द्वार खुले रहेंगे। ऐसे में जैन की मप्र वापसी की संभावना कम ही है।

मुख्य सचिव के पद से इकबाल सिंह बैंस के सेवानिवृत्त होने से पहले दिल्ली में पदस्थ 1986 बैच के अनिल कुमार जैन अक्टूबर में सेवानिवृत्त हो जाएंगे। 1987 बैच के संजय कुमार सिंह 31 दिसंबर को और 1988 बैच के शैलेंद्र सिंह भी दिसंबर में सेवानिवृत्त होने वाले हैं। जबकि अजय तिर्की दिसंबर 2023 में और 1988 बैच के संजय बंदोपाध्याय अगस्त 2024 में सेवानिवृत्त होंगे। वहीं माशिमं की चेयरमैन आईएएस वीरा राणा 31 मार्च 2024 को सेवानिवृत्त होंगी। अटकलें यह भी लगाई जा रही हैं कि अगला मुख्य सचिव दिल्ली से आता है, तो 1988 बैच के संजय बंदोपाध्याय, 1989 बैच के अनुराग जैन में से ही कोई अगला सीएस बनेगा। संभावना यह भी जताई जा रही है कि अगर अनुराग जैन को मुख्य सचिव नहीं बनाया जाता है तो पूर्व मुख्य सचिव राकेश साहनी की तरह मोहम्मद सुलेमान, जेएन कंसोटिया या फिर 1990 बैच के अधिकारी राजेश राजौरा और एसएन मिश्रा में से किसी एक की लॉटरी लग सकती है। गौरतलब है कि राकेश साहनी को कई अफसरों को बायपास कर मुख्य सचिव बनाया गया था। अब देखना यह है कि प्रदेश सरकार किस अफसर को प्रदेश का अगला मुख्य सचिव बनाती है। इसको लेकर प्रशासनिक वीथिका में इन दिनों हलचल तेज है।

● **कुमार राजेंद्र**

बैंस से खुश नहीं हैं मंत्री और अधिकारी

अगर सरकार वर्तमान मुख्य सचिव इकबाल सिंह बैंस को एक्सटेंशन देती है तो गुजरात स्टाइल से उनका कार्यकाल एक साल बढ़ाया जा सकता है। हालांकि बैंस से न तो मंत्री और न ही अफसर खुश हैं। ऐसे में जैसे ही उनके एक्सटेंशन की बात सामने आई है, ब्यूरोक्रेसी सकते में हैं। प्रदेश की राजनीतिक और प्रशासनिक वीथिका में यह भी चर्चा जोरों पर हो रही है कि मुख्य सचिव को एक्सटेंशन देने से क्या वे चुनाव जिता पाएंगे। क्योंकि अभी तक देश-प्रदेश में कोई ऐसा उदाहरण नहीं है, जिसमें यह बात सामने आई हो कि मुख्य सचिव ने सत्तारूढ़ पार्टी की सत्ता में वापसी करा दी हो। इसलिए हर कोई यही चाहता है कि इकबाल सिंह बैंस को एक्सटेंशन न दिया जाए। इकबाल सिंह बैंस भले ही मुख्यमंत्री की पसंद के अफसर हैं, लेकिन उनकी कार्यप्रणाली से प्रदेश की राजनीतिक और प्रशासनिक वीथिका के लोग संतुष्ट नहीं हैं। ऐसे में अधिक संभावना यह जताई जा रही है कि शायद ही उन्हें एक्सटेंशन मिले।

मप्र विधानसभा चुनाव के लिए सभी दल अपनी-अपनी तैयारी में जुटे हैं। खासकर भाजपा और कांग्रेस की चुनावी तैयारियां सबसे आगे हैं। दोनों पार्टियों की कोशिश है कि 2023 में उनकी सरकार बने। हालांकि मैदानी और रणनीतिक तैयारियों में भाजपा काफी आगे है। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान और प्रदेश अध्यक्ष वीडी शर्मा के नेतृत्व में पार्टी हर मोर्चे पर काम कर रही है। इसी कड़ी में गत दिनों पर्यटन नगरी मांडू में पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं का प्रशिक्षण वर्ग आयोजित किया गया। इस वर्ग में हर सीट पर नजर और हर समीकरण की खबर जुटाने का निर्देश दिया गया।

मिशन 2023 में संघ बनेगा सारथी

मप्र में विधानसभा चुनाव में एक साल का समय बचा है। इससे पहले दोनों ही बड़ी राजनीतिक पार्टियां मिशन 2023 में जुट गई हैं। इसके तहत भाजपा का तीन दिवसीय प्रशिक्षण वर्ग 7 अक्टूबर से 9 अक्टूबर तक पर्यटन नगरी मांडू में आयोजित किया गया। दरअसल, निमाड़ और मालवा में चार साल पहले बिखरे चुनावी समीकरणों को दुरुस्त करने की गरज से हिल-स्टेशन मांडू में भाजपा का सियासी नजरिए से यह बड़ा प्रशिक्षण वर्ग आयोजित किया गया था। इसमें मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान समेत भाजपा संगठन के तमाम बड़े चेहरों के साथ प्रमुख नेताओं की मौजूदगी रही। दरअसल मालवा-निमाड़ पर सत्ता में वापसी के बाद से भाजपा ने फोकस किया हुआ है लेकिन अब इसे फाइनल टच दिया जा रहा है। खासतौर पर निमाड़ के आदिवासी बाहुल्य जिलों में संगठन और सत्ता सीधे तौर पर ग्राउंड जीरो पर रणनीति बना रही है। यहां कांग्रेस के साथ आदिवासी संगठन भी भाजपा के लिए चुनौती है। कांग्रेस को निमाड़-मालवा में 2018 के चुनाव में काफी फायदा मिल चुका है। पंचायत चुनाव में भी यह समीकरण देखने को मिले थे। लिहाजा भाजपा अपने असर को बढ़ाने के लिए काम कर रही है। हाल ही में मनावर धार में पंचायत चुनाव के नतीजों से उसे उम्मीद नजर आई है। इस तीन दिवसीय प्रशिक्षण वर्ग में भाजपा अपनी पकड़ मालवा-निमाड़ में मजबूत करने की रणनीति तैयार की। मालवा-निमाड़ में कुल 66 सीटें हैं। यह सत्ता में वापसी के गणित से बहुत महत्वपूर्ण है। कांग्रेस का प्रभाव कम करने के लिए भाजपा ने यहां पूरी ताकत झोंकने का फैसला किया है।

प्रशिक्षण वर्ग में पार्टी के प्रदेश पदाधिकारी, मोर्चा प्रदेश अध्यक्ष, जिलाध्यक्ष, जिला प्रभारी, प्रकोष्ठ प्रदेश संयोजक एवं विभागों के प्रदेश संयोजक उपस्थित रहे। बैठक 3 दिन चली। 3 दिन में 15 सत्र हुए। उद्घाटन सत्र को प्रदेश अध्यक्ष वीडी शर्मा ने संबोधित किया। उन्होंने समाज देश की विभाजनकारी ताकतों पर फोकस किया। गृहमंत्री नरोत्तम मिश्रा ने मिजाज के अनुकूल वर्ग में नेताओं को चुनाव प्रबंधन की घुटी

उप्र के फॉर्मूला पर काम करेगा मप्र भाजपा संगठन

बीते चुनाव की ही तरह इस बार भी प्रदेश में अगले साल होने वाले विधानसभा के आम चुनाव को भाजपा कठिन मानकर चल रही है। यही वजह है कि पार्टी के आला नेताओं में मिशन 2023 के फतह के लिए लगातार संगठन के आला पदाधिकारियों के बीच चिंतन-मनन का दौर तो चल ही रहा है साथ ही मैदानी दौरे कर वास्तविक जमीनी हकीकत जानने का प्रयास भी किया जा रहा है। यही वजह है कि अब पार्टी के केंद्रीय संगठन ने मप्र में भी उप्र के फॉर्मूले पर चलने का तय कर लिया है। दरअसल यह फॉर्मूला उप्र में बेहद कारगर साबित हुआ है जिसकी वजह से ही वहां पर लगातार दूसरी बार पार्टी की सरकार पूर्ण बहुमत से बनी है। दरअसल मप्र भाजपा के लिए बेहद अहम राज्य माना जाता है। इसकी वजह है इसका भाजपा के गढ़ के रूप में पहचान होना और इस राज्य के चुनाव परिणामों का असर देश के उत्तरी राज्यों पर होना है। इस फॉर्मूले पर चलने के निर्देश हाल ही में राष्ट्रीय महामंत्री बीएल संतोष ने सीधे दिए हैं। गौरतलब है कि हाल ही में करीब ढाई माह पहले हुए नगरीय निकाय चुनावों में कई महानगरों में भाजपा को महापौर पद पर हार का सामना करना पड़ा है। इनमें वे शहर प्रमुख रूप से शामिल हैं, जो भाजपा के बेहद मजबूत गढ़ माने जाते हैं।

पिलाई। ज्योतिरादित्य सिंधिया ने मोदी सरकार की विदेश नीति पर बात की। कैलाश विजयवर्गीय ने राष्ट्र के पुनर्निर्माण पर संबोधन दिया। गरीब कल्याण और खेती किसानी पर नरेंद्र सिंह तोमर ने अपनी बात रखी। देश के रक्षा सामर्थ्य पर मुरलीधर राव जोरदार तरीके से मुखर हुए। हिंदूवादी नेता जयभान सिंह पवैया ने अपने प्रिय विषय सांस्कृतिक राष्ट्रवाद पर बोला तो राजस्थान से आए डॉ. महेश शर्मा ने दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म मानववाद पर विचार रखे। क्षेत्रीय संगठन मंत्री अजय जामवाल, प्रदेश संगठन मंत्री हितानंद, सह संगठन मंत्री शिवप्रकाश, पंकजा मुंडे, लालसिंह आर्य ने भी सत्रों को संबोधित किया। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान आखिरी दिन अपनी सरकार की नीतियों के साथ मैदान में आए।

2019 के लोकसभा चुनाव और 2022 के उप्र चुनाव की तर्ज पर भाजपा मप्र में 2023 की चुनावी जंग फतह करने के लिए विस्तारकों का सहारा लेगी। सूबे के हर एक विधानसभा सीट पर भाजपा विस्तारकों की नियुक्ति करेगी। यह विस्तारक विधानसभा क्षेत्रों में रहकर न सिर्फ चुनावी थाह लेंगे, बल्कि सियासी जमीन तैयार करने के लिए प्रबंधन में भी अहम भूमिका निभाएंगे। पार्टी सूत्रों के अनुसार संघ की रणनीति पर काम करते हुए भाजपा सूबे की सभी 230 विधानसभा सीटों के लिए एक-एक विस्तारक तैनात करेगी। पार्टी कार्यकर्ताओं में से विस्तारकों का चयन कर लिया जाएगा और अब उन्हें मंडल स्तर पर पार्टी के वरिष्ठ नेता प्रशिक्षण देने का काम करेंगे। विधानसभा क्षेत्र की संख्या के अतिरिक्त आठ विस्तारक पार्टी के निर्देश के पालन के लिए सुरक्षित रखे जाएंगे। कड़े मुकाबले वाली विधानसभा क्षेत्रों में मौका देखकर एक से अधिक विस्तारकों को भी लगाने की भी पार्टी की योजना है। प्रशिक्षण पूरा होने के बाद ही विस्तारक विधानसभा क्षेत्रों में जाकर कार्यभार संभालेंगे। विस्तारक को विधानसभा चुनाव होने तक अपने संबंधित विधानसभा क्षेत्र में रहना होगा। पार्टी की कोशिश है कि 2023 के जनवरी महीने से सभी विस्तारक अपनी-अपनी विधानसभा क्षेत्रों में पहुंच जाएं।

विस्तारक भाजपा के लिए पूर्णकालिक काम करने वाले सदस्य हैं जो पार्टी इकाई से अलग हैं। संघ के आनुषांगिक संगठन जैसे एबीवीपी, वीएचपी, बजरंग दल जैसे ही अन्य इकाइयों से जुड़े सदस्य जो पूर्णकालिक काम करने की इच्छा रखते हों, वही विस्तारक बनाए जाते हैं, जो स्थानीय स्तर के बजाय सीधे प्रदेश कार्यालय को रिपोर्ट करते हैं। ज्यादातर विस्तारक युवाओं को बनाया जाएगा। संगठन का मानना है युवा विस्तारक बिना थके और ऊर्जा के साथ चुनाव तक मुस्तैदी से काम करते हैं। पार्टी के सूत्र बताते हैं कि भाजपा के विस्तारक का काम अपनी-अपनी विधानसभा क्षेत्र में सेक्टर, बूथ और मंडल लेवल पर लोगों से संपर्क और संवाद स्थापित करने का होता है। विस्तारकों की मॉनीटरिंग के लिए विस्तारक प्रमुख और सह विस्तारक प्रमुख नियुक्त किए जाते हैं। ये पदाधिकारी समय-समय पर पार्टी द्वारा मिले निर्देश को विस्तारकों तक पहुंचाने का काम करते हैं। रणनीति के अनुसार भाजपा के विस्तारक शुरुआती दौर में अपने-अपने विधानसभा क्षेत्र की चुनावी स्थिति, मौजूदा विधायक की छवि और संभावित दावेदार, विपक्षी दलों की स्थिति, कार्यकर्ताओं के संतोष सहित अन्य मुद्दों पर फीडबैक लेकर प्रदेश संगठन को देंगे। विधानसभा क्षेत्र में बूथ प्रबंधन से लेकर चुनाव-प्रचार के प्रबंधन तक के कार्य विस्तारक ही करेंगे। विस्तारकों को विधानसभा क्षेत्र में चुनाव संपन्न होने तक स्थायी रूप से निवास करेंगे और उनके निवास और खानपान की व्यवस्था की जिम्मेदारी संगठन ने खुद उठाई है। यही नहीं, विस्तारक को क्षेत्र में भागदौड़ के लिए पार्टी दोपहिया वाहन भी उपलब्ध करा रही है। ये विस्तारक पार्टी के उच्च पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं के बीच संवाद की कड़ी भी बनेंगे। भाजपा के विस्तारकर जमीनी स्तर पर आने वाले दिक्कतों का समाधान पहले अपने स्तर पर करेंगे। अगर समाधान उनकी क्षमता के बाहर है तो उसके लिए पार्टी पदाधिकारियों की मदद लेंगे। भाजपा की क्षेत्रीय अध्यक्ष और उनकी टीम समय-समय पर विस्तारकों का मार्गदर्शन करती रहेगी। विस्तारक स्थानीय संगठन के अधीन नहीं होकर सीधे प्रदेश मुख्यालय को रिपोर्ट करेंगे। गौरतलब है कि भाजपा मिशन 2023 में 200 सीटों को जीतने का टारगेट लेकर चल रही है। मिशन 2023 को लेकर इन दिनों भाजपा और कांग्रेस दोनों पार्टियां मिशन मोड में काम कर रही हैं।

● **कुमार विनोद**

सर्वे से तय होगा टिकट

मप्र में अगले साल होने वाले विधानसभा चुनाव से पहले उन विधायकों का टेंशन बढ़ गया है, जिन्होंने चार साल तक अपने क्षेत्र पर ध्यान नहीं दिया है। दरअसल, भाजपा और कांग्रेस ने अपने-अपने विधायकों की परफॉर्मेंस का आंकलन करने के लिए सर्वे शुरू कर दिया है। जिनका पार्टी सर्वे रिपोर्ट में परफॉर्मेंस खराब निकलेगा, उनका टिकट संकट में पड़ जाएगा। इसलिए दोनों पार्टियों में सर्वे की खबर से खलबली मची हुई है। गौरतलब है कि मप्र में अगले साल विधानसभा चुनाव होना है। विधानसभा चुनाव के एक साल पहले प्रदेश के दोनों प्रमुख राजनीतिक दलों भाजपा और कांग्रेस ने टिकट को लेकर सर्वे का काम शुरू कर दिया है। इन सर्वे ने विधायकों के दिलों की धड़कनों को बढ़ा दिया है। भाजपा सर्वे के अलावा बूथस्तर तक रायशुमारी भी कराएगी तो कांग्रेस ने साफ कर दिया है कि वे टिकट के लिए विशुद्ध रूप से सर्वे को ही आधार बनाएगी। तीन चरणों में होने वाले सर्वे के बाद टिकट किसे मिलेगा यह तय कर दिया जाएगा। गौरतलब है कि दोनों पार्टियों पूर्व में आंतरिक सर्वे करा चुकी हैं। कांग्रेस पार्टी के आंतरिक सर्वे में मौजूदा 27 विधायकों की स्थिति खराब बताई गई है। कांग्रेस के आंतरिक सर्वे के बाद अब कांग्रेस के कई मौजूदा विधायक सीट बदलने के मूड में आ गए हैं। सिर्फ कांग्रेस के अंदर ही विधायक सीट बदलने की तैयारी में नहीं हैं बल्कि भाजपा के अंदर भी आंतरिक सर्वे रिपोर्ट में कई विधायकों को डेंजर जोन में बताया गया है। हाल ही में हुए नगरीय निकाय चुनाव में आधा दर्जन मंत्री ऐसे निकलकर आए हैं जिनके प्रभाव वाले जिले में भाजपा का प्रदर्शन खराब रहा है।

करीब 7 साल पहले देश में स्मार्ट सिटी बनाने की प्रक्रिया शुरु हुई थी। मप्र के 7 शहरों में स्मार्ट सिटी बनाने के लिए बसी-बसाई कॉलोनियों को तोड़ा-फोड़ा गया। लेकिन विडंबना यह है कि करीब 2352 करोड़ रुपए खर्च होने के बाद भी स्मार्ट सिटी का सपना साकार नहीं हो पाया है। राजधानी भोपाल में जिस क्षेत्र में स्मार्ट सिटी बनाई जा रही है, वह खंडहर में तब्दील हो गई है। स्मार्ट सिटी का सपना कब साकार होगा यह भविष्य के गर्भ में छिपा है।

7 साल में एक भी स्मार्ट सिटी नहीं

प्रदेश के 7 शहरों को स्मार्ट सिटी में बदलने का सपना 7 साल बाद भी साकार नहीं हो पाया है। वजह, औसतन 38 प्रतिशत परियोजनाएं अब तक पूरी नहीं हुईं। हालात ये हैं कि इनमें से 3 प्रतिशत परियोजनाओं की निविदा जारी हुई है या जारी करने की तैयारी है। भोपाल, इंदौर जबलपुर, ग्वालियर, सागर, सतना और उज्जैन में स्मार्ट सिटी का काम साल 2015 में शुरू हुआ था। पूरा 2023 में करना है। अब इसके 10 माह में पूरा होना मुश्किल लग रहा है। भोपाल में तीन परियोजनाओं के लिए 2313 करोड़ की निविदाएं हाल ही में जारी की गई हैं। ग्वालियर में 350 करोड़ के टेंडर जारी हुए हैं।

स्मार्ट सिटी की शक्ल देने में इंदौर सबसे आगे है। कुल मंजूर 263 परियोजनाओं में से 218 पूरी हैं। इन पर 6537.36 करोड़ रुपए खर्च किए जा चुके हैं। बाकी के करीब 240 करोड़ के काम और होने हैं। हालांकि 17 परियोजनाओं के लिए टेंडर फाइनल नहीं हुए हैं। लागत 250 करोड़ से कम है। नगर निगम के अनुसार एबीडी एरिया (एमओजी लाइन से कृष्णपुरा) में उपभोक्ताओं को फिलहाल 13.72 एमएलडी पानी रोजाना दिया जा रहा है। यदि 24 घंटे पानी सप्लाई किया जाता है तो 28 एमएलडी की जरूरत होगी। स्मार्ट सिटी प्रोजेक्ट के तहत एबीडी एरिया में पर्याप्त पानी उपलब्ध करवाने के लिए 2050 तक का कैलकुलेशन किया गया है। यहां लोगों को तीन तरह से पानी मिल रहा है। पहला टंकियों से, दूसरा सीधे लाइनों से और तीसरा बोरिंग के माध्यम से। निगम ने **आबादी के अनुसार** पानी की डिमांड को लेकर आंकलन किया है। वर्तमान में 76.53 किमी की पेयजल लाइनें बिछी हुई हैं। एबीडी एरिया में 11 हजार 854 नल कलेक्शन हैं, वहीं 350 बोरिंग निगम के रिकॉर्ड में चिह्नित हैं। बोरिंग का बिजली बिल निगम वहन करता है। 2020 से इस एरिया में 13.72 एमएलडी पानी रोजाना सप्लाई किया जा रहा है। माना जा रहा है कि 2050 तक यहां की आबादी 2 लाख 49 हजार 687 होगी। इसके लिए 42.09 एमएलडी पानी की जरूरत पड़ेगी।

उज्जैन को स्मार्ट बनाने 102 विकास कार्यों को केंद्र ने मंजूरी दी थी। अभी तक सिर्फ 38 काम ही पूरे हो पाए हैं। हालांकि 90 फीसदी परियोजनाओं के लिए निविदा जारी कर दी गई हैं। इसके बाद सतना स्मार्ट सिटी के 81 में से 29 काम ही पूरे हो पाए हैं। सतना स्मार्ट सिटी प्रोजेक्ट के तहत 27.74 करोड़ रुपए की लागत से बनाई जा रही नेक्टर झील का निर्माण कार्य चार साल बाद भी पूरा नहीं हो सका। अब तक महज 78 प्रतिशत काम हुआ है। झील के सरोवर का निर्माण 30 मई तक पूरा करना था जबकि संपूर्ण प्रोजेक्ट को पूरा होने में अभी एक साल का समय लगेगा। जबलपुर के ओमती क्षेत्र में स्मार्ट सिटी के तहत 35 करोड़ की लागत से कन्वेन्शन सेंटर बन रहा है। इसे दिसंबर 2021 में पूरा होना था लेकिन कोरोनाकाल के कारण प्रोजेक्ट को एक वर्ष का अतिरिक्त समय दिया गया। अभी यहां सिविल स्ट्रक्चर का काम जारी है। काम पूरा होने पर कन्वेन्शन सेंटर में राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय स्तर के आयोजन हो सकेंगे। ग्वालियर में 300 करोड़ की लागत से थीम रोड बनाई जा रही है। इसकी समय सीमा खत्म हो चुकी है। दो महीने निकलने के बाद भी कार्य पूरा होता नहीं दिख रहा। इंदौर में साढ़े पांच साल से ज्यादा समय में भी राजबाड़ा का वैभव नहीं लौट पाया है। काम 2017.18 में शुरू हुआ। करीब 17.22 करोड़ से ऐतिहासिक स्वरूप लौटाने का दावा किया गया। समय सीमा दो साल रखी गई थी लेकिन काम धीमी गति से चलता रहा। कई बार समय सीमा बढ़ाई गई। अब अधिकारियों का दावा है कि काम लगभग पूरा हो चुका है। फिनिशिंग बची है।

भोपाल स्मार्ट सिटी का एरिया बेस्ड डेवलपमेंट प्रोजेक्ट पूरा ही नहीं हो पा रहा। 7 साल बाद भी स्थिति यह है कि टीटी नगर का दशहरा मैदान दो मंजिला अंडर ग्राउंड पार्किंग के लिए खोदा गया था, वह भी पूरा नहीं हो पाया। इस बार भी दशहरा उत्सव का आयोजन नहीं हो पाया। यह काम ठप पड़ा है। अंडर ग्राउंड पार्किंग में पानी जमा हो गया है। ऐसे में इस मैदान की बेहतरी का काम इसकी दुर्दशा का सबब बन गया है। नगरीय प्रशासन विभाग के सेवानिवृत्त ईएनसी प्रभाकांत कटारे के अनुसार प्रोजेक्ट्स पर प्रभावी नियंत्रण और समय-समय पर रिवीजन नहीं होने से काम पिछड़ते हैं। स्मार्ट सिटी के कार्यों के लिए अनुभवी अमले की भी कमी है। इसके चलते कई काम पिछड़ गए हैं।

● **लोकेंद्र शर्मा**

नहीं दिख रहे परिणाम

सरकार के दावे अनुरूप स्मार्ट सिटी मिशन के परिणाम अभी भी दिखाई नहीं दे रहे हैं। 7 साल पहले स्मार्ट सिटी मिशन लांच करते वक्त लोगों को जीवन स्तर में सुधार लाने, रोजगार के अवसर बढ़ाने और शहर के समग्र विकास को बढ़ावा देने के जो सपने दिखाए थे वो अधूरे हैं। अफसर जिन योजनाओं को पूरा होना बता रहे हैं उनकी जमीनी हकीकत जुदा है। कंपनी ने ऐसे कई कार्य करवा लिए हैं जो ड्राफ्ट में शामिल ही नहीं थे। ड्राफ्ट में शामिल कई परियोजनाओं पर काम ही नहीं हुआ है। स्मार्ट सिटी मिशन को लेकर केंद्र सरकार की वेबसाइट पर भरोसा किया जाए तो भोपाल में टीटी नगर स्मार्ट सिटी एबीडी का काम पूरा हो चुका है।

मिशन 2023 में दिखेगा नेतापुत्रों का दम

आगामी विधानसभा चुनाव को लेकर एक तरफ भाजपा और कांग्रेस में रणनीतिक तैयारियां तेज हो गई हैं, वहीं टिकट के दावेदारों की दौड़ भी शुरू हो गई है। भाजपा में हाईकमान ने भले ही परिवारवाद पर समझौता न करने को लेकर क्राइटेरिया साफ किया है, लेकिन मिशन 2023 के घमासान में नेतापुत्रों का दम दिखेगा। इसके लिए फिलहाल पार्टी के चार बड़े नेता 'अपनों' के लिए चुनाव मैदान छोड़ चुके हैं। पूर्व मंत्री गौरीशंकर शेजवार और हर्ष सिंह ने विधानसभा चुनाव में बेटे के लिए मैदान छोड़ा था। अब दो पूर्व मंत्री गौरीशंकर बिसेन और नागेंद्र सिंह ने चुनाव लड़ने से इनकार किया है। 12 अन्य नेता भी हैं, जिनके अपने टिकट की दावेदारी में हैं। यानी आगामी विधानसभा चुनाव के लिए भाजपा में टिकट के लिए जोरदार घमासान होने के आसार हैं।

गौरतलब है कि प्रधानमंत्री मोदी ने मई में कहा था, परिवारवादी पार्टी हमारे लोकतंत्र और युवाओं की सबसे बड़ी दुश्मन है। ये अपने विकास के बारे में ही सोचती हैं। इसके बावजूद नगरीय निकाय और पंचायत चुनावों में भी भाजपा नेताओं ने बेटे-बहू और नजदीकी रिश्तेदारों को चुनाव लड़ाया और इनके लिए पूरी ताकत लगाई थी। अब विधानसभा चुनाव में किस नेता के बेटे या बेटी को टिकट मिलेगा, ये गाइडलाइन ही तय करेगी। 2018 के विधानसभा चुनाव में राष्ट्रीय महासचिव कैलाश विजयवर्गीय ने बेटे आकाश के लिए सीट छोड़ दी थी। अब बालाघाट से विधायक गौरीशंकर बिसेन ने चुनाव लड़ने से इनकार किया है। वे पूर्व मंत्री और सात बार के विधायक हैं। उम्र 70 वर्ष है। उन्होंने बेटी मौसम बिसेन को भावी विधायक कहकर चुनावों के लिए आगे किया है। भोपाल में एक बड़ा डिनर दे चुके हैं। इधर, नागौद से विधायक नागेंद्र सिंह ने बयान दिया कि अगला चुनाव नहीं लड़ेंगे। उनकी उम्र 80 साल है। बताया जा रहा है कि नागेंद्र सिंह अपने दोनों बेटों या फिर भतीजे में से किसी एक के लिए दावेदारी करेंगे। गुढ़ से चार बार के विधायक नागेंद्र सिंह भी अपने बेटों के लिए सीट छोड़ सकते हैं। उनकी उम्र भी 82 साल हो चुकी है। पूर्व मंत्री गौरीशंकर शेजवार दोबारा बेटे मुदित के लिए टिकट मांगेंगे। वहीं जयंत मलैया बेटे सिद्धार्थ के लिए प्रयास करेंगे।

मप्र भाजपा में परिवारवाद की बेल लंबी है। प्रदेश में 2023 में विधानसभा चुनाव होने हैं। ऐसे में भाजपा के कई दिग्गज अपने परिजनों के लिए टिकट की दावेदारी कर सकते हैं, लेकिन मोदी का फॉर्मूला चला तो ये दावेदारी खटाई में पड़ सकती है। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान के बेटे कार्तिकेय सिंह चौहान राजनीति में एक्टिव हैं। वो अपने पिता के विधानसभा क्षेत्र बुदनी में सक्रिय हैं। पिछले दो विधानसभा चुनाव में प्रचार की जिम्मेदारी भी संभाली। सिंधिया राजवंश की चौथी पीढ़ी अब राजनीति के मैदान में सक्रिय होती नजर आ रही है। केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया के बेटे महाआर्यमन भी राजनीति में उतर सकते हैं। महाआर्यमन पिछले कुछ वक्त से लगातार सार्वजनिक कार्यक्रमों में नजर आ रहे हैं। भाजपा के कद्दावर नेता और शिवराज सरकार में पीडब्ल्यूडी मंत्री गोपाल भार्गव के बेटे अभिषेक भार्गव मप्र की राजनीति में सक्रिय हो गए हैं। पंचायत चुनाव में अभिषेक परिवारवाद की राजनीति पर सवाल खड़े कर सुर्खियों में रहे। अभिषेक ने कहा था कि पंचायत चुनाव में भी भाजपा केंद्रीय नेतृत्व द्वारा परिवारवाद पर बनी गाइडलाइन का पालन होना चाहिए। यदि पूर्व से ही किसी के परिवार में विधायक या सांसद है, तो फिर उस परिवार से किसी अन्य सदस्य को सरपंच, जनपद, या जिला पंचायत का चुनाव नहीं लड़ाना चाहिए। गृहमंत्री नरोत्तम मिश्रा के बेटे सुकर्ण मिश्रा ग्वालियर-चंबल क्षेत्र में सक्रिय हो चुके हैं। भाजपा प्रदेश कार्यसमिति के सदस्य भी हैं। वहीं, पिता की तरह वे लोगों के बीच जगह बना रहे हैं। केंद्रीय मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर के बेटे देवेंद्र प्रताप सिंह भी राजनीति में सक्रिय हो चुके हैं। देवेंद्र को अपने पिता के उत्तराधिकारी के तौर पर देखा जा रहा है। भविष्य में देवेंद्र भी टिकट के लिए दावेदारी कर सकते हैं। पूर्व मंत्री गौरीशंकर बिसेन की बेटी मौसम बिसेन प्रदेश की राजनीति में सक्रिय हैं। 2018 विधानसभा चुनाव में इन्होंने टिकट की दावेदारी की थी। पार्टी में उन्हें विरोध झेलना पड़ा था। साल 2018 में हुए विधानसभा चुनाव में भाजपा ने गौरीशंकर शेजवार की जगह उनके बेटे मुदित शेजवार को सांची विधानसभा से प्रत्याशी बनाया था, तब वे कांग्रेस प्रत्याशी प्रभुराम चौधरी से 10,571 वोटों से हार गए थे। कांग्रेस से भाजपा में आए सिंधिया समर्थक व राजस्व मंत्री गोविंद सिंह राजपूत के छोटे बेटे आकाश राजपूत को उनके उत्तराधिकारी के रूप में देखा जा रहा है। आकाश टीवी सीरियलों में काम कर चुके हैं। सुरखी विधानसभा सीट पर हुए उपचुनाव में आकाश ने प्रचार का जिम्मा संभाला था। सिंधिया समर्थक व शिवराज सरकार में मंत्री तुलसी सिलावट के छोटे बेटे राजनीति में सक्रिय हो चुके हैं। कोविडकाल के दौरान वो काफी सक्रिय रहे।

● श्याम सिंह सिकरवार

मिशन 2023 की राह में कांटे बन सकते हैं कई दिग्गज

मप्र भाजपा में बदली हुई परिस्थितियां 2023 के विधानसभा चुनाव में अपनों से ही मुसीबत के संकेत दे रही हैं। जो चेहरे पार्टी में कभी कद्दावर माने जाते थे, कैबिनेट का हिस्सा थे, अब वही जीत के रास्ते पर कांटे बिछा सकते हैं। इन परिस्थितियों की जड़ में ज्योतिरादित्य सिंधिया का अपने समर्थकों सहित भाजपा ज्वाइन करना है। 2020 में सिंधिया और उनके समर्थकों के आने के बाद जिन सीटों पर उपचुनाव हुए, वहां भाजपा के पुराने चेहरों को मौका न मिलना मुश्किलें खड़ी कर सकता है। 2020 से अब तक की गतिविधियों पर सरसरी नजर डालें तो स्पष्ट संकेत मिलते हैं कि भाजपा के मिशन-2023 की राह में पार्टी के ही कई दिग्गज और पूर्व मंत्री कांटे बिछा सकते हैं। कद्दावर मंत्री रहे जयंत मलैया की सीट हों या डॉ. गौरीशंकर शेजवार अथवा जयभान सिंह पवैया, ऐसे कई दिग्गज हैं, जिनकी परंपरागत सीटों पर केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया के साथ कांग्रेस से आए विधायक काबिज हो गए हैं। मौजूदा विधायक होने के कारण जाहिर है कि भाजपा के पूर्व मंत्रियों और पूर्व विधायकों को 2023 में टिकट नहीं मिल पाएगा।

कांग्रेस लेगी आदिवासी संगठनों का सहारा

मप्र में सरकार बनाने के लिए आदिवासी वोटर्स निर्णायक हैं। आदिवासी वोट बैंक जिससे दूर हुआ, वो सत्ता से दूर हुआ। यानी मप्र में 22 फीसदी आदिवासी वोट को सत्ता की चाबी माना जाता है। सत्ता की इस चाबी पर कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष कमलनाथ की नजर है। इस वोट बैंक को कांग्रेस अपने पक्ष में करने के लिए आदिवासी संगठनों को एक मंच पर लाने की कवायद करेगी। यानी प्रदेश के आदिवासी संगठनों को एकजुट कर कांग्रेस प्रदेश की 22 फीसदी आबादी का वोट अपने पक्ष में लाने का प्रयास करेगी।

गौरतलब है कि प्रदेश में विधानसभा चुनाव में अब सिर्फ एक साल बचा है। भाजपा-कांग्रेस ने उन 78 सीटों पर फोकस बढ़ा दिया है जहां आदिवासी वोटर किसी को जिताने-हराने का माद्दा रखते हैं। इनमें से 47 सीटें रिजर्व हैं। दोनों दलों की चिंता की बड़ी वजह यह भी है कि हाल ही दिनों में सिस्टम से नाराज आदिवासियों ने किसी राजनीतिक झंडे-बैनर से अलग एकजुट होकर अपनी ताकत दिखाई है। यही कारण है कि भाजपा ने **गत दिनों मांडू** में हुए राज्य स्तरीय प्रशिक्षण शिविर के एजेंडे पर टॉप पर आदिवासी वोट बैंक रहा। इधर, कांग्रेस ने राहुल गांधी की भारत जोड़ो यात्रा का जो रूट फाइनल किया है, वह आदिवासी इलाकों से गुजरता है। वहीं अब कमलनाथ आदिवासी संगठनों को एक मंच पर लाने की तैयारी कर रहे हैं।

मप्र की राजनीति के केंद्र में इस समय आदिवासी हैं। 2018 के विधानसभा चुनाव में कांग्रेस की सरकार बनाने में आदिवासियों का महत्वपूर्ण रोल रहा था। आदिवासियों को अपनी तरफ खींचने की रणनीति से बेचैन कांग्रेस ने अब आदिवासियों को कांग्रेस से जोड़े रखने की प्लानिंग पर तेजी से काम शुरू कर दिया है। मप्र कांग्रेस के कमलनाथ ने कांग्रेस के आदिवासी विधायकों के साथ बैठक कर आदिवासी संगठनों को एक मंच पर लाकर चर्चा करने की जिम्मेदारी दी है। बैठक में कांग्रेस के आदिवासी विधायकों से अलग-अलग क्षेत्रों में आदिवासी संगठनों के प्रभाव को लेकर चर्चा की। बैठक में जयस के संरक्षक डॉ. हीरालाल बच्चन, अशोक मर्सकोले, सुरेंद्र सिंह बघेल, कांतिलाल भूरिया सहित आदिवासी विधायक मौजूद थे। बैठक में कमलनाथ ने विधायकों से कहा, आदिवासियों को बांटने के लिए भाजपा और आरएसएस कई प्रकार से प्रयास कर रहे हैं। आदिवासियों को आपस में लड़ाने और उपजातियों को बांटने की कोशिश हो रही है। इस सच्चाई को हमें बताना जरूरी है। आदिवासियों के शिक्षित और जागरूक युवाओं को प्रलोभन दिए जा रहे हैं। इसके बारे में आदिवासियों को बताने समझाने की जरूरत है।

बैठक में मौजूद कांग्रेस विधायक और जयस के राष्ट्रीय संरक्षक डॉ.हीरालाल अलावा ने बताया पीसीसी अध्यक्ष कमलनाथ ने आदिवासी विधायकों के साथ बैठक की। बैठक में आदिवासी विधायकों के साथ आदिवासी कांग्रेस के पदाधिकारियों के साथ मिशन 2023 की चुनौती को लेकर चर्चा हुई। इसमें आदिवासी समाज और आदिवासी सामाजिक संगठनों की भूमिका को लेकर चर्चा की गई। हमने आदिवासियों के मूलभूत मुद्दे कमलनाथ को बताए हैं। उन्होंने आदिवासी संगठनों के साथ बैठकर चर्चा करने की बात कही है। जल्दी ही कमलनाथ जयस सहित सभी आदिवासी संगठनों के साथ चर्चा करेंगे।

पिछले दिनों से जयस आदिवासियों के मुद्दे को तेजी से उठा रहा है। इससे नजर आता है कि 2023 के इलेक्शन में जयस भाजपा और कांग्रेस के समीकरण बिगाड़ सकती है। हालांकि, भाजपा जयस को कांग्रेस की बी टीम बताकर उसके प्रभाव को खत्म करने की मुहिम में जुटी है। इसका कारण है जयस के फाउंडर मेंबर्स में से एक डॉ. हीरालाल अलावा जिन्होंने कांग्रेस के टिकट पर चुनाव लड़ा, लेकिन जयस के बाकी नेताओं का कहना है कि जयस किसी की ए या बी टीम नहीं है। हाल ही में हुई ऐसी कुछ घटनाओं के बाद यह वर्ग बिना किसी राजनीतिक दल के नेतृत्व में मैदान में उतरा। आदिवासी युवाओं की ब्रिगेड तैयार हो रही है। जो विधानसभा चुनाव में अपनी ताकत का अहसास कराएगी। दरअसल, प्रदेश के राजनीतिक इतिहास को देखें तो सरकारी स्तर पर योजनाएं चलाकर आदिवासियों के उत्थान करने के दावे किए गए, लेकिन आज हालात और परिस्थितियां बदल गई हैं। उन्हें अपने वोट की ताकत का अहसास होता रहा है। यही वजह है कि आदिवासियों के बीच से तैयार हुए संगठन भी हाशिएं पर पहुंच गए। विशेषज्ञ कहते हैं कि जब से मप्र बना, तब से राजनीतिक दलों ने आदिवासियों को शोभा की वस्तु बनाकर रखा, कांग्रेस और भाजपा दोनों ने। आदिवासियों को सहेजकर रखने की कोशिश तो हुई, लेकिन जितनी उनकी आबादी है, उस हिसाब से उनकी लीडरशिप को पॉलिटिकल स्पेस नहीं मिला।

● **अरविंद नारद**

मप्र में तीसरा दल मजबूत नहीं

प्रदेश में मुख्य तौर पर चुनावी मुकाबला भाजपा और कांग्रेस के बीच ही होता है। कोई तीसरा दल अपनी स्थिति को मजबूत नहीं कर सका है। तीसरे दल के तौर पर बहुजन समाज पार्टी, समाजवादी पार्टी और गोंडवाना गणतंत्र पार्टी ने पैर जमाने की कोशिश की थी, लेकिन सफलता नहीं मिली। 2018 के विधानसभा चुनाव की जो तस्वीर सामने आई उसमें वोटर ने जातीय वोटों की राजनीति करने वाले सभी दलों को नकार दिया। गोंडवाना गणतंत्र पार्टी को गोंड आदिवासियों का ही समर्थन नहीं मिला था। जाटव वोट बसपा के बजाय कांग्रेस को चले गए थे। 15 साल बाद कांग्रेस की सरकार में वापसी अनुसूचित जाति और जनजाति के वोटों के कारण ही संभव हो सकी थी। जबकि कांग्रेस को भाजपा से कम वोट मिले थे। भाजपा को 41.02 प्रतिशत वोट मिले थे, जबकि कांग्रेस को 40.89 प्रतिशत वोट मिले। कांग्रेस जब भी 40 प्रतिशत से नीचे वोट पाती है वह सरकार से बाहर हो जाती है। भाजपा ने वर्ष 2023 के विधानसभा चुनाव में कुल 51 प्रतिशत वोट हासिल करने का लक्ष्य रखा है। इस लक्ष्य को पाने के लिए पार्टी दोहरी रणनीति पर काम कर रही है। पहली रणनीति कार्यकर्ताओं के जरिए पोलिंग स्टेशन को मजबूत करने की है। रणनीति का दूसरा हिस्सा हितग्राही मूलक योजनाओं के जरिए वोटर के बीच अपनी पैठ बनाने की है।

1,373 करोड़ में बिछेगा सड़कों का जाल

विधानसभा चुनाव 2023 से पहले प्रदेश में जहां गांव से लेकर शहर तक सड़कों का जाल बिछेगा, वहीं मानसून से जर्जर हुई सड़कों का पेंचवर्क भी पूरा किया जाएगा। इसके लिए केंद्र सरकार ने पूंजीगत व्यय के लिए मप्र को विशेष सहायता योजना में 1373 करोड़ रुपए की राशि आवंटित की है। इस राशि से 107 सड़कों का निर्माण कराया जाएगा। इनमें से 99 सड़कें जुलाई 2023 तक पूरी हो सकेंगी। केंद्र ने यह राशि मप्र को बिना ब्याज के दी है और इसे 50 साल में वापस करना होगा। चुनावी वर्ष से पहले सरकार के सामने जर्जर सड़कों का पेंचवर्क बड़ी चुनौती है। प्रदेश में इस बार हुई रिकॉर्डतोड़ बारिश ने सड़कों की दशा बिगाड़ दी है।

मप्र की 76000 किलोमीटर सड़कों में से 9500 किमी इस बार बारिश में खराब हो गईं। ये सड़कें लोक निर्माण विभाग, मप्र सड़क विकास निगम और राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण की हैं। ऐसा पहली बार है जब मानसूनी बारिश में प्रदेश में इतनी ज्यादा सड़कें खराब हुईं हों। अब तक 4 से 5 हजार किमी सड़कें ही खराब होती रही हैं। 55 हजार किलोमीटर का बड़ा हिस्सा लोक निर्माण विभाग के पास है, जिसमें से सबसे ज्यादा 5500 किलोमीटर से ज्यादा सड़कें पूरी तरह उधड़ चुकी हैं। बाकी खराब सड़कों में 2500 किमी का हिस्सा आरडीसी और एनएचएआई का है। खास बात यह है कि सालभर पहले ही बनी भोपाल से होशंगाबाद जाने वाली सड़क औबेदुल्लागंज से बुदनी के बीच खराब हो गई है। भोपाल में करीब 500 किमी सड़कें खराब हुई हैं। पिछले दो साल में नगर निगम ने सीवेज और पाइप लाइन डालने के लिए 300 किमी से ज्यादा सड़कें खोदीं, लेकिन इनका रेस्टोरेशन ठीक से नहीं किया। इसलिए ये बारिश भारी पड़ गई। प्रदेश के दूरदराज क्षेत्रों की स्थिति क्या होगी इसका आंकलन राजधानी की सड़कों की स्थिति से लगाया जा सकता है। शहर में सड़कों का हाल-बेहाल बना हुआ है। सड़कें जगह-जगह से **गड्ढों में तब्दील** हो गई हैं। इसके कारण रहवासियों को मुसीबत झेलना पड़ रही है। इसलिए इनका पेंचवर्क कराना सरकार के लिए बड़ी चुनौती है।

गौरतलब है कि आगामी विधानसभा चुनाव को देखते हुए मुख्यमंत्री द्वारा विधायकों से उनके क्षेत्र की सड़कों के विकास कार्य के प्रस्ताव मांगे थे। मांगे गए प्रस्ताव के आधार पर की गई अनुशंसा में बीना-आगासोद, उमरी से पांडरी मार्ग, लहरोली से ढोचरा मार्ग, निपानिया बैजनाथ से लसूड़िया मार्ग, हरनामपुर से भखुरी, रेही से नवाही मार्ग, पोड़ी से अजगुढ़, बिछुआ से मलारा मार्ग, भदभदा से बिलकिसगंज, डेली से मोहनगढ़, गिरवार से घोची मार्ग आदि शामिल है। विधायकों ने करीब 600 सड़कों मुख्य मार्गों का डामरीकरण की अनुशंसा की थी, जिनके कारण संभागीय कार्यालय निर्माण 800 करोड़ में कराए जाने हैं। ऐसे में केंद्र से मिली 1373 करोड़ रुपए की राशि सड़कों के निर्माण को गति देगी। जिन सड़कों का निर्माण कराया जाएगा, उनमें दो नवीन सड़कों रीवा ब्यौहारी से टेटका मोड़ तक 125 करोड़ रुपए तथा नर्मदापुरम-पिपरिया रोड 70.57 करोड़ की लागत से निर्मित कराया जाएगा। इसके अलावा अपूर्ण कार्यों एलीवेटेड कॉरिडोर इंदौर को 70.50 करोड़, सीहोर इछावर-कोसमी मार्ग 97.50 करोड़, मनावर उमरबन कालीबावड़ी धामनोद 89 करोड़, हथाईखेड़ा डैम से माउंट फोर्स स्कूल रायसेन रोड 83.35 करोड़, नसरुल्लागंज-कोसमी मार्ग 42.34 करोड़, हाई लेवल ब्रिज नर्मदा नदी ओंकारेश्वर 40.25 करोड़, नरसिंहपुर सांकल गोटेगांव मेजर डिस्ट्रिक रोड 40 करोड़, कलियासोत डैम न्यू बायपास रोड 32.31 करोड़, जबलपुर यूनिवर्सिटी से डुमना रोड 30 करोड़, रेलवे ओवर ब्रिज खंडवा अकोला मीटर गेज सेक्शन केन नदी पन्ना-अमानगंज 14.68 16.28 करोड़ आदि की स्वीकृति केंद्र से मिली है। इनके अलावा रतलाम रिंग रोड 17.50 करोड़, इटारसी-भुसावल 17.35 करोड़, मनावर सेमल्दा 17.10 करोड़, भोपाल तिराहा रायसेन 17.00 करोड़, सिलवानी-गैरतगंज 15.79 करोड़, हाईलेवल ब्रिज धसान 14.83 करोड़, रतलाम-बाजना रोड 13.25 करोड़, बिरसी गोंदिया रोड 13.54 करोड़ और सागर-दमोह मार्ग 12.46 करोड़ में निर्माण की स्वीकृति मिली है।

वर्तमान में विभाग के पास सड़कों के रखरखाव का बजट इन जिलों के लिए लाखों में होता था। इसी से बारिश में खराब होने वाली सड़कों के गड्ढे भी भरे जाते हैं। इसके लिए सरकार ज्यादा राशि खर्च करने जा रही है। कंपनी को सड़कों के मेंटेनेंस के लिए 143.66 लाख रुपए प्रति वर्ष मिलेंगे। हालांकि ठेके लेने के 6 माह तक कोई राशि नहीं दी जाएगी। पहले सड़कों का रिपेयर करना होगा। सरकार के पास रिपोर्ट पहुंचने के बाद भुगतान किया जाएगा। दरअसल ये फॉर्मूला अभी देश में सिर्फ हरियाणा में लागू है। वहां सड़कों का रखरखाव एक निजी कंपनी कर रही है। वहां से मप्र सरकार यह मॉडल अपनाने जा रही है। विभाग के अधिकारी एक जिले में यह फॉर्मूला लागू करना चाह रहे थे, लेकिन आला अफसरों के दबाव में यह फॉर्मूला छह जिलों में लागू किया जा रहा है। शेष जिलों में सड़कों के गड्ढे जैसे पहले भरे जाते थे, वैसे ही भरे जाएंगे। वर्तमान में लागू व्यवस्था के अनुसार सड़कों का पेंचवर्क और गड्ढे भरने के लिए जिलों को कोई बजट आवंटित नहीं किया जाता। ऐसे में विभाग के मैदानी इंजीनियर खराब सड़कों का पेंचवर्क कराने के बाद उसका बिल तैयार करते हैं। बिल की जांच के बाद विभाग संबंधित को भुगतान करता है।

● **राकेश ग्रोवर**

मप्र में अब हरियाणा मॉडल से सुधारी जाएंगी सड़कें

मप्र में शहर से लेकर गांव तक सड़कों का जाल बिछा हुआ है। लेकिन सड़कों पर होने वाले गड्ढे परेशानी का सबब बनते रहते हैं। ऐसे में जर्जर सड़कों का पेंचवर्क कराने के लिए प्रदेश सरकार ने नया फॉर्मूला लागू करने की मंशा बनाई है। यानी मप्र में अब हरियाणा मॉडल से सड़कें सुधारी जाएंगी। इस फॉर्मूले के तहत सड़कों का रखरखाव निजी कंपनी करेगी। इसके तहत जनता की शिकायत पर अब सड़कों को सुधारा जाएगा, वह भी समय सीमा में। जानकारी के अनुसार, नए फॉर्मूले के तहत सड़कें अब लोक निर्माण विभाग के इंजीनियरों और अफसरों के सिफारिश पर नहीं, बल्कि जनता की शिकायत पर सुधारी जाएंगी। इसके लिए कंपनी को समय सीमा भी दी जाएगी। समय सीमा में कंपनी अगर सड़कें दुरुस्त नहीं करती, तो कार्रवाई होगी। सरकार ने भोपाल कैपिटल जोन के भोपाल, विदिशा, रायसेन, राजगढ़, नर्मदापुरम और हरदा जिले की सड़कों के पेंचवर्क के ठेके देने की तैयारी कर ली है। जिलों में 4244 किमी सड़कें शामिल हैं।

मप्र में मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान जितने संवेदनशील हैं, उतने ही कठोर भी। उनकी संवेदनशीलता गरीबों और जरूरतमंदों के लिए हमेशा दिखती है, वहीं माफिया ने उनकी कठोरता को झेला है। अपनी चौथी पारी में शिवराज ने माफिया पर जमकर नकेल कसी है। प्रदेश को माफियामुक्त बनाने के लिए न केवल उन्होंने प्रशासन को फ्रीहैंड दिया है, बल्कि माफिया के कब्जे से अवैध जमीनों को मुक्त कराया है। अब इन जमीनों पर बेघरों के लिए मकान बनाने के लिए स्वराज योजना लाई जा रही है। जिसके तहत माफिया की जमीनों पर गरीबों के आशियाने बनाए जाएंगे।

माफिया की जमीन पर गरीबों के आशियाने

राज्य सरकार ने इसी साल जून में घोषणा की थी कि प्रदेश में माफिया और गुंडों से मुक्त कराई गई जमीन पर गरीबों के आशियाने बनेंगे। अब इस योजना का ड्राफ्ट तैयार हो गया है। सरकार इस 21 हजार एकड़ जमीन पर गरीबों के लिए स्वराज योजना ला रही है। इसमें फ्लैट, डुप्लेक्स, प्लॉट भी मिलेंगे। कवर्ड कैंपस भी बनाए जाएंगे, लेकिन बड़ी बात ये कि ये मकान फ्री नहीं मिलेंगे, इसके लिए खरीदार को आंशिक कीमत देनी होगी। हालांकि ये कीमत कितनी होगी, ये अभी तय होना बाकी है, लेकिन नगरीय आवास एवं विकास विभाग के सूत्रों ने बताया कि यह कीमत करीब 20 प्रतिशत ही होगी। यानी 10 लाख का मकान है तो खरीदार को सिर्फ 2 लाख रुपए देने होंगे। इसकी अंतिम कीमत प्रोजेक्ट और लोकेशन के हिसाब से तय की जाएगी।

ड्राफ्ट के मुताबिक माफिया से मुक्त जमीन पर कलेक्टर प्रोजेक्ट की वायबिलिटी जांचेंगे। यदि प्रोजेक्ट बेहतर लोकेशन पर है तो डेवलपर्स से ऑफर बुलाए जाएंगे। इसमें ऑफर के तहत गरीबों के मकान बनाने के बदले उसी जमीन का कुछ हिस्सा कमर्शियल उपयोग के लिए मिल जाएगा। इस राशि से वह लागत निकालेगा। इसमें सीधे तौर पर सब्सिडी नहीं मिलेगी, बल्कि हितग्राही को कुछ राशि देने की बाध्यता होगी। प्रदेश में पिछले दो साल में सरकार ने माफिया से 21502 एकड़ जमीन मुक्त कराई है। इसका बाजार मूल्य 18146 करोड़ रुपए है। नई योजना में हितग्राहियों से लेकर एजेंसी और डेवलपर्स के चयन आदि को लेकर गाइडलाइन बनाई गई है। इसमें हितग्राहियों का चयन करने का अधिकार कलेक्टर के पास रहेगा। अभी योजना का ड्राफ्ट मंजूरी के लिए सीनियर सेक्रेटरी की कमेटी के पास जाएगा। ये कमेटी पात्र हितग्राही की स्क्रूटनी भी करेगी।

इस स्कीम में सब्सिडी नहीं होने पर भी प्रदेश में सबसे सस्ते मकान मिलेंगे। अभी प्रधानमंत्री आवास योजना के हितग्राहियों को सब्सिडी पर मकान बनाने के लिए खुद की जमीन लगती है, लेकिन इस प्रोजेक्ट में ऐसा नहीं होगा। इसमें जमीन माफिया के कब्जे से मुक्त कराई होगी। ऐसे समझ सकते हैं कि केवल कुछ अंशदान देना होगा। छोटे शहर में मकान मिलेंगे, जबकि बड़े शहर में फ्लैट मिल जाएंगे। ड्राफ्ट को जल्द ही कैबिनेट के समक्ष रखा जा सकता है।

मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान की अध्यक्षता में हुई कैबिनेट की बैठक में जहां कई नीतिगत फैसले लिए गए, वहीं मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रदेश में माफिया से अब तक 21 हजार एकड़ भूमि मुक्त कराई गई है। शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि प्रदेश में अपराधियों के विरुद्ध हुई कार्रवाइयों में अब तक 21 हजार एकड़ से अधिक भूमि मुक्त कराई गई है। इस जमीन का उपयोग मूलत: गरीबों को बांट कर उनके आवास बनाने के लिए किया जाएगा। राज्य सरकार की स्पष्ट मंशा है कि माफिया के कब्जे की अवैध भूमि छुड़ाकर गरीबों में बांटी जाए। जहां आवश्यकता होगी वहां अस्पताल, स्कूल और **आंगनवाड़ी बनाने** तथा अन्य शासकीय कार्यों के लिए भी भूमि का उपयोग किया जाएगा। बैठक में भू-माफिया, गुंडों, आदतन अपराधियों के विरूद्ध की गई कार्यवाही और हटाए गए अवैध अतिक्रमण से संबंधित प्रस्तुतिकरण दिया गया। प्रस्तुतिकरण में बताया गया कि अप्रैल 2020 से मार्च 2022 तक राजस्व, नगरीय निकाय और वन विभाग की 15 हजार 397 एकड़ भूमि मुक्त कराई गई, जिसका मूल्य 11 हजार 941 करोड़ रुपए है। इसके साथ ही निजी और अन्य विभागों की 6 हजार 105 एकड़ भूमि को भी मुक्त कराया गया। प्रस्तुतिकरण में बताया गया कि मार्च 2021 से मार्च 2022 के बीच भू-माफिया के विरूद्ध 4 हजार 495 प्रकरण दर्ज किए गए। इस अवधि में

450 अरब की जमीन भू माफिया के कब्जे में

गत वर्ष आयुक्त भू-अभिलेख ने करीब 3.32 लाख हैक्टेयर जमीन पर कब्जे का गोलमाल पकड़ा था। जिसकी कीमत करीब 450 अरब रुपए से अधिक हो सकती है। मप्र में एक तरफ सरकार माफिया पर अंकुश लगाने के लिए कायदे-कानून सख्त करती है, वहीं अधिकारियों के साथ मिलकर रसूखदार माफिया अपना अवैध कारोबार बेरोकटोक बढ़ाते रहते हैं। खासकर सरकारी भूमि पर कब्जा करने का कालाकारोबार यहां बेरोकटोक चल रहा है। सरकारी आंकड़ों के अनुसार, मप्र में 231.34 लाख हैक्टेयर भूमि कृषि उपयोग की है। वहीं वन क्षेत्रफल 85.89 लाख हैक्टेयर, काश्त उपयोगी पड़त भूमि 10.02 लाख हैक्टेयर, कुल पड़त भूमि 9.81 लाख हैक्टेयर है। लेकिन हकीकत में वन भूमि, चरनोई और पड़त भूमि पर बड़े स्तर पर भू माफिया ने कब्जा किया है। सरकारी भूमि को कब्जाने का यह खेल सुनियोजित तरीके से किया गया है। इसे कब्जाने वाले रसूखदार लोग हैं। अतः प्रशासन इनके खिलाफ कार्रवाई करने से हिचकता है। लेकिन अपनी चौथी पारी में मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने माफिया के कब्जे से सरकारी जमीनों को मुक्त कराने का अभियान शुरू कर दिया है। सूत्रों का कहना है कि गत वर्ष आयुक्त भू-अभिलेख की पड़ताल में प्रदेश में बड़े पैमाने पर भू माफिया का खेल उजागर हुआ था।

9 हजार 896 अवैध अतिक्रमण तोड़े गए, 188 व्यक्तियों के विरूद्ध एनएसए में कार्यवाही की गई तथा 498 को जिला बदर किया गया।

जानकारी के अनुसार प्रदेश में एंटी माफिया अभियान में राज्य शासन ने भू-माफिया, गुंडों और आदतन अपराधियों के विरूद्ध सख्त रुख अपनाते हुए दो साल में 15 हजार 397 एकड़ से अधिक राजस्व, नगरीय निकाय और वन भूमि को मुक्त कराया गया है। साथ ही 6105 एकड़ निजी और अन्य विभागों की भूमि भी मुक्त कराई गई है। मुक्त कराई गई भूमि की कीमत 18 हजार 146 करोड़ रुपए है। भू-माफिया, गुंडों और आदतन अपराधियों के 12 हजार 640 अवैध निर्माण, जिसमें मकान, दुकान, गोदाम, मैरिज गार्डन, फैक्ट्री आदि शामिल है, नियमानुसार तोड़े एवं हटाए गए। मुख्यमंत्री ने कहा कि मप्र की धरती से गुंडे, माफियाओं, आदतन अपराधियों का सफाया किया जाए। आम जनता को उनसे मुक्ति दिलाने के लिए सख्त एक्शन लें, जिससे वे या तो सुधर जाए या फिर मप्र छोड़कर चले जाएं। प्रदेश में किसी भी असामाजिक तत्व को बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। बताया गया कि अप्रैल से दिसंबर 2020 तक 7864 करोड़ रुपए की 3365.26 एकड़, जनवरी-फरवरी 2021 में 1588 करोड़ की 3569.56 एकड़, मार्च से अगस्त 2021 में 539 करोड़ रुपए की 3840.24 एकड़, सितंबर और अक्टूबर 2021 में 721 करोड़ की 1810.8 एकड़, नवंबर-दिसंबर 2021 में 558 करोड़ रुपए की 568.12 एकड़ और जनवरी से मार्च 2022 तक 671 करोड़ रुपए की 2243.79 एकड़ राजस्व, नगरीय निकाय और वन विभाग की भूमि को मुक्त करवाया गया है।

मुक्त करवाई गई भूमि में से 1820.13 एकड़ भूमि आवास एवं अन्य प्रयोजन में ली जा रही है, जो इस प्रकार है- आवास निर्माण के लिए आवंटित रकबा-159.32 एकड़। आवास निर्माण के लिए आवंटन प्रक्रियाधीन रकबा-75.85 एकड़। शासकीय विभाग/एजेंसी को अन्य प्रयोजन के लिए आवंटित भूमि-365.47 एकड़। शासकीय विभाग/एजेंसी को अन्य प्रयोजन के लिए आवंटित प्रक्रियाधीन भूमि-940.56 एकड़।

लोक परिसंपत्ति प्रबंधन विभाग के पोर्टल पर नीलामी के लिए दर्ज की गई भूमि-29.48 एकड़। मूल विभाग को सौंपा गया रकबा-257.45 करोड़। कुल 1828.13 एकड़ भूमि आवास एवं अन्य प्रयोजन के लिए उपयोग में लाई जा रही है। प्रदेश में मार्च 2021 से मार्च 2022 तक भू-माफियाओं, गुंडों और आदतन अपराधियों के अवैध कब्जों के विरूद्ध की गई कार्यवाही में 4,495 प्रकरण दर्ज किए गए हैं। इनमें से पुलिस विभाग द्वारा 585, राजस्व विभाग द्वारा 2459, नगरीय निकायों द्वारा 925, वन विभाग द्वारा 47 और संयुक्त रूप से 479 प्रकरण भू-माफियाओं के विरूद्ध दर्ज किए गए। एंटी माफिया अभियान में मार्च 2021 से मार्च 2022 तक 9896 अवैध अतिक्रमणों को ध्वस्त किया गया। इसमें पुलिस द्वारा 370, राजस्व द्वारा 3359, नगरीय निकायों द्वारा 3915, वन विभाग द्वारा 2 और संयुक्त विभागीय टीम द्वारा 1650 अवैध अतिक्रमण तोड़े गए। इस अवधि में 8450.45 एकड़ भूमि अतिक्रमण से मुक्त कराई गई, जिसकी अनुमानित कीमत 2490 करोड़ रुपए है। अभियान में 188 व्यक्तियों को एनएसए में निरूद्ध और 498 को जिला बदर किया गया।

शासन और प्रशासन का इकबाल तभी बुलंद होता है, जब अपराध और अपराधियों में कानून का खौफ दिखे। मप्र में इन दिनों माफिया की दुनिया में शासन-प्रशासन का खौफ दिखाई दे रहा है। प्रदेश में भूमाफिया, गुंडा तत्वों और सरकारी जमीन पर अतिक्रमण करने वालों पर पुलिस-प्रशासन ने शिकंजा कस दिया है। प्राकृतिक सौंदर्य और खनिज संपदा से भरपूर मप्र का जितना अवैध दोहन हुआ है उतना किसी और राज्य का नहीं हुआ है। 3,08,252 वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल में फैले मप्र में लाखों हैक्टेयर जमीन भू माफिया और रसूखदारों ने सीलिंग एक्ट की आड़ में कब्जा कर रखी है। वहीं दूसरी तरफ प्रदेश की एक बड़ी आबादी आज भी भूमिहीन है। भू-माफिया ने वन भूमि, चरनोई भूमि, ग्रीन बेल्ट, मरघट, कब्रिस्तान, खेल मैदान, नदी, तालाब आदि पर कब्जा कर रखा है। शासकीय अधिकारियों की मिलीभगत से बड़े **स्तर पर गोलमाल** किया गया है। सरकार अब सरकारी भूमि पर अतिक्रमण करने वालों की जिलावार सूची बनवाकर उनके कब्जे से जमीन छुड़वा रही है। प्रदेश में अपने रसूख के दम पर सरकारी जमीनों पर अवैध रूप से बड़े होटल, रेस्टोरेंट, गोदाम, घर बनाकर ठप्पे से रहने वाले भूमाफिया, ड्रग माफिया, शराब माफिया और अवैध कामों में लिप्त लोगों पर सख्त कार्यवाही की जा रही है।

● **धर्मेंद्र सिंह कथूरिया**

42 लाख हैक्टेयर जमीन लापता

मप्र में जमीनों का गोरखधंधा किस मुकाम पर है इसका अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि यहां वर्षों से 42 लाख हैक्टेयर जमीन लापता है। इसमें राजधानी भोपाल की ही 65 हजार हैक्टेयर जमीन सरकारी रिकॉर्ड से गायब है। सरकारी रिकॉर्ड से जमीन गायब होने का ये पूरा मामला वर्ष 1980 से 2000 के बीच का बताया जा रहा है, जिसमें शहडोल, सीधी, शिवपुरी, बालाघाट और छिंदवाड़ा में सबसे ज्यादा जमीन गायब हुई है। यहां वर्ष 1980 से 2000 के बीच दो लाख हैक्टेयर से लेकर पांच लाख हैक्टेयर तक जमीन का रिकॉर्ड नहीं मिल पा रहा है। शहडोल की बात करें तो वर्ष 1980 से पहले यहां सरकारी जमीन करीब 13 लाख 55 हजार 066 हैक्टेयर थी, जो वर्ष 2000 में घटकर मात्र 6 लाख 44 हजार 964 हैक्टेयर ही रह गई है। यानी कि 5 लाख 41 हजार 042 हैक्टेयर जमीन का ही सरकारी रिकॉर्ड उपलब्ध है। सीधी में 3 लाख 62 हजार 030 हैक्टेयर, शिवपुरी में 3 लाख 12 हजार 200 हैक्टेयर, बालाघाट में 2 लाख 28 हजार 322 हैक्टेयर, छिंदवाड़ा में 2 लाख 16 हजार 560 हैक्टेयर और सतना में 2 लाख 3 हजार 485 हैक्टेयर सरकारी जमीन गायब है। हालांकि सागर में 407 हैक्टेयर, उज्जैन में 663 हैक्टेयर और देवास में 985 हैक्टेयर जमीन गायब है, जबकि होशंगाबाद और विदिशा में जमीन का रिकॉर्ड सही पाया गया है।

भारतीय अर्थव्यवस्था की चुनौतियां

पूरी दुनिया में मंदी के बादल मंडरा रहे हैं। दुनियाभर के अर्थशास्त्री आशंकित और सशंकित हैं। दुनिया का सप्लाई चेन लगातार तीन साल से कोरोना और रूस-यूक्रेन युद्ध जैसे अनियंत्रित कारणों से प्रभावित है। कोरोना ने खपत को बड़े पैमाने पर प्रभावित किया था और रूस-यूक्रेन युद्ध आपूर्ति को प्रभावित कर रहा है। पहले लोगों ने खरीदना कम कर दिया और अब दुनिया में आपूर्ति मुश्किल हो रही है। इससे अर्थशास्त्रियों को मंदी की आहट सुनाई दे रही है। इस मंदी की आहट को समझने के लिए सबसे पहले हमें समझना पड़ेगा कि मंदी कहते किसे हैं?

जब लोग अर्थव्यवस्था में अपने खर्च को संकुचित कर लेते हैं तो उत्पाद के उत्पादन से लेकर सेवा की आपूर्ति तक में गिरावट आ जाती है, और यही जीडीपी के आंकड़ों में परिलक्षित होने लगता है। यदि लगातार कई महीनों तक जीडीपी नीचे जाती है तो लोग कहते हैं कि मंदी आ गई। दरअसल जीडीपी का गिरना केवल एक परिणाम का थर्मामीटर है असल वजह है बाजार में खरीददारी कम हो गई जिसके कारण उत्पादन और सेवा की आपूर्ति दोनों कम हो गई। कुछ ने हालात के कारण हाथ सिकोड़ लिया तो कुछ ने बचत की आदतों में वृद्धि कर ली। आर्थिक मोर्चे पर संघर्ष बढ़ने से लोगों ने घर, गाड़ी समेत पूंजीगत खर्चों को नियंत्रित करना शुरू कर दिया। स्टॉक मार्केट भी कभी ऊपर कभी नीचे हो रहे हैं। हालांकि स्टॉक मार्केट की बड़ी वजह घरेलू के साथ-साथ ग्लोबल स्तर पर कमजोर संकेतक हैं और ब्याजदरों में हर जगह बदलाव के कारण विदेशी निवेशकों की बिकवाली है।

सरकार और रिजर्व बैंक भी इसकी गंभीरता को समझ रहें हैं। अंतरराष्ट्रीय मंदी के साथ आई महंगाई की आहट उन्हें भी है। हालांकि रिजर्व बैंक ब्याज दर के माध्यम से इसे नियंत्रित करने का प्रयास कर रही है वही पर्याप्त नहीं है क्योंकि इसके साइड इफेक्ट में होम लोन, ग्राहक लोन और व्हीकल लोन की किश्त बढ़ रही है जिससे आम आदमी दूसरी तरफ से मार खा जा रहा है। लोग घर, सामान और गाड़ी खरीदना कम कर रहें हैं। इसके कारण इन उद्योगों के अलावा इनसे जुड़े अनेक काम-धंधों पर भी क्रमिक प्रभाव पड़ रहा है। इसके पहले भी वैश्विक मंदी आती थी लेकिन उसके प्रभाव हमारे ऊपर कम पड़ते थे। कारण भारत की व्यवस्था सनातनी अर्थव्यवस्था थी और दुनिया के व्यापार व्यवस्था से कभी इतना ज्यादा जुड़ी नहीं थी कि उसका प्रभाव यहां भी आ जाए। यहां पहले से नगदी की एक समानांतर अर्थव्यवस्था थी।

माइक्रो इकॉनोमी के एक जाल से पूरा देश बंधा था जिसमें सब कमाते खाते थे। सबका पेट भरता था। कोई फैक्ट्री वाला कभी अपने बीच के चैनल को किनारे करके सीधे ग्राहक को माल बेचने की नहीं सोचता था। इससे फैक्ट्री से निकला तैयार माल सबका पोषण और आय का बंटवारा करते हुए अंतिम हाथों में पहुंचता था। ग्राहक को स्वार्थी बनाने की मुहिम नहीं थी और वह जनभागीदारी व्यवस्था से जुड़ा हुआ था। बचत की एक पारंपरिक व्यवस्था थी जिसे यह उपभोक्तावादी डिजिटल इकॉनोमी धीरे-धीरे कम करती जा रही है। जितना ज्यादा हम डिजिटल होते जा रहें हैं उतना ही हम ग्लोबल इकॉनोमी के अंग होते जाएंगे। ऐसे में ग्लोबल इकॉनोमी में आई किसी रुकावट से प्रभावित हुए बिना हम रह नहीं पाएंगे। इस कारण जब भी वैश्विक मंदी आएगी तो जो भी इकॉनोमी वैश्विक अर्थव्यवस्था से जुड़ी होगी, इससे अछूती रह नहीं सकती। जबकि ऐसी परिस्थिति में समानांतर इकॉनोमी बच जाती है।

समानांतर अर्थव्यवस्था का लगातार कम होना भी मंदी के प्रभाव को भारत में बढ़ा रहा है। देश अभी अपने आपको नोटबंदी के बाद समायोजित कर रहा था तभी उसे खुद को जीएसटी के हिसाब से भी समायोजित करना पड़ा। जब किसी भी सिस्टम को लगातार अपने आपको दो बार समायोजित करना पड़े तो रिकवरी में समय लगता ही है और अगर इसी वक्त किसी वायरस का अटैक हो जाए, मुख्य आपूर्तिकर्ता और ग्राहक में ही युद्ध छिड़ जाए तो सबका समय खराब हो जाता है। वही हुआ और भारत पर चौतरफा मार पड़ी। हालांकि भारत अभी भी लड़ रहा है, खड़ा हो जा रहा है क्योंकि हम अभी भी कृषि आधारित अर्थव्यवस्था हैं। पारंपरिक अर्थव्यवस्था अभी पूरी तरह से खत्म नहीं हुई है। हम पूरी दुनिया से कटने के बाद भी कई दशकों तक अपने पोषण का सामर्थ्य रखते हैं। यही कारण है कि 140 करोड़ खरीदारों की एक बड़ी संख्या के कारण दुनिया हमारी तरफ ही देखती है।

● **राजेश बोरकर**

नोटबंदी और जीएसटी ने बिगाड़ा खेल

नोटबंदी और जीएसटी ने भी अच्छे उद्देश्य से किए गए प्रयास के बाद भी अच्छा परिणाम नहीं दिया है। अर्थव्यवस्था को पटरी पर लाने के लिए ये दो ऐसे उपाय थे जिनका सकारात्मक असर होना चाहिए था लेकिन तभी हमारी किस्मत हमारे खिलाफ हो गई। लगातार दो ट्रीटमेंट के कारण हम सुस्त थे, हमारा इम्यून सिस्टम सुस्त था, इसी में कोरोना और रूस-यूक्रेन युद्ध ने समय और खराब कर दिया। यहां यह स्पष्ट करना चाहूंगा कि नोटबंदी और जीएसटी अच्छे कदम थे, ये बात अलग है कि इसके फायदे हम नहीं ले पा रहे हैं। मंदी का जो एक और कारण है वह ग्राहक व्यवहार में परिवर्तन तथा ई-कॉमर्स कंपनियों की गांव-कस्बों तक पहुंच। त्यौहारों या सामान्य दिनों में भी गांव-कस्बों के दुकानदारों की बिक्री कम होती जा रही है। कस्बों और कस्बों से जुड़े गांवों के लोग अब ऑनलाइन खरीददारी करने लगे हैं। कैश ऑन डिलीवरी विकल्प होने के कारण उनको पैसा तभी देना पड़ रहा है जब माल मिल रहा है। ऐसे में कस्बाई और ग्रामीण ग्राहक स्मार्ट मोबाइल के इस दौर में परंपरागत बाजार से दूर होता जा रहा है जिससे स्थानीय बाजार का टर्नओवर कम हो रहा है। अगर सरकार की ओएनडीसी योजना यूपीआई की तर्ज पर सब दुकानदारों तक जल्द से जल्द नहीं पहुंचाई गई तो सैकड़ों साल से भारतीय परंपरागत अर्थव्यवस्था में, जिसमें सामूहिक रूप से सब सुरक्षित रहते थे, ई-कॉमर्स कंपनियां बड़ा छेद कर देंगी। ओएनडीसी के माध्यम से सरकार बड़ी ई-कॉमर्स कंपनियों के लिए यह अनिवार्य कर दे कि वह किसी भी क्षेत्र में डिलीवरी शुरू करने से पहले वहां के स्थानीय दुकानदारों को अपना प्लेटफार्म दे और पंजीयन कराए और थर्ड पार्टी ऑनलाइन ऑफर से उन्हें सज्जित करे।

कुपोषण बनाम कुनीति

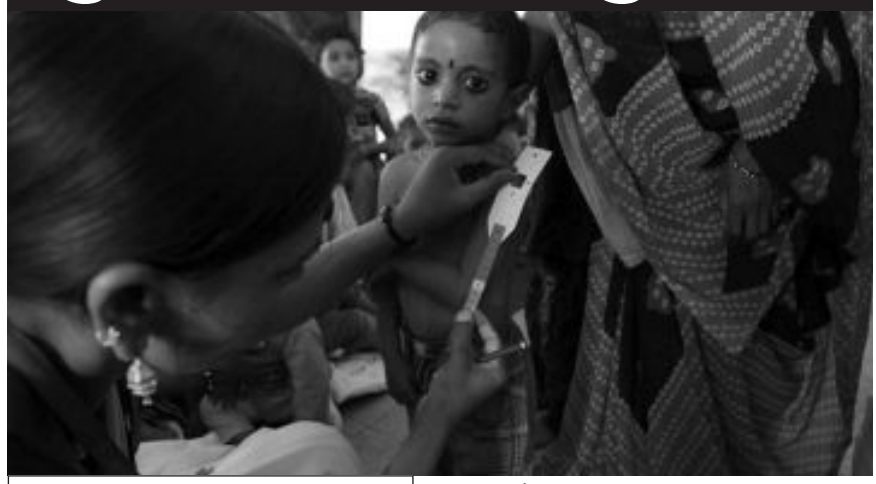

मप्र में बच्चों में एनीमिया में कमी की दर 0.1 प्रतिशत और गर्भवती महिलाओं में 0.3 प्रतिशत है। बच्चों में कुपोषण होने के दो कारण हो सकते हैं, पहला तो यह कि देश-समाज में गंभीर खाद्य असुरक्षा की स्थिति हो, उत्पादन न हो रहा हो और प्राकृतिक संसाधनों की कमी हो। दूसरा कारण यह हो सकता है कि शासन व्यवस्था नीति, नैतिकता और नियत के मानकों पर कमजोर हो। मप्र में निश्चित रूप से भोजन-पोषण के उत्पादन और उपलब्धता में कमी नहीं है। इस वक्त मप्र समग्रता में देश के सबसे ज्यादा भोजन उत्पादन करने वाले तीन राज्यों में शुमार होता है।

ऐसे में 35.7 प्रतिशत बच्चों का ठिगनापन से और 19 प्रतिशत बच्चों का अल्प पोषण से ग्रसित होना यही दर्शाता है कि शासन व्यवस्था ने आर्थिक-सामाजिक-राजनीतिक विकास के मानकों में बच्चों के कुपोषण को कोई खास महत्व नहीं दिया है। मप्र में 6 माह से 3 वर्ष तक के बच्चों और गर्भवती-धात्री महिलाओं को राज्य सरकार द्वारा स्थापित 7 पोषण आहार उत्पादन प्लांटों से हर हफ्ते पोषण आहार के पैकेट उपलब्ध करवाए जाते हैं। इसे टेक होम राशन कहा जाता है, जबकि 3 वर्ष से 6 वर्ष की उम्र के बच्चों को स्थानीय स्तर पर यानी गांव/बस्तियों में ही महिलाओं के स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से गरम पका हुआ पोषण आहार दिए जाने की व्यवस्था है। जमीनी अनुभव बताते हैं कि दोनों की व्यवस्थाओं में गंभीर उपेक्षा और गैर-जवाबदेहिता विराजमान है।

मप्र में 3 से 6 साल के बच्चों को गांवों में ही महिलाओं के स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से गरम पका हुआ पोषण प्रदान किया जाता है। इसके लिए गेहूं और चावल का आवंटन सार्वजनिक वितरण प्रणाली के माध्यम से खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति विभाग द्वारा किया जाता है, लेकिन कम्प्यूटरीकरण की व्यवस्था के विकास के कारण मार्च 22 से 38 लाख बच्चों के लिए आवंटित होने वाला अनाज चार महीने जारी ही नहीं हो पाया। बच्चों को गरम पका हुआ पोषण आहार प्रदान करने का काम ग्रामीण क्षेत्रों में 50 हजार और शहरी क्षेत्रों में 2076 स्वयं सहायता समूह कर रहे हैं। आज की स्थिति यह है कि जो महिलाएं भोजन पकाने का काम करती हैं, उन्हें दिए जाने वाला 2000 हजार रुपए का मानदेय 3-4 महीने तक जारी ही नहीं होता है। इन स्थितियों में जब अनुसूचित जाति-जनजाति की महिलाएं पोषण आहार उपलब्ध नहीं करा पाती हैं, तब उनके विरुद्ध संगठित दुष्प्रचार भी शासन व्यवस्था के माध्यम से ही कराया जाता है। इस पोषण आहार पकाने वाले समूहों को खाद्य सामग्री के लिए मिलने वाली राशि 3 से 6 महीने की देरी से पहुंचती है। जिस आंगनवाड़ी केंद्र की स्थिति का जिक्र हमने ऊपर किया है, वहां से स्वयं सहायता समूह के रसोइए को मार्च 2020 यानी कोविड-19 महामारी वाले महीने से मानदेय का भुगतान ही नहीं हुआ है। यह मत मान लीजिएगा कि ऐसे उदाहरण इक्का-दुक्का होंगे। ऐसा होना वास्तव में नीति ही है। मप्र के महिला एवं बाल विकास विभाग के अनुसार राज्य में पोषण आहार कार्यक्रम में 69.44 बच्चे और 13.66 लाख महिलाएं दर्ज हैं, जिन्हें राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम और उच्चतम न्यायालय के निर्देशों के मुताबिक वर्ष में 300 दिन पोषण आहार प्रदान किए जाने की व्यवस्था होनी चाहिए।

भारत सरकार ने मानकों के मुताबिक बच्चों के पोषण आहार के लिए 8 रुपए, महिलाओं के लिए 9.50 रुपए और अति गंभीर तीव्र कुपोषित बच्चों के लिए 12 रुपए प्रतिदिन के मान से आवंटन किया जाना चाहिए। अगर यह मानक वास्तव में लागू किया जाए तो मप्र में पोषण आहार के लिए 2253.87 करोड़ रुपए का आवंटन किया जाना चाहिए, लेकिन वर्ष 2021 में इसके लिए केवल 1450 करोड़ रुपए का ही आवंटन किया गया था। वर्ष 2022-23 में न्यूनतम आवश्यकता कार्यक्रम- विशेष पोषण आहार कार्यक्रम के लिए 1272.24 करोड़ रुपए का प्रावधान किया गया है। जब सरकार की मंशा ही कुपोषित है, तब बच्चे कुपोषण से मुक्त कैसे होंगे। उल्लेखनीय है कि अगर राज्य में उत्सवों, भीड़ जुटाने वाले कार्यक्रमों और महिला एवं बाल विकास विभाग के बजट से राजनीतिक कार्यक्रमों के आयोजनों का मोह त्यागा जा सके, तो पोषण आहार कार्यक्रम के लिए शेष एक हजार करोड़ रुपए जुटाए जा सकते हैं। वर्तमान बजट आवंटन से बच्चों और महिलाओं को 300 के स्थान पर केवल 187 दिन का ही पोषण आहार उपलब्ध करवाया जा सकता है।

● **बृजेश साहू**

आर्थिक विकास बनाम कुपोषण

रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया के प्रतिवेदन के अनुसार वर्ष 2005-06 में मप्र का राज्य सकल घरेलू उत्पाद प्रचलित मूल्य पर 1242 अरब रुपए था, जो वर्ष 2015-16 में लगभग चार गुना बढ़कर 5410 अरब रुपए और फिर वर्ष 2020-21 में साढ़े सात गुना बढ़कर 9175 अरब रुपए हो गया। राज्य की आर्थिक विकास दर लगभग 11.5 प्रतिशत रही है। खेती में अद्भुत चमत्कारिक विकास करने के लिए कई मर्तबा कृषि कर्मण पुरस्कार हासिल किया गया है, लेकिन ठीक इसी अवधि में बच्चों में कुपोषण की स्थिति क्या रही? जब आर्थिक विकास दर 11.5 प्रतिशत थी, तब वृद्धिबाधित (ठिगनापन) कुपोषण में केवल 1 प्रतिशत की दर से कमी हो रही थी। अल्प पोषण में केवल 1.1 प्रतिशत की दर से और कम वजन के बच्चों में 1.8 प्रतिशत की दर से कमी हो रही थी। इसका मतलब है कि आर्थिक विकास की नीतियों के स्वरूप और परिणामों का खाद्य असुरक्षा, आजीविका और बच्चों में कुपोषण के नजरिए से कभी भी कोई आंकलन नहीं किया गया। यह एक चिंतनीय स्थिति है कि मप्र में बच्चों में एनीमिया में कमी की दर 0.1 प्रतिशत और गर्भवती महिलाओं में 0.3 प्रतिशत है। ऐसे सूचकों के सामने होने के बाद भी मप्र आठ में चार पहर राजनीतिक उत्सव मनाता है और लोगों को अहसास करवाता है कि कुपोषण समाप्त हो गया है। कुपोषण एक ऐसी आपदा है, जिसमें अवसर, राजनीतिक लाभ और मुनाफा खोजने की प्रवृत्ति समाज और राज्य व्यवस्था के अनैतिक होने का प्रमाण देती है।

रीन्यूएबल एनर्जी उत्पादन में बढ़ेगा मप्र का दम...

ताप संयंत्रों से पर्यावरण पर पड़ रहे प्रतिकूल प्रभावों को देखते हुए राष्ट्रीय स्तर पर नवकरणीय ऊर्जा को प्राथमिकता दी जा रही है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के आत्मनिर्भर भारत मिशन के तहत देश में सौर ऊर्जा के क्षेत्र में नई संभावनाएं तलाशी जा रही हैं। इसी को देखते हुए देश के हृदय स्थल मप्र को सौर ऊर्जा के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाया जा रहा है। कोयले से बिजली बनाने में अग्रणी रहा मप्र अब मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान के कुशल नेतृत्व में सौर ऊर्जा के क्षेत्र में भी देश में अपनी नई पहचान बना रहा है और पर्यावरण के संरक्षण में अपनी बड़ी और महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। लेकिन ओवर ऑल रीन्यूएबल एनर्जी उत्पादन में मप्र का प्रदर्शन निराशाजनक है।

गौरतलब है कि बिजली की जरूरत को पूरी करने के लिए केंद्र सरकार रीन्यूएबल एनर्जी उत्पादन को बढ़ावा दे रही है। उत्पादन बढ़ाने को लेकर राजस्थान, गुजरात, कर्नाटक व तेलंगाना में उम्मीद से बेहतर काम हुआ है। वहीं, महाराष्ट्र, उप्र, मप्र और आंध्रप्रदेश का प्रदर्शन निराशाजनक है। मप्र की यही रफ्तार रही तो मप्र को रीन्यूएबल एनर्जी का लक्ष्य पाने के लिए 55 साल लग जाएंगे। बता दें कि भारत ने 2022 तक ऊर्जा के स्वच्छ स्रोतों से 175 गीगावाट बिजली उत्पादन क्षमता का लक्ष्य रखा है। अगस्त तक 116 गीगावाट क्षमता हासिल हो चुकी है। विश्लेषकों का कहना है कि 2030 का लक्ष्य पाने के लिए भारत को हर माह **ढाई गुना क्षमता बढ़ानी** होगी। फिलहाल सबसे ज्यादा बिजली कोयले से बनती है। ताप बिजली संयंत्रों से निकलने वाले धुएं से प्रदूषण बढ़ता है। कार्बन स्तर घटाने के लिए सरकार रीन्यूएबल एनर्जी की ओर कदम बढ़ा रही है।

भारत ने 2030 तक 450 गीगावाट न्यूएबल एनर्जी का लक्ष्य रखा है। ऐसे में अगले 8 साल में 334 गीगावाट क्षमता जोड़नी होगी। हर माह 3.7 गीगावाट क्षमता बढ़ानी होगी, जो अभी 1.4 गीगावाट है। अगस्त तक देश में जो 11.1 गीगावाट क्षमता बढ़ी है। इसमें 5 गीगावाट अकेले राजस्थान का है। पिछले साल दिसंबर में ही राजस्थान ने लक्ष्य हासिल कर लिया था। गुजरात ने मई में यह टारगेट पूरा किया। जानकारों का कहना है कि उप्र, मप्र, महाराष्ट्र और आंध्रप्रदेश को रीन्यूएबल एनर्जी को प्राथमिकता देनी चाहिए। यदि यही रफ्तार रही तो महाराष्ट्र 20 साल में लक्ष्य तक पहुंचेगा। उप्र को 80 साल, आंध्र प्रदेश को 44 साल और मप्र को 55 साल लगेंगे। केंद्रीय ऊर्जा मंत्रालय के आंकड़ों के अनुसार इस साल जनवरी-अगस्त के बीच 11.1 गीगावाट क्षमता के रीन्यूएबल एनर्जी प्लांट लगाए गए हैं। पिछले वर्ष की समान अवधि में यह वृद्धि 9.5 गीगावाट थी। क्षमता 17 प्रतिशत बढ़ी है। ज्यादा वृद्धि सोलर प्लांट में हुई है। इस साल 19.5 गीगावाट क्षमता के सोलर प्लांट लगाए गए हैं। रीन्यूएबल एनर्जी में सौर ऊर्जा की 89 प्रतिशत व पवन ऊर्जा की 10 प्रतिशत हिस्सेदारी है। छोटे जल बिजली संयंत्रों व बायो-एनर्जी प्लांट का योगदान एक फीसदी है।

मप्र में सौर ऊर्जा की 5 हजार मेगावाट की परियोजनाएं निर्माणाधीन हैं। प्रदेश की पहली रीवा सौर परियोजना के लिए गठित कंपनी रम्स द्वारा आगर, शाजापुर, नीमच, छतरपुर, ओंकारेश्वर तथा मुरैना में स्थापित होने वाली इन परियोजनाओं पर कार्य प्रारंभ किया है। आगर में 550 मेगावाट, शाजापुर में 450 मेगावाट, नीमच में 500 मेगावाट, छतरपुर में 1500 मेगावाट, ओंकारेश्वर फ्लोटिंग ओंकारेश्वर बांध स्थल पर 600 मेगावाट और मुरैना में 1400 मेगावाट सौर ऊर्जा उत्पादन के लिए सौर पार्कों की स्थापना की कार्रवाई चल रही है। प्रदेश में सोलर पंप के माध्यम से किसानों को सौर ऊर्जा का अधिकतम उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है। मुख्यमंत्री सोलर पंप योजना के अंतर्गत अब तक 14,250 किसानों के लिए सोलर पंप स्थापित किए जा चुके हैं। अगले तीन वर्षों में 2 लाख सोलर पंप लगाने का लक्ष्य है।

मप्र में स्वच्छ ऊर्जा की असीम संभावनाएं हैं। अक्षय ऊर्जा के तय लक्ष्यों को समय पर पूरा करने के लिए केंद्र और राज्य सरकार की संस्थाएं एकजुट होकर प्रयास कर रही हैं। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान का मानना है कि हमें इस धरती को बचाना है तो पर्यावरण को बचाना होगा। इसके लिए जहां वह हर दिन वृक्षारोपण करने पर जोर दे रहे हैं वहीं, प्रदेश में किसानों की मदद से सौर ऊर्जा उत्पादन बढ़ाने की दिशा में बड़ी कार्ययोजना तैयार कर रहे हैं। आत्मनिर्भर मप्र के अपने मिशन को पूर्ण करने के लिए उनके द्वारा 2023 तक 45,000 सोलर पंप किसानों तक पहुंचाने का लक्ष्य रखा गया है। मप्र स्वच्छ ऊर्जा की दिशा में तेजी से आगे बढ़ रहा है। सरकार और जनसहयोग से आने वाले दिनों में सौर ऊर्जा में मप्र देश का बड़ा केंद्र बनकर उभरेगा।

● **सुनील सिंह**

सौर ऊर्जा उत्पादन में मप्र आगे

गैर-नवीकरणीय ऊर्जा स्त्रोत हमारे जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। इनका उपयोग आमतौर पर परिवहन और बिजली बनाने के लिए किया जाता है। पेट्रोलियम डेरिवेटिव के सेवन से कार्बन डाइऑक्साइड का उत्सर्जन होता है जो ओजोन परत को प्रभावित करता है। पर्यावरणीय संतुलन के लिए ऊर्जा के नवीन और नवीकरणीय स्त्रोत को बढ़ावा देना अत्यंत आवश्यक है। मप्र सरकार इस दिशा में सराहनीय कार्य कर कर रही है। प्रदेश में पिछले 10 साल में नवकरणीय क्षमता में 11 गुना वृद्धि हुई है। औसतन हर साल सौर परियोजनाओं में 54 प्रतिशत और पवन परियोजनाओं में 23 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। प्रदेश में सौर ऊर्जा की बड़ी रीवा परियोजना पूर्ण क्षमता के साथ संचालित है। इसके अलावा ओंकारेश्वर में बन रहा फ्लोटिंग सौर योजना दुनिया का सबसे बड़ा सौर ऊर्जा संयंत्र होगा, जिसमें 600 मेगावाट बिजली उत्पादन क्षमता है। इसके अलावा आगर, शाजापुर, नीमच में अगले वर्ष से सौर ऊर्जा का उत्पादन शुरू कर दिया जाएगा। वहीं छतरपुर और मुरैना सौर परियोजना हायब्रिड और स्टोरेज के साथ विकसित की जाएंगी, जो वर्ष 2024 तक उत्पादन शुरू कर देंगी।

मप्र में बनेगा चीतों का दूसरा आवास

जल्द ही चीतों का देश में दूसरा आवास भी मप्र में बनने जा रहा है। इसके साथ ही प्रदेश टाइगर के साथ ही लेपर्ड स्टेट का दर्जा भी हासिल कर लेगा। दरअसल प्रदेश के ही श्योपुर जिले के कूनो पार्क में नामीबिया से लाकर आठ चीतों को बसाया गया है। अब इसके बाद दक्षिण अफ्रीका से भी चीता लाने की कवायद जारी है। यह चीता प्रदेश के ही वीरांगना दुर्गावती टाइगर रिजर्व में बसाने की योजना पर काम तेजी से किया जा रहा है। इसके लिए दो अभयारण्यों को एक-दूसरे में मर्ज करने की योजना बनाई गई है। इसमें सागर जिले में स्थित नौरादेही और नरसिंहपुर जिले में स्थित वीरांगना दुर्गावती वन्यप्राणी अभयारण्यों को मिलाकर वीरांगना दुर्गावती टाइगर रिजर्व बनाने की तैयारी है। प्रदेश सरकार के इस प्रस्ताव को मप्र राज्य वाइल्ड लाइफ बोर्ड की बैठक में रखा जाएगा। गौरतलब है कि केन-बेतवा लिंक परियोजना में पन्ना टाइगर रिजर्व का बड़ा हिस्सा जा रहा है। इसके बदले वीरांगना रानी दुर्गावती और नौरादेही अभयारण्य को मिलाकर टाइगर रिजर्व बनाने पर सहमति बनी है। इसके लिए केंद्रीय जल शक्ति विभाग द्वारा बजट दिया जा रहा है। इन दोनों ही अभयारण्यों के मर्ज होने से नए टाइगर रिजर्व का कुल क्षेत्र 2339 वर्ग किलोमीटर हो जाएगा। इसकी वजह से चीतों को रहवास के लिए अधिक जगह मिल सकेगी।

राष्ट्रीय बाघ परियोजना के सफल क्रियान्वयन के बाद नौरादेही अभयारण्य में बाघों का कुनबा बढ़ गया है और इनकी संख्या 9 हो गई है। लेकिन अभी तक नौरादेही अभयारण्य को टाइगर रिजर्व बनाए जाने की अनुमति नहीं मिली है। वन्य जीव प्रेमी और संस्थाएं नौरादेही अभयारण्य को टाइगर रिजर्व के मुफीद नहीं पाते। इन जानकारों का कहना है कि नौरादेही अभयारण्य में काफी संख्या में आबादी है और अगर यहां टाइगर रिजर्व बनाया जाता है तो टाइगर और आबादी दोनों के लिए खतरा पैदा होगा। हालांकि वन विभाग का कहना है कि अभयारण्य के अंदर मौजूद गांव के विस्थापन की प्रक्रिया लगातार जारी है और आज की स्थिति में करीब 750 वर्ग किमी क्षेत्रफल आबादी विहीन हो चुका है। विस्थापन की प्रक्रिया लगातार जारी रहने के कारण जल्द ही पूरा अभयारण्य आबादी विहीन हो जाएगा। प्रदेश के सबसे बड़े अभयारण्य का दर्जा नौरादेही के पास है। यह अभयारण्य सागर, दमोह और नरसिंहपुर जिलों में फैला है। इसका क्षेत्रफल 1197 वर्ग किमी है।

प्रदेश के सबसे बड़े अभयारण्य होने के साथ-साथ यह राष्ट्रीय स्तर पर भी काफी महत्वपूर्ण माना जाता है। यहां पर महज 3 सालों में बाघों की संख्या 9 पहुंच चुकी है। 1197 वर्ग किमी क्षेत्र में फैले नौरादेही और 24 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैले दमोह के रानी दुर्गावती अभयारण्य को मिलाकर टाइगर रिजर्व बनाने का प्रस्ताव जनवरी 2022 में राज्य सरकार को भेजा जा चुका है। यहां पर बाघिन राधा और बाघ किशन ने बाघों का कुनबा तेजी से बढ़ाया है। इनमें से कान्हा नेशनल पार्क से 2018 में बाघिन राधा को और बांधवगढ़ से बाघ किशन को नौरादेही अभयारण्य में छोड़ा गया था। मई 2019 में राधा ने तीन शावकों को जन्म दिया था, जिनमें दो मादा और एक नर है। वहीं नवंबर 2021 में राधा ने दो और शावकों को जन्म दिया, इसके बाद एक नया बाघ नौरादेही अभयारण्य में मेहमान के तौर पर डेरा जमाए हुए हैं। इस तरह से नौरादेही अभयारण्य में बाघों की कुल संख्या 10 तक पहुंच चुकी है।

नौरादेही अभयारण्य की मौजूदा स्थिति में 3 जिलों के 76 गांव आते हैं। इनमें से 56 गांव अभयारण्य और 20 गांव अभयारण्य के कोर एरिया में है। हालांकि विस्थापन की प्रक्रिया लगातार जारी है और मौजूदा स्थिति में **करीब 35 गांव** खाली कराए जा चुके हैं और बाकी बचे गांव में विस्थापन की प्रक्रिया चलाई जा रही है। कई गांव के लोग अभी भी अपना गांव और जमीन छोड़ने के लिए तैयार नहीं है। वहीं वन विभाग का कहना है कि हमारे पास अभयारण्य के क्षेत्रफल का दो तिहाई हिस्सा पूरी तरह से आबादी विहीन है।

मप्र में क्षेत्रफल के लिहाज से नौरादेही वन्य प्राणी अभयारण्य को मप्र शासन ने टाइगर रिजर्व का दर्जा दिलाने का निर्णय किया है। सागर वन वृत से इसके लिए प्रस्ताव बनाकर शासन को भेजा गया है। जल्द ही इस प्रस्ताव को तकनीकी जानकारी और विभागीय प्रक्रिया पूरी कर केंद्र सरकार को भेजा जाएगा। शासन ने यह निर्णय इस अभयारण्य को बाघों का प्राकृतिक आवास मानते हुए किया है। वर्तमान में यहां पर बाघ परिवार के 10 सदस्य स्वच्छंद विचरण कर रहे हैं। बीते चार साल में बाघों की संख्या दो से बढ़कर 10 हो गई है। इनमें शावक, वयस्क नर-मादा बाघ शामिल हैं। यह वन्य प्राणी अभयारण्य क्षेत्रफल में प्रदेश का सबसे बड़े अभयारण्य का दर्जा रखता है। जो सागर, दमोह और नरसिंहपुर जिले की सीमाओं को करीब 1197 वर्ग किलोमीटर में फैला है। नौरादेही अभयारण्य का वर्तमान में सागर, दमोह और नरसिंहपुर जिले की सीमा तक विस्तार है। इसका कुल क्षेत्रफल करीब 1197 वर्ग किलोमीटर बताया जाता है। टाइगर रिजर्व के लिए भेजे गए प्रस्ताव में इसका रकबा बढ़कर 1390 वर्ग किलोमीटर किया जाएगा। वन विभाग से मिली जानकारी के अनुसार प्रस्तावित वीरांगना दुर्गावती टाइगर रिजर्व के बफर जोन में सागर, दमोह और नरसिंहपुर जिले के करीब 81 गांव आएंगे। जाहिर है बाघों की संख्या और घनत्व बनने के साथ-साथ इन गांवों का विस्थापन भी किया जाना पड़ेगा। यह शासन स्तर के लिए फिलहाल कठिन काम है। इन गांवों में वन भूमि के अलावा निजी भूमि भी आएगी, जिसमें प्रति परिवार के अनुसार मुआवजा देना होगा।

● **जितेंद्र तिवारी**

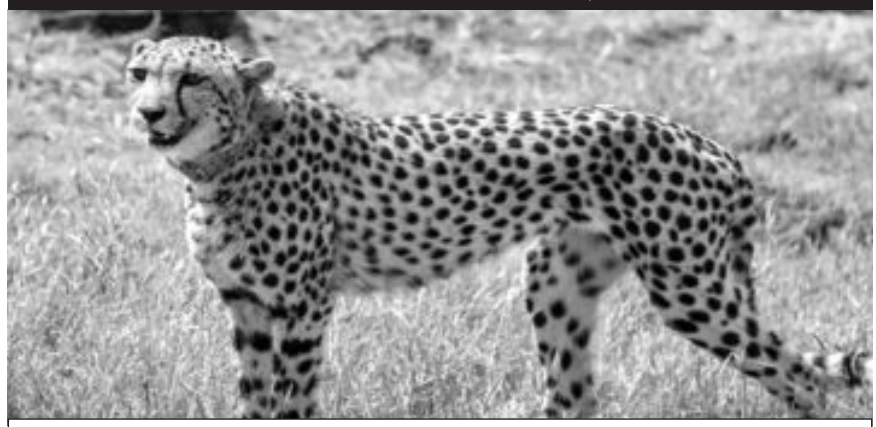

14 गांव के किसानों के खेत होंगे बाहर

धार-झाबुआ जिले में स्थित खरमोर अभ्यारण्य से 14 गांव की उस भूमि को बाहर किया जा रहा है। जिसमें किसान खेती करते हैं। यह उनकी निजी भूमि है पर खरमोर पक्षी के संरक्षण के लिए इसे मिलाकर अभ्यारण्य बना दिया गया था। करीब 20 साल से इन गांवों के लोग अपने खेतों को अभयारण्य से बाहर करने की मांग कर रहे हैं। क्योंकि अभ्यारण्य पर वन्यप्राणी संरक्षण नियम लागू हैं। इसलिए किसान इस क्षेत्र में भूमि बेच और खरीद नहीं पा रहे हैं। वन विभाग ने इसका परीक्षण कराया तो पाया कि इन गांवों से सटी अभ्यारण्य की भूमि में पिछले 10 साल से खरमोर नहीं देखे गए हैं। ऐसे ही हालात रतलाम के सैलाना अभ्यारण्य के हैं। 1296.541 हेक्टेयर क्षेत्र वाले इस अभ्यारण्य का 304.35 हेक्टेयर क्षेत्र बाहर किया जा रहा है। इसके बदले 490.39 हेक्टेयर क्षेत्र जोड़ा जा रहा है।

नारी शक्ति बुंदेलखंड को बनाएगी आत्मनिर्भर

आत्मनिर्भर भारत अभियान की तर्ज पर आत्मनिर्भर बुंदेलखंड अभियान चलाया जा रहा है। इसकी कमान नारी शक्ति के हाथ होगी। वीरांगना रानी लक्ष्मी बाई के बुंदेलखंड में क्षेत्र की महिलाएं आत्मनिर्भर बुंदेलखंड अभियान' चलाने में अग्रणी रहेंगी। बुंदेलखंड के चित्रकूट, बांदा, महोबा, हमीरपुर, जालौन, झांसी और ललितपुर जिलों में यह योजना चलेगी। बुंदेलखंड की 70 होम साइंस ग्रेजुएट्स को सीधा रोजगार मिल सकेगा। बुंदेलखंड के सातों जिलों की तहसील और ब्लॉक लेवल ट्रेनर गांव-गांव जाकर प्रशिक्षण देने का काम करेंगे। पूरे बुंदेलखंड में लगभग 70 ट्रेनर आगामी 2025 तक काम करेंगे। कोई भी होम साइंस ग्रेजुएट ट्रेनर बन सकता है। बशर्ते उसे खाद्य परीक्षण प्रशिक्षण देने का अनुभव प्राप्त हो। होटल मैनेजमेंट एंड केटरिंग से एमबीए अथवा बी.टेक इन फूड टेक्नोलोजी, होर्टीकल्चर से पोस्ट ग्रेजुएट और फूड प्रोसेसिंग के डिप्लोमा होल्डर भी ट्रेनर बन सकते हैं।

इंटरव्यू के आधार पर उनका चयन होगा। चयनित ट्रेनर को टीओटी सर्टिफाईड कराया जाएगा। केवल **सर्टिफाईड ट्रेनर** ही ब्लाक, पंचायत, स्वयं सहायता समूह, स्थानीय स्वयंसेवी संस्थाओं के माध्यम से ब्लाक के लगभग सभी गांव, कस्बों में बारी-बारी से चार दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित कराएंगे। इस प्रकार प्रत्येक ट्रेनर औसतन 7 ट्रेनिंग पूरी करा सकेंगे। योग्यता और अनुभव के आधार पर ट्रेनर 10 हजार से 20 हजार रुपए तक मासिक वेतन पा सकेगा। चार दिवसीय कार्यक्रम में 2 दिनों तक अचार, मुरब्बा, जैम-जैली, पापड़-बडियां आदि बनाना सिखाया जाता है। तीसरे दिन उद्यमिता विकास के बारे में चर्चा होती है जबकि चौथे दिन नजदीकी फूड प्रोसेसिंग यूनिट में प्रशिक्षणार्थियों को एक्सपोजर विजिट पर ले जाया जाता है। उपरोक्त कार्यक्रम जिला खाद्य प्रसंस्करण और नागरिक आपूर्ति अधिकारी की देखरेख में होता है।

बताते चलें कि बांदा कनवारा रोड निवासी नसीर अहमद सिद्दीकी देश की राजधानी नई दिल्ली के सरकारी विद्यालय में प्रधानाचार्य के पद पर कार्यरत हैं। उन्हें 2019 में दिल्ली राज्य सरकार की ओर से सर्वोत्तम अध्यापक का सम्मान मिला। बहुमुखी प्रतिभा के धनी नसीर को गत वर्ष आरजू वर्ड एफेयर्स अमेरिका ने पत्रकारिता क्षेत्र में अंतर्राष्ट्रीय सम्मान हासिल हो चुका है। कृषि विज्ञान से परास्नातक नसीर सिद्दीकी बुंदेलखंड के अलावा उप्र के 40 जिले- उत्तराखंड, असम, केरल, बिहार, महाराष्ट्र, राजस्थान, जम्मू-कश्मीर, पंजाब, झारखंड, उड़ीसा आदि के 300 जिलों में इस कार्यक्रम को चलाने की स्वयं सेवी रूप से पहल कर चुके हैं। सिद्दीकी के अनुसार आजादी के 75 सालों बाद पहली बार इतनी बड़ी तादाद में होम साइंस ग्रेजुएट्स की मांग आई है। देश में 7000 से अधिक जबकि बुंदेलखंड की 70 होम साइंस ग्रेजुएट्स को सीधा रोजगार मिल सकेगा। इस योजना के तहत कुल 35000 करोड़ रुपए का निवेश किया जाएगा। योजना के अंर्तगत लगभग 9 लाख लोगों को रोजगार मिलेगा। उन्होंने बताया कि इस योजना की शुरुआत 'खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्रालय' के द्वारा की गई है। ये स्कीम 'आत्मनिर्भर भारत अभियान' के एक भाग के तौर पर की गई है।

बुंदेलखंड मतलब मप्र और उप्र का सबसे सूखा इलाका, इधर बाकी देश की तुलना में बहुत कम बारिश होती है। पानी की कमी का सबसे ज्यादा असर घर की महिलाओं पर होता है, दूर जाकर पानी लाना पड़ता है। बुंदेलखंड की कुछ महिलाओं ने सबसे पहले अपने गांव में पानी की समस्या का समाधान करने का विचार किया। गांवों में ग्राम पंचायत, न्याय पंचायत के साथ पानी पंचायत भी बनाई गई। जगह-जगह बनाए गए तालाबों को गहरा किया गया सूखी नदियों की सफाई की गई और इस तरह बुंदेलखंड में लगभग 100 एकड़ एरिया में नए तालाब पानी से लबालब भर चुके हैं, वाटर लेवल ऊपर आ चुका है, चेक डैम पानी से भर गए, हैंडपंप फिर से पानी देने लगे और बुंदेलखंड में अच्छी खासी खेती होने लगी। सबसे ज्यादा जिंदगी महिलाओं की आसान हुई।

● **सिद्धार्थ पांडे**

बुंदेलखंड के डेयरी व्यवसाय में क्रांति ला दी

उप्र और मप्र में बुंदेलखंड क्षेत्र शुष्क भूमि, सूखे, गरीबी और पलायन के लिए जाना जाता है। पिछले तीन वर्षों से, बलिनी मिल्क प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड उप्र के बुंदेलखंड क्षेत्र के बांदा, चित्रकूट, हमीरपुर, जालौन, झांसी और ललितपुर में फैले 6 जिलों के 800 से अधिक गांवों में ग्रामीण महिलाओं के जीवन को बदल रही है। झांसी के रुंड करारी गांव निवासी 32 वर्षीय रानी राजपूत पिछले दो वर्षों से बलिनी दुग्ध उत्पादक कंपनी की सदस्य हैं, जिन्हें डेयरी व्यवसाय से लाभ हुआ है। राजपूत ने बताया, मेरे पास खेती के लिए कोई जमीन नहीं है, बलिनी मुझे हर महीने लगभग बारह हजार कमाने में मदद करती है। वह पिछले तीन वर्षों में अपनी बचत और दूध उत्पादन से अर्जित धन से खरीदी गई पांच मवेशियों की मालिक है। अब मैं अपने तीन बच्चों (दो लड़कियों और एक लड़के) को नियमित रूप से स्कूल भेजने में सक्षम हूं, रानी ने कहा। कुछ ऐसी ही कहानी है झांसी के पृथ्वीपुर नयाखेड़ा गांव की किसान मीना राजपूत की। मीना ने कहा- मैं अपने पति के साथ अपने तीन एकड़ खेत में काम करती हूं। बलिनी के सदस्य के रूप में, मैं अतिरिक्त दूध उत्पादन के साथ दो से तीन हजार अधिक कमा सकती हूं, मीना ने कहा। बलिनी मिल्क प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड की स्थापना राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (एनआरएलएम) और उप्र राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन (यूपी-एसआरएलएम) द्वारा एनडीडीबी डेयरी सर्विसेज (एनडीएस) की तकनीकी सहायता से वित्त पोषित एक परियोजना के तहत की गई थी। राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड (एनडीडीबी) उत्पादक-स्वामित्व वाले संगठनों को बढ़ावा देने, वित्त और समर्थन देने के लिए काम करता है। इसका उद्घाटन उप्र के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने दिसंबर 2019 में किया था। बलिनी उप्र की बुंदेलखंड क्षेत्र की ग्रामीण महिलाओं की एक कंपनी है जो महिलाओं के लिए रोजगार के अवसर पैदा करने के लिए दूध इकट्ठा करती हैं, संरक्षित करती और बेचती हैं।

आरक्षण की समीक्षा जरूरी है

जनवरी, 2019 में 103वें संविधान संशोधन में अनुच्छेद-15 और 16 में खण्ड (6) सम्मिलित करके आर्थिक रूप से कमजोर सवर्ण वर्ग के लिए 10 फीसदी आरक्षण का प्रावधान किया गया। इसकी संवैधानिक वैधता को सर्वोच्च न्यायालय में चुनौती दी गई है, जिस पर 13 सितंबर को पांच न्यायाधीशों की संवैधानिक पीठ सुनवाई करेगी। महात्मा गांधी 'यंग इंडिया' में लिखे गए अपने लेख 'जाति बनाम वर्ग' में लिखते हैं- 'जाति व्यवस्था वर्ग व्यवस्था से इसलिए बेहतर है कि जाति सामाजिक स्थायित्व के लिए सर्वोत्तम संभव समायोजन है।' हालांकि वर्तमान में ऐसा नहीं है। भारतीय समाज में जातिवाद का स्वरूप सदैव से विघटनकारी रहा है। वास्तव में जातिवाद मानव द्वारा मानव के उत्पीड़न का सबसे सुनियोजित षड्यंत्र है। भारतीय समाज में जातिवाद का इतिहास बड़ा वीभत्स रहा है। किंतु आज उस कड़वे अतीत का प्रयोग विभाजनकारी राजनीति को बढ़ावा देकर सत्ता हथियाने के लिए हो रहा है। दरअसल यह लोकतंत्र में ऐतिहासिक रूप से पिछड़ी, दमित, दलित जातियों की भागीदारी में वृद्धि का संवैधानिक मार्ग है।

आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग (ईडब्ल्यूएस) तबके को 10 फीसदी आरक्षण का मूल उद्देश्य प्रतिनिधित्व का सही निरूपण है, न कि आर्थिक समानता स्थापित करना। यह आरक्षण गरीबी उन्मूलन का कार्यक्रम नहीं है। ईडब्ल्यूएस के लिए आरक्षण शुरुआत से ही एक राजनीतिक एवं अनुचित निर्णय था। जिन जातियों को लक्ष्य करके यह लागू हुआ, उन्हें पहले से सरकारी सेवाओं में पर्याप्त प्रतिनिधित्व हासिल है। यह उम्मीद कि इससे आरक्षण का विरोध कम हो जाएगा, गलत साबित हुई। वास्तव में इससे आरक्षण की सुलग रही अंदरूनी आग और भड़की है, यहां तक कि आरक्षण को 100 फीसदी तक ले जाने की मांग शुरू हो गई। जिसको सवर्ण, पिछड़ी और अनुसूचित जाति-जनजातियों में जनसंख्या के प्रतिशत के आधार पर विभाजित किया गया हो।

भारत में राजनीतिक लाभ के लिए संविधान की अवहेलना का इतिहास रहा है। मंडल मामले में सर्वोच्च न्यायालय ने पिछड़ों के 27 फीसदी आरक्षण को लागू रखते हुए निर्णय दिया था कि सकल आरक्षण 50 फीसदी से अधिक नहीं होगा (इंदिरा साहनी बनाम भारत संघ, 1992)। किंतु तमिलनाडु में आरक्षण को 69 फीसदी किए जाने संबंधी कानून को संविधान की नौवीं अनुसूची में शामिल कर न्यायिक समीक्षा के अधिकार से दूर रखा गया। इस प्रक्रिया को सन् 2016 में केंद्र सरकार ने आगे बढ़ाते हुआ ईडब्ल्यूएस आरक्षण लागू कर दिया।

देश में मनोनुकूल न्यायिक निर्णय की मांग की एक नई प्रथा स्थापित हो चुकी है। उदाहरण स्वरूप, सर्वोच्च न्यायालय ने जब मंडल कमीशन के आधार पर पिछड़ा वर्ग के आरक्षण को स्वीकार किया, तब उसे लोकतंत्र का रक्षक कहा गया। किंतु वही न्यायालय जब हरिजन एक्ट के दुरुपयोग की समीक्षा कर उसमें सुधार करना चाहता है, तब यही प्रशंसक वर्ग संख्या बल के आधार पर आगजनी, तोड़-फोड़, उपद्रव के बलबूते सरकार पर दबाव बनाकर न्यायालय के निर्णय को संवैधानिक संशोधन द्वारा अस्वीकृत करा देता है। हरिजन एक्ट में सुधार के विरोध में यह उचित तर्क है कि निर्णय अपवादों के आधार पर नहीं किया जाना चाहिए। परंतु प्रताड़ितों की सुध भी ली जानी चाहिए और प्रताड़कों को दंडित किया जाना चाहिए। लेकिन आरक्षण के नाम पर हिंसात्मक आंदोलन एक परिपाटी बन चुका है। पिछले कुछ वर्षों में गुर्जर, जाट, मराठा और पाटीदार आदि जातियों ने विध्वंसक आंदोलनों द्वारा आम जनता को आतंकित करने के साथ-साथ सरकार व प्रशासन को मजबूर कर अपनी मांगें मनवाने की कोशिश की।

भारतीय समाज सम्भवतः दुनिया का सबसे विचित्र समाज है, जहां जातिगत नेतृत्व निरंतर स्वयं को सर्वाधिक पिछड़ा और दलित बनाए रखने और सरकार से अपनी मांगें मनवाने की जिद पर अड़े हैं। संविधान सभा का विचार था कि समाज में समानता आने पर धीरे-धीरे इस व्यवस्था को समाप्त कर दिया जाएगा। लेकिन राजनीति की कलुषित दृष्टि ने इसे स्थायी विघटनकारी स्वरूप में ढाल दिया है। अब यह समझना कठिन है कि आरक्षण का संघर्ष कहां जाकर रुकेगा? सामाजिक संघर्ष के नाम पर जातिगत गोलबंदी करने वाले लालू यादव को अपने बेटों से अधिक योग्य कोई दलित या पिछड़े वर्ग का नेता पूरे बिहार में नहीं मिला। मुलायम सिंह यादव अखिलेश यादव के परे कुछ नहीं देख पाए। संजय निषाद की निषाद पार्टी, ओमप्रकाश राजभर की पार्टी सुभासपा, सोनेलाल पटेल की पार्टी अपना दल, रामविलास पासवान की लोजपा, सभी की यही स्थिति है। पिछड़ावाद एवं सामाजिक असमानता के भावुक नारों के बीच इन्हें सत्ता सुख चाहिए।

● **अक्स ब्यूरो**

सभी को आरक्षण की चाशनी पसंद

जब सभी को आरक्षण की चाशनी पसंद है, तो फिर आरक्षण की उपयोगिता साबित करने के लिए तथाकथित सवर्णों को कोसना अनुचित ही है। दुनिया का ऐसा कौन-सा दंडविधान है, जो पूर्वजों की गलतियों के लिए वर्तमान पीढ़ी को दंडित करने को न्यायोचित ठहराता हो? आरक्षण के दावेदारों का यह तर्क कि हमारे पूर्वजों पर सवर्णों ने अत्याचार किए, बिल्कुल सही है। लेकिन वर्तमान में यह संभव नहीं है। किसी भी समाज में कुछ अपराधी होना अलग बात है, उससे शायद ही कोई समाज अछूता हो। फिर भी तथाकथित सवर्ण वर्ग अपने पूर्वजों के अपराधों के प्रायश्चित स्वरूप स्वतंत्रता के सात दशकों से भी अधिक समय से इस व्यवस्था को स्वीकार कर रहा है। रही सामाजिक छुआछूत की बात, तो तथाकथित पिछड़ा वर्ग हो या दलित वर्ग, सभी जातियों में यह विकृति विद्यमान है। कई जगह तो एक ही वर्ग में जातिगत भेदभाव के चलते विवाह संबंध तो दूर, खानपान तक वर्जित है। फिर इस अनुचित परम्परा के लिए अकेले तथाकथित सवर्ण जातियों को ही क्यों दोषी ठहराया जाए? रही बात पिछड़ेपन की, तो दलित और पिछड़े वर्ग के सरकारी सेवाओं में नियुक्त लोग पिछड़ा-दलितवाद के नारे के साथ आरक्षण की मलाई खा रहे हैं। वास्तव में दलित एवं पिछड़ी जातियों में पिछले 70 दशकों में उभर आया एक सम्भ्रांत वर्ग स्वयं अपनी जाति के लोगों का शत्रु बना बैठा है। यथार्थ यही है कि जो जातियां आरक्षण के लाभ से जितना अधिक प्रतिनिधित्व हासिल कर चुकी हैं, वही सबसे अधिक आरक्षण बचाओ-आरक्षण बढ़ाओ का शोर मचा रही हैं।

मिशन 2022, 23 और 24

राजनीति का हॉट स्पॉट बना मध्य प्रदेश

विधानसभा और लोकसभा चुनाव के लिए पार्टियों ने मप्र को बनाया केंद्र

मोदी, शाह, राहुल, केजरीवाल वाया मप्र अन्य राज्यों को साधने में जुटे

हिमाचल प्रदेश के विधानसभा चुनाव की घोषणा के साथ ही सभी राजनीतिक पार्टियां चुनावी मोड में आ गई हैं। भाजपा और कांग्रेस के साथ सभी पार्टियां मिशन 2022, मिशन 2023 और मिशन 2024 की तैयारी में जुट गई हैं। इसके लिए प्रमुख राजनीतिक पार्टियों ने मप्र को अपना केंद्र बनाना शुरू कर दिया है। इसलिए मप्र इन दिनों देश की राजनीति का हॉट स्पॉट बना हुआ है। हर पार्टी का प्रमुख इन दिनों मप्र से अपने चुनावी मिशन का आगाज कर रहा है।

● राजेंद्र आगाल

देश इन दिनों चुनावी मोड में है। हालांकि इस साल मात्र 2 राज्यों- हिमाचल प्रदेश और गुजरात में विधानसभा के चुनाव होने हैं, लेकिन इसके साथ ही अगले 2 साल यानी 2023 और 2024 में चुनावी घमासान चरम पर रहेगा। 2023 में मप्र सहित 9 राज्यों में विधानसभा चुनाव होने जा रहे हैं। वहीं 2024 में लोकसभा के चुनाव होने वाले हैं। सभी पार्टियां अभी से ही विधानसभा चुनाव की तैयारियों में जुट गई हैं। सभी पार्टियों का केंद्र बिंदु मप्र बना हुआ है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह, कांग्रेस नेता राहुल गांधी, प्रियंका गांधी, आम आदमी पार्टी के संयोजक अरविंद केजरीवाल वाया मप्र अन्य राज्यों को साधने में जुट गए हैं। इस कारण मप्र के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान और कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष कमलनाथ भी अभी से मिशन मोड में आ गए हैं। सभी पार्टी और नेता मतदाताओं को साधने के लिए अभियान में जुट गए हैं।

भाजपा-कांग्रेस की राह आसान नहीं

चुनाव आयोग ने हिमाचल प्रदेश के चुनाव की घोषणा कर दी है। वहीं गुजरात के चुनाव की घोषणा होना बाकी है। इसी साल 5 राज्यों उप्र, उत्तराखंड, पंजाब, मणिपुर और गोवा में विधानसभा के चुनाव हुए थे। भाजपा को उप्र, उत्तराखंड, मणिपुर और गोवा विधानसभा चुनावों में जीत मिली थी। वहीं पंजाब में अरविंद केजरीवाल के नेतृत्व वाली आम आदमी पार्टी ने ऐतिहासिक जीत दर्ज करते हुए सरकार बनाई। यहां इससे पहले कांग्रेस की सरकार थी। ऐसे में आम आदमी पार्टी ने भाजपा और कांग्रेस के साथ ही अन्य पार्टियों के सामने परेशानी खड़ी कर दी है। आम आदमी पार्टी ने पंजाब फतह के बाद अपना पूरा फोकस हिमाचल प्रदेश और गुजरात में कर दिया है। गुजरात में पार्टी भाजपा को कड़ी टक्कर दे रही है। इससे एक बात तो तय है कि भाजपा और कांग्रेस दोनों के लिए आगामी विधानसभा चुनाव आसान नहीं है। हिमाचल प्रदेश को लेकर भाजपा का शीर्ष नेतृत्व चिंतित है। भाजपा के चिंतित होने के दो कारण प्रमुख हैं। एक, 1985 के बाद हिमाचल प्रदेश की जनता ने लगातार दो बार किसी भी सरकार को राज करने का मौका नहीं दिया है। राज्य में हर विधानसभा चुनाव के बाद सत्ता परिवर्तन हुआ है। भाजपा इस मिथक को तोड़ना चाहती है, वहीं कांग्रेस इस मिथक के दम पर सत्ता प्राप्ति को लेकर उत्साहित है। गुजरात चुनाव को लेकर जहां प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृहमंत्री अमित शाह की प्रतिष्ठा दांव पर है, वहीं हिमाचल को लेकर भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा की प्रतिष्ठा दांव पर है, क्योंकि यह भाजपा अध्यक्ष का गृह प्रदेश है। भाजपा ने अनेक राज्यों के मुख्यमंत्री बदल डाले लेकिन हिमाचल प्रदेश के जयराम ठाकुर अपनी कुर्सी बचाने में सफल रहे। हालांकि पूर्व मुख्यमंत्री प्रेम कुमार धूमल और शांता कुमार गुट ने पूरी कोशिश की थी कि जयराम ठाकुर की जगह किसी और को मुख्यमंत्री बना दिया जाए।

हिमाचल प्रदेश भाजपा अन्य प्रदेशों की तरह मोदी के प्रति मतदाताओं के लगाव और भरोसे के कारण दूसरी बार सरकार बनाने को लेकर आशान्वित है। मोदी भी इस बात को समझ रहे हैं कि गुजरात के साथ-साथ हिमाचल प्रदेश की नैया भी उन्हें पार लगानी है। इस कारण मोदी 5 अक्टूबर को कुल्लू के मशहूर दशहरा मेले के लिए कुल्लू में थे। पहली बार किसी प्रधानमंत्री ने इस समारोह में शिरकत की। भाजपा का मानना है कि मोदी के इस प्रवास से राज्य में बहुसंख्यक मतदाताओं का साथ भाजपा को मिलना तय है। वहीं आतंरिक खींचतान की शिकार रही भाजपा को सत्ता से बेदखल करने के लिए कांग्रेस एकजुट होने की बजाय खुद ही गुटबाजी में उलझी हुई है। कांग्रेस के लिए तगड़ा झटका तब लगा जब राज्य इकाई की संचालन समिति की अध्यक्षता करने वाले पूर्व केंद्रीय मंत्री आनंद शर्मा ने पार्टी की ओर से निरंतर उपेक्षा और अपमान का आरोप लगाते हुए 21 अगस्त को विरोध में वह पद ही छोड़ दिया। इसके अलावा कुछ दिन पूर्व हिमाचल कांग्रेस के कार्यकारी अध्यक्ष हर्ष महाजन ने भाजपा का दामन थाम लिया है। उनके पहले पूर्व कार्यकारी अध्यक्ष और विधायक पवन काजल तथा नालागढ़ से विधायक लखविंदर राणा भी भाजपा का दामन थाम चुके हैं। इसके चलते कांग्रेस के हिमाचल प्रदेश प्रभारी और अखिल भारतीय कांग्रेस समिति के सचिव राजीव शुक्ला को प्रदेश में एकजुटता बनाए रखने के लिए अधिकांश समय शिमला में बिताना पड़ रहा है। भाजपा और कांग्रेस के प्रदर्शन की बात करें तो दोनों दलों का प्रदर्शन पिछले 5 चुनाव में कुछ इस प्रकार रहा है। 2003 में भाजपा ने 16, 2007 में 41, 2012 में 26 और 2017 में 44 सीटें जीती थीं। वहीं कांग्रेस ने 2003 में 43 सीटें, 2007 में 23 सीटें, 2012 के चुनाव में 36 सीटें और 2017 के चुनाव में 21 सीटें जीती थीं। वोट प्रतिशत की बात करें तो भाजपा को 2003 के चुनाव में 35 प्रतिशत, 2007 के चुनाव में 44 प्रतिशत, 2012 के चुनाव में 36 प्रतिशत और 2017 के चुनाव में 49 प्रतिशत वोट मिले थे। कांग्रेस को 2003 के चुनाव में 41 प्रतिशत, 2007 में 39 प्रतिशत, 2012 में 43 प्रतिशत और 2017 में 42 प्रतिशत मत मिले थे। साल 2017 में कांग्रेस के वोट में महज 1.1 फीसद की गिरावट आई थी। इन सबके बीच, मुख्यमंत्री ठाकुर को युवाओं में नौकरी को लेकर नाराजगी, जीएसटी और आयातित सेबों की डंपिग से सेब बगान मालिकों में रोष और पुरानी पेंशन योजना वापस लाने के लिए राज्य कर्मचारियों के संघर्ष और **नाराजगी** का भी सामना करना पड़ रहा है। कोविड के बाद से राज्य के सकल घरेलू उत्पाद में 7 फीसदी का योगदान करने वाले पर्यटन उद्योग की टूटी कमर से इस व्यवसाय से जुड़े लोगों में भी सरकार को लेकर नाराजगी है। जयराम ठाकुर को इन सबसे भी निपटना होगा। इन सबके बाद भी ठाकुर के पक्ष में जो बात जाती है, उनमें उनकी स्वच्छ छवि, सामाजिक क्षेत्र में योजनाओं को लागू करना, स्वास्थ्य और शिक्षा के क्षेत्र में बेहतर सुविधा उपलब्ध करने के

मोदी-शाह और संघ ने मप्र में बढ़ाई सक्रियता

मप्र में भाजपा की सरकार है। मौजूद वक्त में यहां शिवराज सिंह चौहान मुख्यमंत्री हैं। विधानसभा की यहां 230 सीटें हैं। अगले साल नवंबर 2023 में यहां विधानसभा का कार्यकाल खत्म हो रहा है। यहां नवंबर से पहले चुनाव कराए जाने की संभावना है। सभी पार्टियां अपनी-अपनी तैयारियों में जुट गई है। दिसंबर 2018 के विधानसभा चुनाव में मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान भाजपा को सत्ता के दरवाजे तक पहुंचाने में असफल हो गए थे। भाजपा कुछ सीटों से कांग्रेस से पीछे रह गई थी। जिसके चलते 17 दिसंबर 2018 को मप्र में कमलनाथ के नेतृत्व में कांग्रेस की सरकार बन गई थी। हालांकि सवा साल के बाद ही भाजपा ने सियासी जोड़ घटाव के जरिए कमलनाथ सरकार गिरा दी। इसके बाद एक बार फिर शिवराज सिंह चौहान चौथी बार प्रदेश में मुख्यमंत्री की कुर्सी पर बैठे। भाजपा इस राज्य को खोना नहीं चाहेगी तो वहीं कांग्रेस भी सत्ता पाने के लिए अपनी सियासी जमीन को और मजबूत करने में अभी से जुटी है। वहीं भाजपा को सत्ता में बरकरार रखने के लिए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के साथ ही केंद्रीय नेतृत्व भी जुट गया है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृहमंत्री अमित शाह ने मप्र में सक्रियता बढ़ा दी है। ये दोनों नेता लगातार प्रदेश का दौरा कर रहे हैं। हर दौरे में प्रदेश के किसी न किसी वर्ग को साधने की कवायद की जा रही है। दरअसल, केंद्रीय नेतृत्व की सक्रियता की वजह यह है कि वह जानता है कि राज्यों में पार्टी की सरकार बनने पर ही 2024 में वे केंद्र में तीसरी बार सरकार बना सकते हैं। इसलिए इनका फोकस मप्र पर है।

अलावा हाटी जैसे समुदायों को अनुसूचित जनजाति की सूची में शामिल करना रहा है। बहरहाल, हिमाचल प्रदेश का चुनाव इस बार किसी के लिए आसान नहीं रहने वाला है। हिमाचल प्रदेश में 1985 के बाद से सत्ता परिवर्तन की परंपरा है। हर 5 साल सत्ता में कांग्रेस और भाजपा को बारी-बारी से सत्ता मिली है। इस मिथक से कांग्रेस को सत्ता मिलने की उम्मीद है और भाजपा इस मिथक को तोड़ने की हरसंभव कोशिश कर रही है।

आप बिगाड़ेगी गणित

इस बार का गुजरात चुनाव काफी मायनों में हर पार्टी के लिए महत्वपूर्ण है। क्योंकि यहां आप भाजपा के वोट बैंक में सेंध लगा चुकी है। गुजरात में हर विधानसभा और लोकसभा चुनावों में पटेल फैक्टर को काफी **तवज्जो** दी जाती है। तमाम बड़े और छोटे दल इस समाज को अपनी तरफ खींचने की हर कोशिश करते हैं। इस बार भी भाजपा और आम आदमी पार्टी इसी कोशिश में जुटी हैं। ये तैयारी अभी की नहीं, बल्कि कई महीने पहले ही शुरू कर दी गई थी। अब पहले गुजरात में पटेल समुदाय की भागीदारी के कुछ आंकड़े आपको दिखाते हैं। गुजरात में पटेलों की आबादी करीब डेढ़ करोड़ यानी कुल आबादी का करीब 15 फीसदी है। इस आबादी के आंकड़े को अगर सीटों में बदलकर देखें तो गुजरात की कुल 182 सीटों में से 70 सीटों पर पाटीदार समाज का प्रभाव है।

जहां भाजपा साल 2017 की जीत को दोहराते हुए दोबारा सत्ता में काबिज होना चाहेगी तो वहीं कांग्रेस पिछली हार का दर्द भुलाकर जीत की इबारत लिखने का ख्वाब देख रही है। वहीं आम आदमी पार्टी की दस्तक से भी चुनाव इस बार दिलचस्प रहेगा। साल 2017 में गुजरात विधानसभा में दो चरणों में चुनाव हुए थे। पहले चरण के लिए 9 दिसंबर, दूसरे चरण के लिए 14 दिसंबर को वोट डाले गए थे। 18 दिसंबर को नतीजों की घोषणा हुई थी। गुजरात में दो चरणों में करीब 64 फीसदी लोगों ने अपने मत का प्रयोग किया था। गुजरात विधानसभा में कुल 182 सीटे हैं। बहुमत हासिल करने के लिए 92 सीटें जीतनी होती हैं। साल 2017 में पहले चरण में 89 सीटों पर वोट डाले गए थे, जबकि दूसरे चरण में 93 सीटों पर वोटिंग हुई थी। 2017 में गुजरात में भाजपा ने बहुमत का आंकड़ा पार कर जीत दर्ज की थी। बता दें कि गुजरात विधानसभा की कुल 182 सीटों में भाजपा ने 99 सीटों पर जीत दर्ज की थी, कांग्रेस को 77 सीटों पर जीत मिली थी। वहीं अन्य के खाते में 6 सीटें गई थीं। तत्कालीन मुख्यमंत्री विजय रूपाणी राजकोट पश्चिम से चुनाव जीते थे। उन्होंने 25 हजार वोटों से ज्यादा जीत दर्ज की थी। वहीं साल 2017 के चुनाव में कांग्रेस के दिग्गज नेता तथा गुजरात के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष अर्जुन मोडवाडिया पोरबंदर से चुनाव हार गए थे। भाजपा के बाबूभाई बोखाड़िया ने उन्हें 1900 वोटों से पटकनी दी थी। 2017 में भाजपा की तरफ से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और कांग्रेस की ओर से राहुल गांधी ने जोरदार प्रचार किया था। साल 2017 के चुनाव में गुजरात के 2.97 करोड़ लोगों ने अपने मत का प्रयोग किया था। बता दें कि भाजपा पिछले 22 सालों से गुजरात की सत्ता में काबिज है। वहीं साल 2012 विधानसभा चुनाव में भाजपा को 115 और कांग्रेस को 61 सीटें हासिल हुई थीं।

क्या केजरीवाल गुजरात में मोदी का खेल बिगाड़ देंगे?

देश की राजनीति में इस समय यह सवाल चर्चा में है कि क्या केजरीवाल गुजरात में मोदी का खेल बिगाड़ देंगे? यह सवाल इसलिए बड़ा है, क्योंकि मोदी अगर गुजरात हार जाते हैं, तो देश पर शासन का उनका नैतिक बल ही टूट जाएगा। पंजाब विधानसभा चुनाव नतीजों के बाद यह सवाल हास्यास्पद नहीं है। पंजाब में आम आदमी पार्टी ने सरकार बनाकर अपने बारे में धारणा बदली है। यह कहना ठीक नहीं होगा कि आम आदमी पार्टी चुनावों की मार्केटिंग अच्छी कर लेती है, लेकिन जमीन पर कहीं नहीं है। पंजाब ने यह धारणा भी तोड़ी है कि आम आदमी पार्टी सिर्फ शहरी वोटरों को प्रभावित करती है। उत्तराखंड और गोवा दोनों राज्यों में ज्यादातर सीटें शहरी थीं, दोनों राज्यों में आम आदमी पार्टी की दाल नहीं गली। उत्तराखंड में उसे सिर्फ 3 प्रतिशत वोट मिले और सीट एक भी नहीं मिली। उधर गोवा में उसे सिर्फ 2 सीटें और 6 प्रतिशत वोट मिले। पंजाब की ज्यादा सीटें ग्रामीण हैं, पंजाब की 117 में से 77 सीटें ग्रामीण हैं इसलिए आम आदमी पार्टी ने शहरी वोटरों को प्रभावित करने वाली धारणा भी तोड़ी है। आम आदमी पार्टी गुजरात के चुनाव को पंजाब की तरह लड़ रही है। पंजाब की तरह गुजरात में भी ग्रामीण सीटें ज्यादा हैं। 182 में से 143 सीटें ग्रामीण हैं। गुजरात में शहरी सीटें सिर्फ 39 हैं और पिछली बार कड़े मुकाबले में भी भाजपा 39 में से 35 शहरी सीटें जीतीं थी। इसका मतलब साफ है कि भाजपा का शहरी किला ज्यादा मजबूत है, जबकि 143 ग्रामीण सीटों में से सिर्फ 64 सीटें ही जीत पाई थी। किसान और पाटीदार आंदोलन के कारण गुजरात के सौराष्ट्र के कुछ जिलों में भाजपा का सफाया हो गया था। विशेषकर अमरेली और गीर सोमनाथ में, जहां वह कांग्रेस से सभी सीटों पर हार गई थी। लेकिन अब स्थिति बदली है, पाटीदार आंदोलन के अगुआ हार्दिक पटेल भाजपा में शामिल हो चुके हैं।

साफ होगी लोकसभा की तस्वीर

हिमाचल प्रदेश और गुजरात के साथ ही 2023 में होने वाले 9 राज्यों के विधानसभा चुनाव से लोकसभा चुनाव की तस्वीर तकरीबन साफ हो जाएगी। साल 2023 में देश के जिन राज्यों में चुनाव होने हैं, उनमें मप्र, राजस्थान, छत्तीसगढ़, कर्नाटक, तेलंगाना, त्रिपुरा, मेघालय, नागालैंड और मिजोरम शामिल है। इन राज्यों में पार्टियों की जीत हार से आगामी 2024 लोकसभा चुनाव को लेकर जनता के मूड का पता चलेगा। हालांकि विधानसभा चुनावों के नतीजों से लोकसभा चुनाव पर असर पड़े ये कोई जरूरी नहीं है।

मप्र में भाजपा की सरकार है। मौजूदा वक्त में यहां शिवराज सिंह चौहान मुख्यमंत्री हैं। विधानसभा की यहां 230 सीटें हैं। अगले साल नवंबर 2023 में यहां विधानसभा का कार्यकाल खत्म हो रहा है। यहां नवंबर से पहले चुनाव कराए जाने की संभावना है। सभी पार्टियां अपनी-अपनी तैयारियों में जुट गई हैं। राजस्थान में भी विधानसभा चुनाव साल 2023 में होने हैं। यहां फिलहाल कांग्रेस की सरकार है और अशोक गहलोत प्रदेश के मुख्यमंत्री हैं। राजस्थान विधानसभा में 200 सीटें हैं। राजस्थान विधानसभा का कार्यकाल दिसंबर 2023 में खत्म होने जा रहा है। यानी दिसंबर 2023 से पहले यहां चुनाव कराए जा सकते हैं। हमेशा की तरह इस बार भी कांग्रेस और भाजपा में सीधी टक्कर

होने की संभावना है। पिछले दो दशक से राजस्थान भाजपा में वसुंधरा का दबदबा माना जाता रहा है, लेकिन अब ऐसा माना जा रहा है कि पार्टी राजस्थान में नया नेतृत्व तलाश कर रही है। दिसंबर 2018 के विधानसभा चुनाव में वसुंधरा राजे के नेतृत्व में यहां भाजपा को हार का सामना करना पड़ा था। भाजपा को 2023 में यहां सत्ता में वापसी करने की उम्मीद है, तो वहीं मुख्यमंत्री अशोक गहलोत चाहेंगे कि यहां कांग्रेस की सरकार बरकरार रहे।

छत्तीसगढ़ में भी अगले साल यानी 2023 में विधानसभा के चुनाव होने हैं। मौजूदा वक्त में यहां अभी कांग्रेस की सरकार है। यहां भूपेश बघेल मुख्यमंत्री की कुर्सी संभाल रहे हैं। छत्तीसगढ़ में विधानसभा की कुल 90 सीटें हैं। छत्तीसगढ़ विधानसभा का कार्यकाल नवंबर 2023 में खत्म हो रहा है। यहां नवंबर से पहले चुनाव होने की संभावना है। भाजपा और कांग्रेस अभी से ही अपनी तैयारियों में जुट गई है। बताया जा रहा है कि इस बार भाजपा यहां बिना किसी मुख्यमंत्री चेहरे के ही चुनाव लड़ेगी। अटकलें हैं कि यहां मोदी के नेतृत्व में चुनाव लड़ा जाएगा और जीत हासिल होने के बाद चेहरा तय किया जाएगा। वहीं कांग्रेस का मानना है कि 15 साल शासन के बाद छत्तीसगढ़ में भाजपा की स्थिति खराब है और भूपेश बघेल का मुकाबला करने के लिए भाजपा के पास कोई नेता ही नहीं है। कर्नाटक में भी अगले साल यानी 2023 में चुनावी रण है। मौजूदा समय में यहां भाजपा की सरकार है। बसवराज बोम्मई प्रदेश के मुख्यमंत्री हैं। कर्नाटक विधानसभा का कार्यकाल मई 2023 में खत्म होने जा रहा है। और उससे पहले चुनाव कराए जाने की संभावना है। प्रदेश में भाजपा, कांग्रेस और **जनता दल सेक्युलर** ने अपनी तैयारियां तेज कर दी हैं। साल 2018 के विधानसभा चुनाव में यहां कांग्रेस ने जीत हासिल कर सरकार बनाई थी। लेकिन 2019 लोकसभा चुनाव के बाद ऑपरेशन लोटस में यहां से कांग्रेस की सरकार छिन गई। भाजपा के साथ-साथ कांग्रेस और जेडीएस भी सत्ता की कुर्सी पाने की उम्मीद जता रहे हैं। साल 2023 में मप्र, छत्तीसगढ़, कर्नाटक के अलावा तेलंगाना, त्रिपुरा, मेघालय, नागालैंड और मिजोरम में भी विधानसभा के चुनाव होने जा रहे हैं। तेलंगाना में अभी टीआरएस की सरकार है। यहां 2023 के रण में टीआरएस, भाजपा और कांग्रेस के बीच त्रिकोणीय मुकाबला संभव है। यहां अभी टीआरएस के नेता के. चंद्रशेखर राव मुख्यमंत्री हैं।

लोकसभा की भी तैयारी शुरू

अगले लोकसभा चुनावों की तैयारी में विपक्ष ने अपनी गोटियां सहेजनी शुरू की हैं तो भाजपा ने भी उन नए क्षेत्रों पर फोकस किया है जो उसके लिए अलंघ्य रहे हैं लेकिन भविष्य में सियासत की तस्वीर मैदानी स्थिति पर निर्भर है। कागजी आंकड़े पर नहीं। कुछ महीने पहले तक अंदाजा लगा पाना भी मुश्किल था, जब उप्र, उत्तराखंड, गोवा, मणिपुर में धुआंधार जीत से भाजपा ने दिखाया था कि वह इतनी अजेय है कि कोई मुगालते में न रहे। विपक्ष में हर जगह सन्नाटा पसर गया था। उसके तकरीबन सालभर पहले 2021 में पश्चिम बंगाल में भारी जीत से उत्साहित ममता बनर्जी के तेवर भी ठंडे पड़ने लगे थे। कांग्रेस अपने गढ़ पंजाब को भी बुरी तरह गंवाने के बाद निराशा और बिखराव के दौर से बुरी तरह पस्त थी (अलबत्ता वह भाजपा के हाथों नहीं, आम आदमी पार्टी से हारी)। महाराष्ट्र में शिवसेना में दोफाड़ से शिवसेना-राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी(राकांपा)-कांग्रेस की महाविकास अघाड़ी सरकार गिर गई थी। भाजपा का परचम सबसे ऊंचा लहरा रहा था। सरकार की केंद्रीय एजेंसियां भी कुछ ज्यादा ही तेजी से कथित भ्रष्टाचार की शिकायतों पर खासकर विपक्ष से जुड़े लोगों पर छापों का सिलसिला तेज कर चुकी थीं। लेकिन, फिर पिछले महीने अगस्त में बिहार में नीतीश कुमार भाजपा का साथ झटककर वापस राष्ट्रीय जनता दल (राजद)-कांग्रेस-वामपंथी दलों के महागठंबन की सरकार बना लेते हैं, तो फिजा बदलने लगती है। नीतीश विपक्ष को एकजुट करने दिल्ली पहुंच जाते हैं। कांग्रेस भी जैसे जाग उठती है। उसे राजनीतिक मुकाबले और खुद की पांत में बिखराव को समेटने की राह सूझ जाती है-भारत जोड़ो यात्रा। और राहुल गांधी कन्याकुमारी से कश्मीर की पैदल यात्रा पर निकल पड़ते हैं और शायद विश्वसनीयता साबित करने के लिए कुछ सिविल सोसायटी संगठनों, छिटपुट जनांदोलनों के सक्रिय लोगों को भी जुटा लेते हैं। तेलंगाना के मुख्यमंत्री तथा तेलंगाना राष्ट्र समिति (टीआरएस के नेता के. चंद्रशेखर राव तो इतने तेवर में आ जाते हैं कि भाजपा-मुक्त भारत का नारा उछाल देते हैं। तो, क्या वाकई कुछ ऐसी फिजा बदली है कि विपक्ष के नेता अजेय लगती भाजपा को चुनौती देने की ताकत का एहसास करने लगे हैं? कहीं यह विपक्ष के नेताओं में अपनी ताकत का नया अहसास या आत्मविश्वास के बदले अपने सियासी वजूद को बचाए रखने की कवायद भर तो नहीं?

क्या गुल खिलाएगी राहुल गांधी की भारत जोड़ो यात्रा

राहुल गांधी इन दिनों भारत जोड़ो यात्रा पर हैं। अभी तक दक्षिण भारत के जिन क्षेत्रों से यात्रा निकली है वहां राहुल को व्यापक समर्थन मिला है। राहुल की यात्रा की सफलता को देखते हुए भाजपा ने भी अपने राज्यों में यात्राएं शुरू करवा दी हैं। गुजरात में भाजपा ने इन चुनावों के लिए जो यात्रा शुरू की है उसका नाम 'गौरव यात्रा' रखा गया है। यात्रा की शुरुआत करते हुए भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा ने अपने भाषण में यात्रा के उद्देश्यों के बारे में बताते हुए कहा कि यह गुजरात के गौरव की यात्रा नहीं है बल्कि गुजरात के गौरव नरेंद्र मोदी के कारण देश का जो गौरव बढ़ा है, उसको जन-जन तक पहुंचाने की यात्रा है। इस वक्तव्य के पीछे साफ झलक रहा है कि जनता को मोदी के नाम पर मतदान के लिए प्रेरित किया जा रहा है। हिमाचल प्रदेश में ऐसी ही यात्रा चल रही है। इन दोनों राज्यों में विपक्ष के रूप में कांग्रेस से ज्यादा आम आदमी पार्टी की सक्रियता दिखाई पड़ रही है। दोनों राज्यों में आप परिवर्तन यात्रा के नाम पर यात्राएं निकाल रही है। इससे एक बात के संकेत तो मिल रहे हैं कि राहुल गांधी की यात्रा ने देश की राजनीति में भूचाल ला दिया है। भाजपा सहित अन्य पार्टियां राहुल की इस यात्रा को बायपास करने के प्रयास में जुट गई हैं। अब देखना यह है कि राहुल की यात्रा क्या गुल खिलाती है।

किसमें है मोदी सत्ता पलटने की ताकत

भाजपा खालिस अपने बूते सिर्फ दो बड़े राज्यों में है, उप्र और गुजरात। कांग्रेस के पास भी दो ही राज्य हैं, राजस्थान और छत्तीसगढ़। 2024 में कांग्रेस कम से कम 100 सीटों पर जीत चाहती है। वहीं भाजपा हर हाल में 272 के बहुमत के आंकड़े को तीसरी बार पार करना चाहती है। बाकी दर्जनभर राज्यों में क्षत्रपों की सत्ता है

जबकि कर्नाटक और मप्र में भाजपा ने कांग्रेस के विधायकों को तोड़कर या खरीदकर सरकार बनाई। विपक्ष का बंटा होना ही मोदी की जीत पर मुहर है। विपक्ष अगर राज्यवार सीटों को लेकर एकजुट हो जाए तो 2024 में मोदी को हराना बाएं हाथ का खेल है। पटना से दिल्ली पहुंचकर विपक्ष को एकजुट करने में लगे (बिहार के मुख्यमंत्री) नीतीश कुमार की बैठक का यही वह मंत्र है, जिस पर हर बैठक में चर्चा होती रही। और बहस का अंत कांग्रेस क्या करेगी, इस पर आकर चर्चा खत्म हो गई। यानी ओटीटी प्लेटफॉर्म की किसी वेब सीरीज की तर्ज पर अगली बैठक का इंतजार विपक्ष का हर वह नेता कर रहा है, जो 2024 में मोदी सत्ता को गद्दी पर देखना नहीं चाहता।

कांग्रेस विपक्ष के लिए सस्पेंस है। राहुल की भारत जोड़ो यात्रा ने इस सस्पेंस को और बढ़ा दिया है क्योंकि कांग्रेस के भीतर यह सवाल जोर पकड़ने लगा है कि यात्रा खत्म होने के बाद राहुल गांधी बदल चुके होंगे, कांग्रेस बदल जाएगी, **देश का नजरिया** भी कांग्रेस के संघर्ष को मान्यता देगा और 2024 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के सामने राजनीतिक चुनौती देते हुए राहुल गांधी ही खड़े होंगे। यानी मोदी की सत्ता को चुनौती देगा कौन, यह सवाल कांग्रेस और बाकी विपक्ष की गोलबंदी पर जा टिका है। नीतीश हर किसी को यही समझा रहे हैं कि विपक्ष एकजुट होगा तो कांग्रेस को विपक्ष के पीछे खड़ा होना ही पड़ेगा। वहीं नीतीश कांग्रेस को भी यही मैसेज दे रहे हैं कि अगर कांग्रेस चुनौती देती हुई दिखाई देगी और राहुल अगुवाई करते हुए नजर आ गए तो फिर एकजुट विपक्ष कांग्रेस के पीछे खड़ा होने से कतराएगा नहीं।

सभी को एकजुट करने निकले नीतीश हों या विपक्ष के कद्दावर क्षत्रप, सभी के सामने सवाल तीन हैं। एक, लोकसभा चुनाव को विधानसभा चुनाव से अलग देखकर क्या क्षत्रप अपनी राजनीति साध पाएंगे या बचा पाएंगे? दूसरे, कांग्रेस जिन राज्यों में भाजपा से सीधे नहीं टकराती उन राज्यों में क्षत्रप कांग्रेस को नेतृत्व कैसे थमा दें? तीसरे, कांग्रेस के बिना विपक्ष की एकजुटता उसी तीसरे मोर्चे की शक्ल ले पाएगी जो सफल नहीं होता बल्कि सत्ताधारी पार्टी को लाभ पहुंचा देता है। इन सवालों का जवाब न तो नीतीश के पास है, न ही ममता बनर्जी, शरद पवार, के. चंद्रशेखर राव, अरविंद केजरीवाल, अखिलेश यादव, चंद्रबाबू नायडू या उद्धव ठाकरे के पास। सिर्फ सीताराम येचुरी यह कहकर सहमति बनाना चाहते हैं कि जब सवाल लोकतंत्र और संविधान का हो तो राजनीति की छोटी-छोटी लकीरें मिटानी होंगी। 2024 की बिसात यहीं से शुरू होती है। मुद्दे मायने रखेंगे। परसेप्शन मायने रखेगा। या फिर गणित मायने रखेगा। मोदी खुद परसेप्शन पर टिके हैं। विपक्ष की एकजुटता गणित देख रही है। कांग्रेस मुद्दों के आसरे अपनी मौजूदगी चाहती है।

नरेंद्र मोदी का परसेप्शन हिंदुत्व और राष्ट्रवाद पर टिका है, जिसका विस्तार भाजपा इस हद तक कर चुकी है कि जातिगत और धार्मिक ध्रुवीकरण हो या राष्ट्रभक्ति और राष्ट्रीय सुरक्षा का सवाल, सारे मुद्दे इस दायरे में आकर सिमट जाएं। और जहां क्षत्रप इस सवाल को भेदने में सफल हो जाएं, वहां सोशल इंजीनियरिंग और 80-20 का खुला खेल खेला जा सके। इस परसेप्शन को मजबूत बनाने में पहली बार मेनस्ट्रीम मीडिया को भी समाज के ध्रुवीकरण का हथियार बना दिया गया है। संवैधानिक संस्थान हों या न्यायिक फैसलों की धार, सब कुछ राष्ट्रीय सुरक्षा के दायरे में सिमटा दिया गया है। असल मुश्किल यही है कि मोदी के राष्ट्रवाद और राष्ट्रीय सुरक्षा के परसेप्शन को भेदने में विपक्ष फेल हो चुका है। इस परसेप्शन को भेदने के लिए विपक्ष के पास लोकतंत्र और संविधान का ही सवाल है, लेकिन आम आदमी के लिए विपक्ष के ये सवाल चुनावी जीत नहीं दिला सकते। 2024 में भी यही मुश्किल विपक्ष के सामने है कि वह मोदी के परसेप्शन को कैसे भेदे।

हिमाचल चुनाव तय करेगा प्रियंका गांधी का भविष्य

हिमाचल विधानसभा चुनाव 2022 के रण में कांग्रेस 10 गारंटियों के साथ उतरी है। मकसद किसी भी कीमत पर चुनाव जीतना है। कांग्रेस का खास फोकस महिलाओं पर है, इसीलिए तो महिलाओं को 1500 रुपए मासिक भत्ता देने का वादा किया गया है। वहीं प्रियंका गांधी के लिए भाजपा के मिशन रिपीट को रोकना बड़ा चैलेंज है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने हिमाचल में भाजपा के मिशन रिपीट का जिम्मा खुद संभाल रखा है। कांग्रेस की राष्ट्रीय महासचिव प्रियंका गांधी को इस मिशन को रोकने की जिम्मेदारी सौंपी है। प्रियंका ने भी प्रधानमंत्री की रैलियों का माकूल जवाब देने का प्रयास किया है। वे सोलन में रैली कर चुकी हैं और अब आगे 4 और जिलों में रैलियां प्रस्तावित हैं। वहीं राजनीतिक पंडितों की मानें तो कांग्रेस ने 10 गारंटियां देकर हिमाचल के 80 फीसदी से भी अधिक वोटर्स साधने का प्रयास किया। कांग्रेस ने समाज के हर वर्ग, युवाओं से लेकर महिलाओं तक, कर्मचारियों से लेकर किसानों-बागवानों, ग्रामीणों-किसानों और स्कूली बच्चों तक को कवर किया है। पार्टी का मेन फोकस पॉइंट महिलाएं हैं। हिमाचल चुनाव से कांग्रेस के लिए 2024 लोकसभा चुनाव की राह आसान हो सकती है। 2023 में 9 राज्यों में विधानसभा के चुनाव होने के ठीक बाद 2024 के लोकसभा चुनाव होने हैं। ऐसे में कांग्रेस को हिमाचल प्रदेश, गुजरात के साथ ही 2023 के चुनावी राज्यों में भी जीत दर्ज करनी होगी, वरना 2024 के चुनाव में विपक्ष तो दूर यूपीए का नेतृत्व करने में भी उसे चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा। अब इन गारंटियों को जनता के बीच ले जाना कांग्रेस के लिए चुनौती है, क्योंकि भाजपा इन गारंटियों को झूठी बताने में जुट गई है। कांग्रेस की गारंटियों को देखें तो इनमें आम जनता को राहत देने की बात है। समाज का हर वर्ग महंगाई व बेरोजगारी से परेशान है। इसी पर कांग्रेस ने फोकस किया है, लेकिन संगठन में बिखराव और गुटबाजी के चलते मिशन पूरा होता नजर नहीं आता। प्रदेश में पार्टी की लीडरशिप ही 2 गुटों में बंटी है। चुनाव जीत भी गए तो आपसी फूट शुरुआत में अविश्वास की कगार पर खड़ा कर देगी।

विकसित देश बनाने की चुनौतियां

अभी भारत को करनी होगी कड़ी मशक्कत

भारत को 2047 तक विकसित देश बनने के लिए पच्चीस वर्षों तक लगातार करीब सात से आठ फीसदी की दर से बढ़ना होगा। इसके अलावा कई अहम बातों पर ध्यान देना होगा। नई पीढ़ी को नए कौशल से सुसज्जित करके बड़ी संख्या में नई नौकरियों का सृजन करना होगा। नई रिपोर्टों के अनुसार अगले वर्ष तक भारत दुनिया का सर्वाधिक आबादी वाला देश बन जाएगा और देश में श्रम योग्य आयु वाली आबादी का बढ़ना 2045 तक जारी रहेगा और इस राह में भारत चीन को पीछे छोड़ देगा। ऐसे में इस नई डिजिटल दुनिया में देश की नई पीढ़ी को डिजिटल रोजगार जरूरतों के कौशल प्रशिक्षण से सुसज्जित करना होगा। ऑटोमेशन, डेटा साइंस, मशीन लर्निंग रोबोटिक्स और कृत्रिम मेधा के चलते देश की नई पीढ़ी देश ही नहीं दुनियाभर में डिजिटल अर्थव्यवस्था में बढ़े हुए रोजगार मौकों को मुट्ठियों में ले सकेगी। अगले 25 वर्षों के दौरान 10 हजार यूनिकार्न के सृजन की व्यापक योजना बनाना उचित होगा। वहीं देश को कुछ सौ डेकाकोर्न की योजना भी बनानी होगी। डेकाकोर्न 10 अरब डॉलर मूल्यांकन वाले उपक्रम होते हैं।

भारत को 2047 तक विकसित देश बनने के लिए पच्चीस वर्षों तक लगातार करीब सात से आठ फीसदी की दर से बढ़ना होगा। इसके अलावा कई अहम बातों पर ध्यान देना होगा। नई पीढ़ी को नए कौशल से सुसज्जित करके बड़ी संख्या में नई नौकरियों का सृजन करना होगा। इन दिनों भारत को विकसित देश बनने की संभावनाओं पर मंथन चल रहा है। यह अत्यधिक महत्वाकांक्षी लक्ष्य है। एक विकसित राष्ट्र की पहचान आमतौर पर अपेक्षाकृत ऊंची आर्थिक विकास दर, बेहतर जीवन स्तर और उच्च प्रति व्यक्ति आय से होती है। इसके अलावा उसे मानव विकास सूचकांक के मानकों पर अच्छा प्रस्तुतिकरण करने की भी जरूरत होती है। इसमें शिक्षा, साक्षरता और स्वास्थ्य जैसी आधारभूत चीजें शामिल हैं। इन सभी मानकों पर भारत अभी बहुत पीछे है और विकसित देश बनने का लक्ष्य पाना अत्यधिक चुनौतीपूर्ण है।

जब हम इस प्रश्न पर विचार करते हैं कि भारत 2047 में विकसित देश कैसे बनेगा, तो दो बातों का विश्लेषण करना होगा। एक, आजादी से अब तक भारत का आर्थिक-सामाजिक आधार कैसा है और दो, हम विकसित देश बनने के लिए चुनौतीपूर्ण लक्ष्यों को कैसे प्राप्त कर पाएंगे? निश्चित रूप से विगत 75 वर्षों में असाधारण चुनौतियों से सफलतापूर्वक निपटने के बाद दुनिया में सामर्थ्यवान भारत की जो तस्वीर दिखाई दी है, उसके आधार पर देश के विकसित देश बनने की पूरी क्षमता है।

गौरतलब है कि इस समय भारत विश्व की छठी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है। वैश्विक मंदी की चुनौतियों के बीच वित्त वर्ष 2021-22 में भारत में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) में रिकार्ड बढ़ोतरी हुई है। 2021-22 में 83.57 अरब डॉलर का एफडीआई प्राप्त हुआ है। कंप्यूटर सॉफ्टवेयर और हार्डवेयर क्षेत्र में सबसे अधिक एफडीआई प्राप्त हुआ है। देश का विदेशी मुद्रा भंडार भी मजबूत स्तर पर दिखाई दे रहा है, जो कि दुनिया में चौथा सबसे बड़ा विदेशी मुद्रा भंडार है। दुनिया के ढहते शेयर बाजारों के बीच 30 अगस्त, 2022 को सेंसेक्स 59357 अंकों की ऊंचाई पर दिखाई दिया।

पिछले वित्त वर्ष 2021-22 में भारत का उत्पाद निर्यात करीब 419 अरब डालर और सेवा निर्यात करीब 249 अरब डॉलर के ऐतिहासिक स्तर पर पहुंचना इस बात का संकेत है कि अब भारत निर्यात आधारित अर्थव्यवस्था की डगर पर आगे बढ़ रहा है। भारत की पहचान एक उद्यमी समाज के रूप में बन रही है। इस समय भारत नवउद्यमों और यूनिकार्न्स का दुनिया में तीसरा सबसे बड़ा ठिकाना बन गया है। यूनिकार्न एक अरब डॉलर मूल्यांकन वाले उपक्रम होते हैं।

देश कृषि क्षेत्र में भी तेजी से आगे बढ़ा है। वर्ष 2021-22 के चौथे अग्रिम अनुमान के मुताबिक देश में कुल खाद्यान्न उत्पादन 31.57 करोड़ टन होगा, जो पिछले वर्ष की तुलना में 49.8 लाख टन अधिक है। देश की अर्थव्यवस्था तेजी से डिजिटल होती गई है। इस समय भारत डिजिटल तकनीक के कारण कृत्रिम मेधा, ड्रोन, रोबोटिक्स, ग्रीन एनर्जी, चौथी औद्योगिक क्रांति और डिजिटल पेमेंट की डगर पर तेजी से आगे बढ़ रहा है। दुनिया के 40 फीसदी ऑनलाइन पेमेंट भारत में हो रहे हैं। इतना ही नहीं, डिजिटल इंडिया मुहिम देश को डिजिटलीकृत और ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था बनाने में अहम भूमिका निभा रही है। इससे ई-कॉमर्स और अन्य व्यवसाय बढ़ रहे हैं। साथ ही डिजिटल अर्थव्यवस्था के तहत रोजगार के नए मौके निर्मित हो रहे हैं। कोविड महामारी और वर्तमान वैश्विक संघर्षों के बीच देश की नई प्रतिभाशाली पीढ़ी के बल पर देश स्टार्टअप और सॉफ्टवेयर से लेकर स्पेस जैसे विभिन्न क्षेत्रों में सामर्थ्यवान देश के रूप में उभर रहा है। मार्गन स्टैनली की रिपोर्ट के मुताबिक वर्ष 2022-23 में भारतीय अर्थव्यवस्था सबसे तेज बढ़ती एशियाई अर्थव्यवस्था होगी। जब हम इस प्रश्न पर विचार करते हैं कि हमें विकसित देश बनने के लिए कितने और कैसे प्रयास करने होंगे, तो हमारे सामने दुनिया के अड़तीस विकसित देशों का आर्थिक सहयोग और विकास संगठन (ओईसीडी) दिखाई देता है। विकसित देशों का यह संगठन हमें संकेत देता है कि करीब 12 हजार से पंद्रह हजार डॉलर प्रति व्यक्ति जीडीपी के आधार पर अधिकांश अर्थव्यवस्थाओं को विकसित राष्ट्र की श्रेणी में जगह मिल जाती है।

अभी भारत की प्रति व्यक्ति आय पच्चीस सौ डॉलर से भी कम है। संयुक्त राष्ट्र के अनुसार 2047 तक भारत की जनसंख्या एक सौ चौंसठ करोड़ तक पहुंच सकती है। इसलिए अगर भारत को 2047 तक विकसित राष्ट्रों की पांत में शामिल होना है तो उस समय भारत की अर्थव्यवस्था करीब बीस लाख करोड़ डॉलर होनी चाहिए, जो फिलहाल करीब 2.7 लाख करोड़ डालर है। यानी पच्चीस वर्षों में जीडीपी को 6 गुना अधिक बढ़ना पड़ेगा।

● **विकास दुबे**

अपने पैरों पर खड़ी होगी कांग्रेस?

कांग्रेस का इतिहास कहता है कि ये पार्टी अपनी स्थापना के बाद कई बार टूटी है। लेकिन, हर बार उतनी ही मजबूती से खड़ी भी हुई है। हां, ये जरूर है कि इस बार कांग्रेस के लिए चुनौती बड़ी है। सामने नरेंद्र मोदी जैसा करिश्माई नेतृत्व और भाजपा जैसी विशाल संसाधनों वाली राजनीतिक पार्टी है, ये नई भाजपा है जो नए भारत का निर्माण कर रही है।

137 साल पुरानी कांग्रेस पार्टी के सामने संकट पैदा हो गया है और वो है पार्टी को संभालने का संकट। इसके अध्यक्ष पद का संकट। सोनिया गांधी और राहुल गांधी दोनों ही अब कांग्रेस के अध्यक्ष नहीं बनना चाहते। अभी कुछ साल पहले तक देश की सबसे बड़ी पार्टी थी कांग्रेस। लेकिन, 2014 के आम चुनाव में उसे केवल 44 सीटें मिल पाईं और 2019 के लोकसभा चुनाव में भी कांग्रेस ने कुछ नंबर तो बढ़ाए। लेकिन, आंकड़ा ताश के 52 पत्तों तक ही सिमटकर रह गया।

सोनिया गांधी समेत तमाम कांग्रेस नेताओं का यही मानना है कि राहुल गांधी को कांग्रेस अध्यक्ष का पद संभाल लेना चाहिए। पहली बात 1984 की है जब तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की मौत के बाद हुए चुनाव में कांग्रेस को सहानुभूति वोटों का खूब फायदा मिला था और उसने लोकसभा में 400 से भी ज्यादा सीटें हासिल की थीं। और, भाजपा को मात्र 2 सीटें मिली थीं। और, उनके नेता अटल बिहारी वाजपेयी खुद भी ग्वालियर की सीट हार गए थे। उस समय परिवार नियोजन का एक नारा बहुत प्रसिद्ध था हम दो हमारे दो। और, यही कहकर उस समय प्रधानमंत्री बने राजीव गांधी ने वाजपेयी और उनकी पार्टी का मजाक उड़ाया था। महाभारत का युद्ध शुरू होने से पहले जो स्थिति अर्जुन की हुई थी, कुछ वैसा ही हाल अटल बिहारी वाजपेयी का हो गया था। उन्होंने भी गांडीव रखने की सोच ली थी यानी राजनीति से दूर होने का विचार आने लगा था। उन्होंने पार्टी के अध्यक्ष पद से इस्तीफा देने की पेशकश की थी। हालांकि, उनका इस्तीफा अस्वीकार कर दिया गया था। लेकिन, नाम को सार्थक करते अटल इरादों वाले वाजपेयी ने जवाब दिया- अंधेरा छंटेगा, सूरज निकलेगा, कमल खिलेगा।

उनकी दृढ़ता एक कविता में भी बखूबी झलकती है जो उनमें भी स्फूर्ति का संचार करती रही और पार्टी में भी। अटल बिहारी वाजपेयी ने लिखा-टूटे हुए तारों से फूटे वासंती स्वर, पत्थर की छाती में उग आया नव अंकुर, झरे सब पीले पात, कोयल की कुहुक रात, प्राची में अरुणिमा की रेख देख पाता हूं। गीत नया गाता हूं। टूटे हुए सपनों की कौन सुने सिसकी, अंतर की चीर व्यथा पलकों पर ठिठकी, हार नहीं मानूंगा, रार नहीं ठानूंगा, काल के कपाल पे लिखता मिटाता हूं। गीत नया गाता हूं।

अब दूसरी बात जो 1999 में हुई, भाजपा की सीटें भी बढ़ती गईं और एनडीए की सरकार भी बनी। लेकिन, सदन में अविश्वास प्रस्ताव न जीत पाने के कारण जब अटल बिहारी वाजपेयी की सरकार गिर गई तो लोकसभा में विपक्षी दलों ने उनका बहुत उपहास उड़ाया था। तब अटल बिहारी वाजपेयी ने लोकसभा में कांग्रेस को संबोधित करते हुए विपक्ष के लिए कहा था- आज आप मेरा उपहास उड़ा लें, लेकिन एक वक्त आएगा, जब लोग आपका उपहास उड़ाएंगे। अटल बिहारी वाजपेयी की तब कही हुई बात 2014 और 2019 में काफी हद तक सही साबित हुई और उसके साथ ही विधानसभा चुनावों में कांग्रेस की हार और कई जगह तो बुरी हार ने वाजपेयी की बातों को सही साबित किया। कांग्रेस कई राज्यों में खाता तक नहीं खोल पाई थी।

और, अब 2022 में कांग्रेस के सामने नेतृत्व का सवाल उठ खड़ा हुआ है कि आखिर कौन संभाले उसके अध्यक्ष पद को। अटल बिहारी वाजपेयी के कहे वचनों और उनकी पार्टी की मेहनत के बाद मौजूदा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में जिस तरह से भाजपा और एनडीए आगे बढ़ रहे हैं उस पर इतिहास के पन्नों से एक कथा है- 350 ईसा पूर्व में जन्मे थे कौटिल्य जिनके पिता थे महान शिक्षक चणक मुनि। यही कौटिल्य बाद में चाणक्य नाम से प्रसिद्ध हुए। चणक मुनि अपने राज्य मगध की रक्षा के लिए चिंतित रहते थे और मगध के क्रूर राजा धनानंद की नीतियों को गलत मानते थे और उन्होंने अपने मित्र अमात्य शकटार के सहयोग से रणनीति बनाकर राजा धनानंद को सत्ता से उखाड़ फेंकने की कोशिश की लेकिन धनानंद ने इस बात का पता चलने पर चणक मुनि को कैद कर लिया गया और उन पर राजद्रोह का आरोप लगाकर उन्हें मार डाला गया, जिसका चाणक्य को बड़ा सदमा लगा।

पिता का दाह संस्कार करते वक्त चाणक्य ने पवित्र गंगा जल अपने हाथों में लेकर धनानंद के वंश का नाश करने तक पका हुआ भोजन नहीं ग्रहण करने की कड़ी प्रतिज्ञा ली थी। बाद में, धनानंद के दरबार में भी अपना अपमान होने पर चाणक्य ने बदला पूरा नहीं होने तक अपनी शिखा नहीं बांधने की भी प्रतिज्ञा कर ली थी। इसके बाद तो चाणक्य ने चन्द्रगुप्त मौर्य को राजनीति और कूटनीति सिखाकर धनानंद से तो बदला लिया ही, आगे चलकर इसी वंश के सम्राट अशोक ने अखंड भारत का सपना देखा और पूरा किया।

कांग्रेस के सामने चुनौतियां

वर्तमान समय में कांग्रेस के सामने चुनौतियों का पहाड़ है। जबकि 1967 तक कांग्रेस के सामने कोई नहीं था। 1967 में लोकसभा की कुल सीटें 494 से बढ़ाकर 520 कर दी गई थीं। इस चुनाव में 15 करोड़ 27 लाख लोगों ने मतदान किया था, मतदान का प्रतिशत करीब 61 रहा था। चुनाव नतीजे चौंकाने वाले रहे। कांग्रेस को करारा झटका लगा। उसे स्पष्ट बहुमत तो मिल गया लेकिन पिछले चुनाव के मुकाबले लोकसभा में उसकी संख्या काफी कम हो गई। इससे पहले पिछले तीनों आम चुनावों में कांग्रेस को करीब तीन चौथाई सीटें मिलती रहीं लेकिन इस बार उसके खाते में मात्र 283 सीटें ही आईं यानी बहुमत से मात्र 22 सीटें ज्यादा। कांग्रेस के वोट प्रतिशत में पांच फीसदी की गिरावट आई।

देश को आजाद कराने में कांग्रेस की महत्वपूर्ण भूमिका

कांग्रेस ने देश को आजाद कराने में एक बड़ी भूमिका निभाई। आजादी के बाद 1952 में देश के पहले चुनाव में कांग्रेस सत्ता में आई। 1977 तक देश पर केवल कांग्रेस का शासन था। 1977 के चुनाव में जनता पार्टी ने कांग्रेस की कुर्सी छीन ली। हालांकि तीन साल के अंदर ही 1980 में कांग्रेस ने वापसी कर सत्ता अपने नाम की। 1989 में कांग्रेस को फिर हार का सामना करना पड़ा। लेकिन 1991, 2004, 2009 में कांग्रेस ने दूसरी पार्टियों के साथ मिलकर केंद्र की सत्ता हासिल की। आजादी के बाद से लेकर 2019 तक 17 आम चुनावों में से कांग्रेस ने 6 में पूर्ण बहुमत हासिल किया, जबकि 4 बार सत्तारुढ़ गठबंधन का नेतृत्व किया। कांग्रेस, भारतीय लोकतंत्र के इतिहास में सर्वाधिक समय तक सत्ता में रही है। पहले लोकसभा चुनाव में कांग्रेस को 364 सीटें मिली थीं। देश की आजादी के संघर्ष से जुड़े सबसे मशहूर और जाने-माने लोग इसी कांग्रेस का हिस्सा थे। गांधी-नेहरू से लेकर सरदार पटेल और राजेंद्र प्रसाद जैसे नेता कांग्रेस के ही सदस्य थे। इसमें कोई शक नहीं है कि स्वतंत्र भारत के इतिहास में कांग्रेस सबसे मजबूत राजनीतिक ताकत के रूप में उभरी। जवाहरलाल नेहरु के करिश्माई नेतृत्व में पार्टी ने पहले संसदीय चुनावों में शानदार सफलता पाई और ये सिलसिला 1967 तक चलता रहा।

चाणक्य का एक किस्सा और है। एक बार मगध के महामंत्री चाणक्य राज काज के काम से मिलने के लिए सम्राट चंद्रगुप्त से मिलने जा रहे थे। तभी अचानक रास्ते में उनके पांव में कांटा चुभ गया। उन्होंने जल्दी ही उस कांटे को अपने पैर से निकाला और उसके बाद अपने शिष्यों से एक कुल्हाड़ी मंगवाकर उस कटीले पौधे को काटकर जड़ से अलग कर दिया। इतना ही नहीं, उस पौधे की जड़ को भी जमीन खोदकर बाहर निकाला और कटे हुए पौधे के साथ जड़ को भी जला दिया। चाणक्य यहीं नहीं रुके। इससे पहले की वे अपनी मंजिल की तरफ बढ़ते उन्होंने अपने शिष्यों से छाछ मंगवाई और उस पौधे के जड़ वाले स्थान पर डाल दी।

ये सब देख उनके शिष्य हैरत में पड़ गए और पूछा- गुरूजी! इतने तुच्छ कटीले पौधे को निकालने के लिए इतनी मेहनत और समय क्यों बर्बाद किया आपने? हमें आदेश देते तो हम तुरंत कर देते। शिष्य की बात सुनकर चाणक्य मुस्कुराते हुए बोले- इससे मैंने तुम सबको दो सीख देने की कोशिश की, एक तो ये कि अपना काम स्वयं किया जाए और दूसरी बात ये जब तक बुराई को जड़ से खत्म नहीं किया जाए तब तक वह पूरी तरह से खत्म नहीं होती है और भविष्य में आए दिन हमेशा किसी न किसी को अपने चपेट में लेती रहती है। शिष्यों को अब भी छाछ वाली बात समझ नहीं आई थी तो उसके जवाब में चाणक्य ने कहा- जहां इस पौधे की जड़ थी, वहां अगर कुछ भी अवशेष रह गया होगा तो ये कटीला पौधा फिर पनप सकता है लेकिन छाछ डालने से चींटियां, कीड़े-मकौड़े यहां इकट्ठा होंगे और छाछ के साथ जड़ का नाम-ओ-निशान मिटा देंगे और वह कटीला पौधा फिर से कभी पनप नहीं सकेगा।

अब इस बात का आज की भाजपा की कूटनीति और कांग्रेस की राजनीति से संबंध आप स्थापित करते रहिए, वैसे यहां यह भी जान लें कि 1984 में जिस भाजपा के खाते में मात्र 2 सीटें थीं, उसी भाजपा ने 2019 में 303 सीट हासिल की थी और एनडीए ने 353। कांग्रेस के तत्कालीन अध्यक्ष राहुल गांधी ने पार्टी की हार की नैतिक जिम्मेदारी लेते हुए कांग्रेस अध्यक्ष पद से इस्तीफा दे दिया था और तब से सोनिया गांधी ने कांग्रेस के अंतरिम अध्यक्ष का पद भार संभाल रखा है।

अब मामला ये है कि सोनिया गांधी समेत कांग्रेस के ज्यादातर नेताओं के मुताबिक 2024 के लोकसभा चुनाव को देखते हुए राहुल गांधी को अध्यक्ष पद संभाल लेना चाहिए लेकिन राहुल गांधी हैं कि अपनी पार्टी को ना बोलकर निराश करते जा रहे हैं। दूसरी तरफ, सोनिया गांधी ने भी अपने स्वास्थ्य कारणों का हवाला देकर फिर से पार्टी अध्यक्ष की कुर्सी संभालने से फिलहाल इनकार किया है। सूत्रों के मुताबिक इस फैसले ने कांग्रेस के कई नेताओं का ध्यान अब प्रियंका गांधी वाड्रा पर केंद्रित कर दिया है क्योंकि संगठन के ज्यादातर सदस्य अब भी यही चाहते हैं कि पार्टी की अगुवाई गांधी परिवार से ही कोई सदस्य करे। हालांकि, इस साल के उप्र चुनावों में प्रियंका के बेहद खराब प्रदर्शन की बात भी कई लोगों के दिमाग में है। खबरें तो ये भी हैं कि प्रियंका ने भी अध्यक्ष बनने से मना कर दिया था। गैर-गांधी अध्यक्ष के लिए मल्लिकार्जुन खड़गे समेत कुछ और नामों पर विचार हो रहा है लेकिन कौन कांग्रेस का अध्यक्ष बनेगा ये कहना अभी मुश्किल है क्योंकि अंदरूनी खींचतान भी कांग्रेस को गिराने के लिए जिम्मेदार रही है।

देश में 2014 से केंद्र में भाजपा की सरकार है। भारत के दो राज्यों में कांग्रेस पार्टी की सरकार है। कांग्रेस अपने सबसे बुरे दौर से गुजर रही है। कांग्रेस पार्टी अपना अस्तित्व बचाने के लिए लड़ रही है। एक वक्त था जब देश में सिर्फ कांग्रेस ही थी। देश को आजाद कराने के लिए कांग्रेस पार्टी की स्थापना हुई थी। देश को आजादी मिली और कांग्रेस ने देश को बनाया भी।

गौरतलब है कि एलेन ओक्टेवियन ह्यूम 1857 की क्रांति के वक्त इटावा के कलेक्टर थे। ह्यूम ने खुद ब्रिटिश सरकार के खिलाफ आवाज उठाई और 1882 में पद से अवकाश लेकर कांग्रेस यूनियन का गठन किया। 28 दिसंबर 1885 को कांग्रेस का गठन हुआ। संगठन का पहला अध्यक्ष व्योमेशचंद्र बनर्जी को बनाया गया था। कांग्रेस की स्थापना का उद्देश्य देश की आजादी था। लेकिन स्वतंत्रता के पश्चात ये **भारत की प्रमुख राजनीतिक पार्टी** बन गई। ध्यान देने वाली बात ये भी है कि आजादी के बाद महात्मा गांधी ने कहा था कि कांग्रेस के गठन का उद्देश्य पूरा हो चुका है अत: इसे खत्म कर देना चाहिए। पार्टी का चुनाव चिन्ह हाथ का पंजा है। इससे पहले बैल जोड़ी और गाय-बछड़ा भी कांग्रेस का चुनाव चिन्ह रहे। 1905 तक कांग्रेस पार्टी के लिए कोई खास मुद्दा नहीं था। जैसे आज के रोटरी क्लब होते हैं, वैसा ही तब कांग्रेस का हाल था। दादाभाई नौरोजी और बदरुद्दीन तैयबजी जैसे नेता इसके साथ आ गए थे। मगर जनता के बीच इसका कोई असर नहीं था। तब कांग्रेस याचिकाएं देने में व्यस्त रहती थी। लेकिन बंगाल विभाजन के बाद कांग्रेस ने पहली बार अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ बगावत दिखाई।

● **विपिन कंधारी**

अमित शाह ने भाजपा की कमान फिर से संभाल ली है। ऐसा नहीं है कि जेपी नड्डा को हटा कर फिर से अध्यक्ष बन गए हैं। पार्टी का संगठन अपनी जगह पर चलता रहेगा, लेकिन लोकसभा चुनावों की दृष्टि से मोर्चेबंदी की कमान अमित शाह ने अपने हाथ में ले ली है। लोकसभा चुनावों में अभी 19 महीने पड़े हैं। अगर विपक्ष की गतिविधियां अभी शुरु न होती, तो भाजपा की चुनावी तैयारियां भी शुरु न होतीं।

2024 में भाजपा का मिशन 400

बिहार में बने नए राजनीतिक समीकरणों के कारण भाजपा को प्रदेश की सत्ता से बाहर होना पड़ा। यह भाजपा के लिए इस लिहाज से बड़ा झटका था कि पिछले तीन साल में जहां भाजपा ने महाराष्ट्र, कर्नाटक और मप्र की हारी बाजी को जीत में बदला, वहीं बिहार में जीती बाजी हार गई। सत्ता परिवर्तन और उसके बाद नीतीश कुमार की ओर से मोदी को सत्ता से बाहर करने की चुनौती ने भाजपा को समय से पहले मोर्चाबंदी करने के लिए मजबूर किया।

बिहार के घटनाक्रम ने गैर भाजपा दलों में भी नया जोश भर दिया है। विपक्ष की राजनीति में हालांकि नेतृत्व की तस्वीर साफ नहीं है, लेकिन नीतीश कुमार विपक्ष के पहले नेता हैं जिन्होंने नरेंद्र मोदी को 2024 में निपट लेने की धमकी दी है। इसलिए नीतीश कुमार विपक्ष की राजनीति के केंद्र बिंदु बन गए हैं। नीतीश कुमार ने मोदी को चुनौती तो दे दी है लेकिन भानुमती के कुनबे को इकट्ठा करना उनके खुद के लिए चुनौती बन गई है।

नीतीश कुमार की रणनीति भी अब साफ नजर आने लगी है। वह राजनीति में नैतिकता को दरकिनार कर उन सभी को एकजुट कर रहे हैं, जो हाल के वर्षों में या तो भ्रष्टाचार के आरोपों में सजायाफ्ता हुए हैं या जिन पर सीबीआई और ईडी की जांच चल रही है। उनकी शुरुआत चारा घोटाले के पांच मामलों में सजायाफ्ता लालू यादव के साथ गठजोड़ से हुई है। उनकी दूसरी मुलाकात तेलंगाना के मुख्यमंत्री केसीआर से हुई, जिनकी सरकार पर भाजपा ने हाल ही में पारिवारिक भ्रष्टाचार के आरोप लगाए हैं। दिल्ली प्रदेश भाजपा के नेताओं ने केसीआर की बेटी पर आरोप लगाया है कि दिल्ली के शराब घोटाले में वह भी शामिल थीं। नीतीश कुमार की तीसरी मुलाकात ओम प्रकाश चौटाला से हुई है। चौटाला को अभी तीन महीने पहले ही आमदनी से ज्यादा संपत्ति के आरोप में चार साल कैद की सजा हुई है। उनकी चार संपत्तियां जब्त भी की गई हैं। इससे पहले वह शिक्षकों की भर्ती घोटाले के आरोप में 10 साल जेल की सजा काट चुके हैं।

तेलंगाना के मुख्यमंत्री केसीआर, बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी और दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल पर सीबीआई का शिकंजा कसता जा रहा है। ये तीनों मुख्यमंत्री कांग्रेस के नेतृत्व में विपक्षी एकता नहीं चाहते। वे राहुल गांधी को भी विपक्ष का नेता मानने को तैयार नहीं हैं। इनमें सबसे ज्यादा अडियल केजरीवाल और केसीआर हैं क्योंकि दोनों की पार्टियों का विस्तार कांग्रेस की कीमत पर हुआ है। आम आदमी पार्टी तो दिल्ली और पंजाब दोनों राज्यों में कांग्रेस को हराकर सत्ता में आई है।

इन सब राजनीतिक चालों के बीच सीबीआई और ईडी ने परिस्थियां धीरे-धीरे बदल दी हैं। ऐसा लगता है कि नीतीश कुमार केंद्र बिंदु बन सकते हैं। नीतीश कुमार ने दिल्ली आकर केजरीवाल से भी मुलाकात की, जिनकी सरकार शराब और स्कूल के कमरों के निर्माण में हुए भ्रष्टाचार के आरोपों से घिरी हुई है। केजरीवाल और नीतीश की मुलाकात में फोटो सेशन के सिवा कोई गंभीर बात नहीं हुई। दोनों ने केंद्र सरकार की ओर से सीबीआई और ईडी के इस्तेमाल के खिलाफ एकजुटता दिखाने का संकल्प जरूर लिया, लेकिन केजरीवाल नेशनल हेराल्ड की हेराफेरी के मामले में कांग्रेस के पक्ष में बयान देने को तैयार नहीं हुए।

केजरीवाल गुजरात और हिमाचल प्रदेश के

बिहार, बंगाल, झारखंड में भाजपा मजबूत

दावे करना अलग बात है, लेकिन उन दावों को हकीकत में बदलना अलग बात है। बिहार, बंगाल, झारखंड में भाजपा अभी भी मजबूत स्थिति में है, अगर सीटें बढ़ेंगी नहीं, तो घटेंगी भी नहीं। 2014 में जब बिहार में भाजपा अकेले चुनाव लड़ी थी, तो उसे 21 सीटें मिलीं थीं, लेकिन 2019 में नीतीश कुमार के साथ मिलकर लड़ी तो 17 जीती, इसलिए भाजपा बिहार में अपनी स्थिति सुधारेगी नहीं, तो मौजूदा स्थिति बरकरार रखेगी। लगभग यही स्थिति बंगाल और झारखंड में रहेगी, ममता ने जोर लगाकर एक-दो सीटें घह्राटा भी दीं, उससे कोई ज्यादा फर्क नहीं पड़ेगा। अगर ममता उप्र और दिल्ली से ज्यादा उम्मीद लगाए बैठी हैं, तो वह भी गलतफहमी में हैं। पिछले 11 साल से दिल्ली में आम आदमी पार्टी की सरकार है, इस बीच दो बार लोकसभा के चुनाव हो चुके, लेकिन दोनों ही बार भाजपा लोकसभा की सभी सात सीटें जीती। दिल्ली की जनता विधानसभा और लोकसभा को अलग-अलग नजरिए से तौलती है, यह बात शायद ममता को समझ नहीं आ रही।

चुनाव नतीजों का इंतजार करने के बाद ही अपनी रणनीति बताएंगे। इन दोनों राज्यों में उन्हें कांग्रेस का वोट बैंक हथियाने की उम्मीद है। पिछले लोकसभा चुनाव से पहले केजरीवाल और ममता विपक्षी एकता के प्रयासों में शामिल थे। दोनों ने 2018 की कोलकाता रैली और 2019 की बेंगलुरू रैली में एकता का प्रदर्शन किया था। नीतीश कुमार उन सभी से मिल रहे हैं, जो पिछले लोकसभा चुनावों से पहले हुई इन दोनों रैलियों में शामिल थे। अपने दिल्ली दौरे के दौरान उन्होंने राहुल गांधी, सीताराम येचुरी और डी राजा से मुलाकात की। वो कुमारस्वामी से भी मुलाकात कर चुके हैं।

अगर पांच मुख्यमंत्री ममता, केजरीवाल, केसीआर, नीतीश कुमार, स्टालिन एकजुट हो जाते हैं और राहुल, उद्धव, लालू, मुलायम, चौटाला और वामपंथी भी इनके साथ आ जाते हैं, तो भाजपा को फायदा ही होगा, क्योंकि दो विचारधाराओं का ध्रुवीकरण होगा। नीतीश कुमार ने खुद आजादी के आंदोलन और गांधी हत्या का जिक्र करके आरएसएस और भाजपा पर हमला बोला है। विपक्ष के ये बयान ध्रुवीकरण को बढ़ावा देने में मददगार साबित होंगे। भाजपा से नाराज चल रहा हिंदू वोटर फिर से उसके साथ मजबूती के साथ खड़ा हो जाएगा। तटस्थ वोटर भी भाजपा के साथ जुड़ेगा क्योंकि नरेंद्र मोदी भ्रष्टाचार और परिवारवाद बनाम ईमानदार सरकार का मुकाबला बना देंगे।

विपक्ष की रणनीति के मुकाबले भाजपा ने 19 महीने पहले ही अपनी रणनीति बनाना शुरू कर दिया है। महाराष्ट्र के निकाय चुनावों में शिंदे गुट के साथ मिलकर चुनाव लड़ने का फैसला महाराष्ट्र की राजनीति के हिसाब से बड़ी घटना है। महाराष्ट्र के निकाय चुनाव विधानसभा से भी ज्यादा महत्व रखते हैं। अमित शाह ने देवेंद्र फडणवीस के घर पर हुई बैठक में इस रणनीति को हरी झंडी देकर लोकसभा चुनाव से पहले ही उद्धव ठाकरे की राजनीति को खत्म करने की रणनीति बनाई है।

भाजपा में इस समय अगले लोकसभा चुनाव के लिए एक-एक प्रदेश की परिस्थितियों के अनुसार अलग-अलग रणनीति बनाई जा रही है। अमित शाह और जेपी नड्डा ने जून में केंद्र सरकार के मंत्रियों को राज्यों की परिस्थितियों का जायजा लेने की जिम्मेदारी दी थी। 6 सितंबर को भाजपा कार्यालय में उन सब मंत्रियों को बुलाकर अमित शाह और जेपी नड्डा ने रिपोर्ट तलब की है। सभी आंकलन और आंतरिक रिपोर्ट के बाद जहां विपक्ष भाजपा को 250 से नीचे देखना चाहता है, वहीं भाजपा 400 का टारगेट बनाकर चल रही है। पहले जीती हुई सीटों के अलावा इस बार भाजपा के निशाने पर वो सीटें हैं जहां वह 2019 के चुनाव में दूसरे नंबर पर रही थी।

पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने विपक्षी एकता पर अपना रूख कुछ साफ किया है। उनकी योजना वाली विपक्षी एकता में फिलहाल कांग्रेस शामिल नहीं है। शायद वह कांग्रेस कम्युनिस्ट रहित सीमित विपक्षी एकता की हिमायती है। इस एकता का मकसद सिर्फ भाजपा की सीटें घटाना है, 2024 में सरकार बनाना नहीं है। ममता ने कहा है कि बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार, झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन, अखिलेश यादव और बाकी दूसरे नेता 2024 का लोकसभा चुनाव उनके साथ मिलकर लड़ेंगे। इस ऐलान के वक्त ममता ने कांग्रेस या उससे जुड़े किसी भी नेता का नाम नहीं लिया, ऐसे में यह माना जाना चाहिए कि ममता और कांग्रेस के रिश्ते बिगड़ गए हैं। ममता के इस बयान से पुष्टि हो गई है कि वह कांग्रेस और कम्युनिस्टों को विपक्षी एकता में शामिल नहीं करना चाहती, वह क्षेत्रीय दलों का तीसरा मोर्चा बनाना चाहती हैं। या बिना कोई मोर्चा बनाए आपसी समझ से मिलकर चुनाव लड़ना चाहती हैं। वह कुछ इस तरह चाहती हैं कि अखिलेश यादव, नीतीश कुमार और तेजस्वी यादव बंगाल में उप्र-बिहार के वोटरों को ममता के पक्ष में प्रभावित करें और वह उनके राज्यों में उनके पक्ष में बंगाली वोटों को प्रभावित करेंगीं। इसी तरह झारखंड मुक्ति मोर्चे और तृणमूल कांग्रेस में एक-दूसरे के राज्य में मदद हो।

ममता बनर्जी ने नरेंद्र मोदी के लिए कहा है कि वह 300 सीटों पर गर्व कर रहे हैं, लेकिन उन्हें याद रखना चाहिए कि राजीव गांधी ने भी 400 सीटें जीती थीं। ममता और नीतीश कुमार बार-बार कह रहे हैं कि भाजपा को 50 से 100 सीटों तक का नुकसान करने की स्थिति में हैं। ममता बनर्जी ने 5 राज्यों में भाजपा को 100 सीटों का नुकसान पहुंचाने की बात कही है। हालांकि उन्होंने वे 5 राज्य तो नहीं बताए, लेकिन शायद वह बंगाल, बिहार, झारखंड के साथ उप्र और दिल्ली को जोड़ रही हैं। साफ तौर पर उन्होंने जिन 3 राज्यों का नाम लिया है वे बंगाल, बिहार और झारखंड हैं, इन तीनों राज्यों की कुल 96 लोकसभा सीटें हैं और भाजपा इनमें से 47 सीटें जीती थी।

● इन्द्र कुमार

उप्र में भाजपा की स्थिति

जहां तक उप्र का सवाल है तो अभी हाल ही में रामपुर और आजमगढ़ की लोकसभा सीटों पर उपचुनाव हुए हैं। दोनों सीटें सपा की थीं, आजम खां और अखिलेश यादव ने विधानसभा में जीतने के बाद इन सीटों से इस्तीफा दिया था। आजमगढ़ यादव और दलित बहुल है और रामपुर मुस्लिम बहुल। दोनों सीटों पर भाजपा ने बाजी मारी है। आजमगढ़ तो मुलायम परिवार की परम्परागत अपनी सीट है, 2014 में नरेंद्र मोदी की लहर के बावजूद मुलायम सिंह यादव और 2019 में सपा प्रमुख अखिलेश यादव इस सीट से चुनाव जीते थे। उपचुनाव में भाजपा ने मुलायम सिंह के भतीजे धर्मेंद्र यादव को हराया है। तो ममता बनर्जी को अखिलेश यादव से ज्यादा उम्मींद नहीं पालनी चाहिए। उप्र, बिहार, बंगाल, झारखंड और दिल्ली की कुल 181 लोकसभा सीटें हैं, 2019 में भाजपा 116 सीटें जीतीं थीं। ममता, नीतीश, तेजस्वी, हेमंत सोरेन, केजरीवाल और अखिलेश यादव अगर ये समझते हैं कि वे इन 5 राज्यों में भाजपा को 100 सीटों का नुकसान पहुंचा सकते हैं, तो यह खामख्याली है। क्या वे यह कहना चाहते हैं कि इन पांचों राज्यों में भाजपा को 116 सीटों से 16 सीटों पर ले आएंगे। उप्र में भाजपा पिछली बार 62 सीटें जीती थी, आजमगढ़ और रामपुर जीतने के बाद भाजपा की उप्र में 64 सीटे हैं, जबकि दो सीटें उसके सहयोगी अपना दल ने भी जीती थी। बसपा के खाते में सिर्फ 10 और सपा के खाते में 5 सीटें आईं थीं, जो अब घटकर तीन रह गई हैं। बाकी बची एक सीट पर सोनिया गांधी जीती थी।

चौंकाऊ नतीजों के आसार

मिशन 2023 को देखते हुए छत्तीसगढ़ के प्रमुख राजनीतिक दलों ने जोर आजमाइश शुरू कर दी है। इन सबके बीच तेजी से राजनीतिक समीकरण बन रहे हैं। इस बार विधानसभा चुनाव से पहले पदयात्रा पॉलिटिक्स का नया ट्रेंड देखने को मिल रहा है। कांग्रेस उदयपुर के चिंतन शिविर के बाद पदयात्रा निकाली और अब कांग्रेस सांसद राहुल गांधी के साथ जुड़ने के लिए बूथ स्तर पर भारत जोड़ो पदयात्रा की शुरुआत की है। इन सबके बीच भाजपा के दिग्गज आदिवासी नेता नंदकुमार साय पार्टी लीक से हटकर राष्ट्रीय स्वाभिमान पार्टी के अध्यक्ष और पूर्व विधायक वीरेंद्र पाण्डेय के साथ मिलकर स्वाभिमान यात्रा निकालने जा रहे हैं। कांग्रेस ने तय कार्यक्रम के मुताबिक बूथों में भारत जोड़ो यात्रा शुरू कर दी है। कांग्रेस के सभी 307 ब्लॉकों में वरिष्ठ नेताओं की अगुवाई में यात्रा निकाली जा रही है। यह यात्रा पूरी तरह देश प्रेम के रंग में रंगी नजर आईं। कांग्रेसी अपने हाथों में तिरंगा झंडा लेकर निकले। यह यात्रा राहुल गांधी की अगुवाई में निकल रही भारत जोड़ो यात्रा के कश्मीर पहुंचने तक क्रमवार सभी ब्लॉकों में बूथों तक चलेगी सभी जिला कांग्रेस इकाइयां कार्यक्रम बनाकर इस यात्रा का अनवरत संचालन करेगी। यात्रा के दौरान कांग्रेस जन घर-घर जन संपर्क कर भूपेश सरकार की योजनाओं का तथा भारत जोड़ो यात्रा का पंपलेट वितरित करेंगे।

राज्य में बरसात का लगभग एक महीना और बाकी है, अब तक हुई अच्छी बारिश ने छत्तीसगढ़ में चुनाव का माहौल हरा-भरा कर दिया है। पिछले चुनाव में मप्र के साथ छत्तीसगढ़ से बेदखल हुई भाजपा को इस बार यहां से काफी उम्मीद है। इस उम्मीद के चलते पार्टी ने चौतरफा सर्जरी शुरू कर दी है। इसकी शुरुआत उसने बॉटम्स अप एप्रोच की जगह टॉप टु बॉटम एप्रोच के साथ की। भाजपा ने सबसे पहले अपना चेहरा बदला। पहले प्रदेश अध्यक्ष हटाए गए, फिर नेता प्रतिपक्ष को बदल दिया गया। अब भाजपा 2023 का चुनाव पहली बार बने सांसद अरुण साव की अगुवाई में लड़ने जा रही है। पार्टी की सोच है कि कांग्रेस के हावी होते छत्तीसगढ़ियावाद का जवाब अरुण साव हो सकते हैं। प्रदेश में सत्ताधारी पार्टी कांग्रेस का कहना है कि चेहरे बदलने के बावजूद भाजपा को कुछ हासिल नहीं होने वाला। कांग्रेस के छत्तीसगढ़ प्रभारी पीएल पुनिया कहते हैं, 'केवल अध्यक्ष बदलने से कोई काम नहीं चलेगा। चार साल में चार अध्यक्ष बदल रहे हैं तो संगठन की क्या स्थिति है यह समझ सकते हैं।' साव मूल रूप से तेली हैं जो छत्तीसगढ़ का एक प्रमुख ओबीसी वर्ग है। पिछले चुनाव में भाजपा के समर्थक समझे जाने वाले राज्य के साहू मतदाता स्थानांतरित हो गए थे जिसकी वजह से भाजपा को 10 साल के बाद प्रदेश से सत्ता गंवानी पड़ी। जानकारों का कहना है कि 2018 के विधानसभा चुनाव में ओबीसी मतदाता भाजपा से कांग्रेस की तरफ चले गए। इसकी सबसे बड़ी वजह कांग्रेस के मुख्यमंत्री भूपेश बघेल हैं। बघेल ओबीसी समाज से ताल्लुक रखते हैं और राज्य के एक अन्य प्रमुख वर्ग कुर्मी से आते हैं। 2023 के चुनाव में प्रदेश में भाजपा को फिर से सत्ता में लाने के उद्देश्य से एक मजबूत ओबीसी चेहरे को कमान सौंपी गई है।

भाजपा ने प्रदेश के मुखिया का चेहरा क्या बदला पार्टी, आरएसएस और इसके आनुषांगिक संगठनों की 2023 विधानसभा चुनाव को लेकर क्या भूमिका होगी, इस पर विस्तार से विचार-मंथन कर रणनीति करती नजर आने लगी। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) की रायपुर में 10 सितंबर को हुई तीन दिवसीय समन्वय बैठक उसी का संकेत है। भाजपा वोटरों पर अपनी मजबूत पकड़ बनाने के उद्देश्य से प्रदेश में धान और धर्म को अपना प्रमुख हथियार बनाकर चल रही है। पार्टी धर्मांतरण और धान को लेकर प्रदेशभर में आंदोलन कर चुकी है। इसके अलावा राज्य में बड़े स्तर पर भ्रष्टाचार, खाद आपूर्ति की समस्या, अघोषित बिजली कटौती, आदि मुद्दों को समय-समय पर उठाती रही है। सत्ता से बेदखल होने के तीन वर्ष बाद हुए नगरीय निकाय के चुनाव में उसे खासी सफलता नहीं मिल पाई। लगभग तीन वर्ष के अंतराल के बाद हुए इस महत्वपूर्ण चुनाव में कांग्रेस ने भाजपा को एक बार फिर से साफ कर डाला। ठीक वैसा जैसे उसने 2018 में किया था जब 90 में से 70 सीटों पर कांग्रेस ने जीत हासिल की थी। कांग्रेस ने 14 निकायों पर कब्जा कर लिया। कमल मात्र एक पर ही खिल पाया। कांग्रेस के इस दमदार प्रदर्शन का श्रेय सीधे भूपेश बघेल के नेतृत्व के खाते में गया।

● **रायपुर से टीपी सिंह**

हम साथ-साथ हैं

छत्तीसगढ़ की सियासत में जब भी मुख्यमंत्री भूपेश बघेल और मंत्री टीएस सिंह देव की तस्वीरें एक साथ सामने आती हैं तो छत्तीसगढ़ की राजनीतिक सरगर्मियां तेज हो जाती हैं। लंबे अरसे बाद एक बार फिर दोनों की तस्वीर एक साथ सामने आई है। पिछले कई दिनों से मुख्यमंत्री और टीएस सिंह देव के बयानों में विरोधाभास देखने को मिल रहा था। लेकिन फिर से एक साथ की तस्वीर सामने आने से छत्तीसगढ़ की राजनीतिक गलियों में तरह-तरह बात हो रही है। छत्तीसगढ़ में जब भी जय और वीरू की तस्वीर एक साथ सामने आती है छत्तीसगढ़ की राजनीतिक सरगर्मियां बढ़ जाती है। आप सोच रहे होंगे कि जय और वीरू कौन हैं? वैसे तो राजनीतिक से जुड़े लोग जय और वीरू को जानते हैं। दरअसल जय मतलब छत्तीसगढ़ के स्वास्थ्य मंत्री टीएस सिंह देव और वीरू मतलब छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री भूपेश बघेल। दरअसल छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री भूपेश बघेल का भेंट मुलाकात दौरा चल रहा है और इसी कड़ी में मुख्यमंत्री भूपेश बघेल भेंट मुलाकात करने कवर्धा के लिए जाने वाले थे। इससे पहले रायपुर से हेलीकॉप्टर से जाने से पहले एक तस्वीर सामने आई जिसमें मुख्यमंत्री भूपेश बघेल और स्वास्थ्य मंत्री टीएस सिंह देव हेलीकॉप्टर पर एक साथ बैठे हुए नजर आ रहे थे।

महाराष्ट्र में शिवसेना के दो फाड़ होने के बाद अब नाम और चुनाव चिन्ह को लेकर रस्साकशी मची हुई है। उद्धव ठाकरे ने जो नाम और चुनाव चिन्ह मांगा है, वह मिलना मुश्किल है।

उद्धव की तीसरी हार!

उद्धव ठाकरे चुनाव निशान और पार्टी के नाम को लेकर बुरी तरह फंस गए हैं। अंधेरी विधानसभा सीट पर उपचुनाव के चलते चुनाव आयोग ने शिवसेना पार्टी का नाम और चुनाव निशान धनुष बाण दोनों फ्रीज कर दिए हैं। दोनों पक्षों को नया नाम और नया निशान चुनने को कहा गया है। सरकार गंवाने के बाद उद्धव ठाकरे की यह दूसरी बड़ी हार हुई है। अब उनकी तीसरी हार होगी, जब चुनाव आयोग उन्हें उनकी ओर से सुझाए गए तीनों चुनाव निशान ठुकरा देगा। इसकी संभावना इसलिए बनी है क्योंकि चुनाव आयोग की ओर से जारी 197 फ्री चुनाव निशानों की सूची में ये तीनों चुनाव निशान नहीं हैं।

उद्धव ठाकरे ने त्रिशूल, मशाल और उगता सूरज में कोई एक चुनाव निशान मांगा है। चुनाव आयोग की ओर से शिवसेना का नाम और निशान धनुष बाण फ्रीज किए जाने से तमतमाए उद्धव ठाकरे कैंप ने पहले सुप्रीम कोर्ट में जाने की धमकी दी थी, लेकिन वकीलों ने उन्हें सलाह दी कि सुप्रीम कोर्ट चुनाव आयोग के काम में दखल नहीं देगा। पहले भी कभी सुप्रीम कोर्ट ने चुनाव आयोग की प्रक्रिया के दौरान किसी काम में दखल नहीं दिया है। वैसे भी चुनाव आयोग को सुप्रीम कोर्ट ने ही पार्टी के नाम और निशान पर फैसला करने को कहा है। चुनाव आयोग ने भी परंपरा के अनुसार ही आदेश जारी किए हैं। इसी तरह रामविलास पासवान की पार्टी का नाम और निशान फ्रीज हुआ था। इसी तरह कांग्रेस का विभाजन हुआ तो इंडियन नेशनल कांग्रेस नाम और चुनाव निशान दो बैलों की जोड़ी जब्त हो गया था। इंदिरा गांधी को इंदिरा कांग्रेस नाम मिला था। बाद में इंदिरा गांधी ने इंडियन नेशनल कांग्रेस नाम बहाल करवाया।

चुनाव आयोग ने शिवसेना के दोनों गुटों को तीन-तीन नए नाम और तीन-तीन नए निशानों का ऑप्शन देने को कहा था। वकीलों से राय के बाद उद्धव ठाकरे ने मीटिंग करके तीन नाम और तीन निशानों का सुझाव दिया है। नाम तो मिल सकता है, लेकिन उनके सुझाए गए तीनों निशानों में से कोई भी निशान मिलना मुश्किल है। उद्धव ठाकरे ने चुनाव आयोग को भेजी अपनी चिट्ठी में सबसे पहले तो चुनाव आयोग के फैसले पर यह कहते हुए आपत्ति उठाई है कि उनकी ओर से दाखिल किए गए दस्तावेज पढ़ने से पहले ही चुनाव आयोग ने शिवसेना का नाम और निशान फ्रीज करने का फैसला कर लिया, जो न्याय के सिद्धांत के खिलाफ है। फिर अपनी चिट्ठी में उद्धव ठाकरे ने अपील की है कि जिस क्रम में तीनों नाम और चुनाव निशान दिए गए हैं, उसी क्रम में उन पर विचार किए जाएं।

यानी वरीयता के हिसाब से शिवसेना बालासाहेब ठाकरे नाम और त्रिशूल चुनाव निशान पर विचार किया जाए। अगर इन्हें देना संभव ना हो तब इसके बाद क्रम में दिए गए नामों और चुनाव निशानों पर विचार किया जाए। दूसरे नंबर पर शिवसेना उद्धव बालासाहेब ठाकरे नाम है और तीसरे नंबर पर शिवसेना प्रबोधनकार ठाकरे नाम का विकल्प दिया है। इसी तरह त्रिशूल के बाद मशाल और उगता सूरज में से कोई एक चुनाव निशान मांगा है। लेकिन चुनाव आयोग की वेबसाइट पर दर्शाए गए फ्री चुनाव निशानों की सूची में ये तीनों निशान नहीं हैं। उगता सूरज डीएमके यानी तमिलनाडु की द्रमुक पार्टी का चुनाव निशान है। वह क्षेत्रीय पार्टी है। लेकिन चुनाव आयोग की फ्री निशानों की सूची में उगता सूरज को नहीं रखा गया। जैसे आंध्र प्रदेश और तेलंगाना को छोड़कर ट्रक का चुनाव निशान फ्री है। या बिहार और झारखंड को छोड़कर चिमटा बाकी राज्यों में फ्री है। फारवर्ड ब्लॉक और महाराष्ट्रवादी गोमान्तक पार्टी का चुनाव निशान शेर है, क्योंकि दोनों अलग-अलग राज्यों की क्षेत्रीय पार्टियां है। इसी तरह शिवसेना और झारखंड मुक्ति मोर्चा का चुनाव निशान धनुष बाण है, क्योंकि दोनों क्षेत्रीय पार्टियां है। इसलिए उगता सूरज पर चुनाव आयोग विचार कर सकता है। लेकिन उगता सूरज फ्री चुनाव निशानों की सूची में नहीं है, इसलिए नहीं कहा जा सकता कि चुनाव आयोग इस पर विचार करेगा ही।

अगर शिवसेना को तीनों ही नाम नहीं मिले तो वह फिर कोर्ट जाने पर विचार करेगी। शिवसेना तीर कमान से पहले तलवार और ढाल, रेलवे इंजन और नारियल के पेड़ चुनाव निशानों पर चुनाव लड़ती रही थी। इनमें से नारियल का पेड़ चुनाव निशानों की फ्री सूची में पड़ा था, लेकिन उद्धव ठाकरे ने वह नहीं मांगा। इसी तरह तुरा बजाता आदमी का चुनाव निशान फ्री पड़ा था, शिवसेना के जलसों में तुरा बजाने की परम्परा रही है, इसलिए यह निशान उनको सूट करता लेकिन उद्धव ठाकरे की सूची में यह निशान भी नहीं दिया गया। अब समझने वाली बात यह है कि चुनाव आयोग के फैसले से कौन हारा और कौन जीता? जो इस विवाद को गहराई से नहीं समझते, उनकी नजर में दोनों हार गए। लेकिन यह आधा सच है। पूरा सच यह है कि फिलहाल यह लड़ाई सिर्फ उद्धव ठाकरे हारे हैं। शिंदे तो मैदान में हैं ही नहीं। शिंदे का मकसद उद्धव गुट को शिवसेना के नाम और निशान को इस्तेमाल करने से रोकना था, वह उसमें कामयाब हो गए। शिंदे गुट ने अंधेरी की सीट पहले ही अपनी सहयोगी भाजपा को दे दी है। शिंदे गुट भाजपा के उम्मीदवार मुरजी पटेल का समर्थन कर रहा है इसलिए फिलहाल तो उसको चुनाव निशान और पार्टी के नाम की जरूरत है ही नहीं।

● **बिन्दु माथुर**

चुनाव आयोग करेगा फैसला

वह चुनाव आयोग से नए नाम और नए चुनाव निशान के लिए दावा पेश न भी करे, तो उसे कोई फर्क नहीं पड़ता। वह चुनाव आयोग को कह सकता है कि वह उसके अंतिम फैसले का इंतजार करेगा। अंधेरी विधानसभा सीट शिवसेना के ही विधायक रमेश लटके के देहांत से खाली हुई थी। उद्धव ठाकरे ने रमेश लटके की पत्नी ऋतुजा लटके को टिकट दिया है। ठाकरे गुट चाहता था कि अंधेरी विधानसभा चुनाव के बाद फैसला हो, तब तक उन्हें पार्टी का नाम और सिंबल इस्तेमाल करने दिया जाए। इसीलिए वह सुप्रीम कोर्ट भी गया था, लेकिन सुप्रीम कोर्ट ने फैसला चुनाव आयोग पर छोड़ दिया। उद्धव गुट ने आयोग से अनुरोध किया था कि जब तक सभी दस्तावेज जमा नहीं कर दिए जाते तब तक आयोग जल्दबाजी में सुनवाई नहीं करे। साथ ही दलील दी कि उपचुनाव में एकनाथ शिंदे खेमा अपना उम्मीदवार नहीं उतारेगा, तो उन्हें चुनाव निशान की अभी कोई जरूरत नहीं है। लेकिन मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने चुनाव आयोग से इस मसले पर जल्द सुनवाई का अनुरोध किया, क्योंकि उनका मकसद तो उद्धव ठाकरे से शिवसेना का नाम और धनुष बाण छीनना था, उसमें वह कामयाब हो गए। इसलिए उद्धव गुट की दोनों जगह हार हुई, शिंदे गुट की दोनों जगह जीत हुई है।

गहलोत की उल्टी गिनती शुरू...

एक ऐसे समय में जब राहुल गांधी कांग्रेस पार्टी को मजबूती देने के उद्देश्य से पूरे दल-बल के साथ भारत जोड़ो यात्रा के लिए निकले हों। जो कुछ भी अभी बीते दिनों राजस्थान में हुआ है उसने कांग्रेस पार्टी, सोनिया गांधी, राहुल गांधी को आईना दिखा दिया है। राजस्थान में जो सियासी ड्रामा हुआ है उसका गवाह पूरा देश बना है। सवालों के घेरे में अशोक गहलोत हैं। राजस्थान में कांग्रेस विधायकों के बगावती तेवरों पर पर्यवेक्षकों की रिपोर्ट में अशोक गहलोत को क्लीन चिट दी गई है। जाहिर है ये फैसला सिर्फ पर्यवेक्षकों का नहीं होगा। मामले के अंतर्गत यदि किसी ने रहमदिली दिखाई है तो वो और कोई नहीं बल्कि सोनिया गांधी हैं। दरअसल अशोक गहलोत का शुमार पार्टी के पुराने नेताओं में तो होता ही है। साथ ही वो एक ऐसे व्यक्ति हैं जिनका शुमार सोनिया गांधी के विश्वासपात्रों में होता है। माना जा रहा है सोनिया ने अशोक गहलोत को उनकी स्वामिभक्ति के ईनाम से नवाज दिया है और ये कयास यूं ही नहीं हैं। राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने पर्याप्त संकेत दिए हैं कि वह शीर्ष पद पर बने रहेंगे। दरअसल उन्होंने लोगों से सीधे बजट सुझाव भेजने के लिए कहा है। गहलोत ने युवाओं, छात्रों और आम जनता से अपील की कि वे अपने सुझाव सीधे उन्हें भेजें ताकि सरकार बेहतर योजनाएं ला सके। चूंकि तमाम सियासी ड्रामे के बावजूद राजस्थान की कुर्सी पर गहलोत बैठेंगे तो ये कहना भी अतिश्योक्ति नहीं है कि अशोक गहलोत सालभर सार्वजनिक रूप से सोनिया चालीसा पढ़ें तो भी कम है।

गौरतलब है कि अशोक गहलोत, जिन्होंने कांग्रेस राष्ट्रपति चुनाव की दौड़ से बाहर कर दिया, ने कहा कि सोनिया गांधी तय करेंगी कि मुख्यमंत्री कौन होगा। बताते चलें कि अभी बीते दिनों, जब राजस्थान में राजनीतिक संकट पैदा हुआ था तो उन्होंने सोनिया गांधी से मुलाकात की और विधायकों के सामूहिक विद्रोह के लिए उनसे माफी मांगी थी। तीन बार के राजस्थान के मुख्यमंत्री रह चुके गहलोत ने खुद को पार्टी का अनुशासित सिपाही बताया था और राज्य में हो रहे घटनाक्रम पर दुख जताया था। सवाल ये है कि जो कुछ भी गहलोत ने राजस्थान में किया क्या वो हल्की बात थी? या फिर ये कि क्या वो माफ करने लायक था? ध्यान रहे जिस समय राजस्थान में ये सब नाटक चल रहा था, तो ये मान लिया गया था कि सारी गाज गहलोत पर गिरेगी लेकिन बाद में जब गहलोत ने दिल्ली में सोनिया गांधी से मुलाकात की और उन्हें माफ कर दिया गया तो ये अपने में स्पष्ट हुआ कि गहलोत को सोनिया ने रहम की निगाह से देखा है तो उसकी एकमात्र वजह उनकी वफादारी है। जिस तरह गहलोत के किये की सजा उनके तीन वफादारों को मिली है सवाल ये भी है कि क्या ये पूरी स्क्रिप्ट पहले ही लिखी जा चुकी थी?

2019 के लोकसभा चुनाव में कांग्रेस को मिली शर्मनाक हार के बाद पार्टी अध्यक्ष राहुल गांधी ने अपने पद से इस्तीफा दे दिया था। सियासी गलियारों में इसकी काफी चर्चा रही थी कि कांग्रेस वर्किंग कमेटी की बैठक में जब राहुल गांधी ने कांग्रेस अध्यक्ष पद से इस्तीफे की पेशकश की थी, तब राहुल गांधी को अशोक गहलोत, पी चिदंबरम और कमलनाथ ने समझाने की कोशिश की थी। लेकिन, इस पर राहुल गांधी ने भरी सभा में इन तीनों ही नेताओं पर खुलकर अपनी भड़ास निकाली थी।

राहुल गांधी ने कहा था कि मप्र के मुख्यमंत्री कमलनाथ, राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत और कांग्रेस के वरिष्ठ नेता पी चिदंबरम अपने बेटों को टिकट दिलवाने की जिद लेकर बैठ गए थे। वैसे, ऐसी एक अन्य बैठक में (जिसमें कांग्रेस के असंतुष्ट गुट जी-23 के नेता भी शामिल थे) ये भी कहा गया था कि कांग्रेस को खत्म करने वाले इसी कमरे में मौजूद हैं। बताना जरूरी है कि लोकसभा चुनाव 2019 में कमलनाथ के बेटे नकुलनाथ और पी चिदंबरम के बेटे कार्ती चिदंबरम जीत गए थे। लेकिन, अशोक गहलोत के बेटे वैभव गहलोत को हार का सामना करना पड़ा था। माना जा रहा था कि इस घटना के बाद से ही राहुल गांधी का अशोक गहलोत के ऊपर से भरोसा कम होता गया। हालांकि, सचिन पायलट पहले से ही राहुल गांधी के करीबी रहे हैं। लेकिन, सोनिया गांधी के कहने पर राहुल ने गहलोत पर भरोसा बनाए रखा था। जो राजस्थान में हुई हालिया बगावत के बाद पूरी तरह से टूट चुका है।

अशोक गहलोत को राजस्थान की राजनीति का जादूगर कहा जाता है। लेकिन, इस बार उनका ये जादू कांग्रेस आलाकमान पर नहीं चल सका। यही कारण रहा कि सोनिया गांधी से मुलाकात के बाद अशोक गहलोत खुद को 50 सालों से गांधी परिवार का वफादार और कांग्रेस आलाकमान की कृपा से मुख्यमंत्री बनाए जाने की बात कहते नजर आए। दरअसल, राजस्थान में विधायकों के इस्तीफा देने के पीछे मुख्यमंत्री अशोक गहलोत को ही मुख्य सूत्रधार माना गया। और, इस बगावत से अशोक गहलोत का सियासी कद कांग्रेस आलाकमान यानी गांधी परिवार की नजरों में घट गया।

● **जयपुर से आर.के. बिन्नानी**

गहलोत के पास विकल्प क्या है?

कांग्रेस आलाकमान अगर सचिन पायलट को मुख्यमंत्री बनाने का फैसला करता है। तो, अशोक गहलोत के पास उसे मानने के अलावा कोई विकल्प नहीं होगा। क्योंकि, कांग्रेस आलाकमान के फैसले का शायद ही कोई नेता विरोध करेगा। और, अगले विधानसभा चुनाव में कांग्रेस की ओर से टिकट मिलने का भरोसा मिलने के बाद विधायकों को गहलोत का पाला छोड़कर सचिन पायलट के खेमे में आने में समय नहीं लगेगा। वैसे भी अशोक गहलोत उम्र के इस दौर में कांग्रेस छोड़ने या नई पार्टी बनाने का खतरा नहीं उठा पाएंगे। और, अगर ऐसा हो भी जाता है, तो उनके सफल होने की संभावनाएं बहुत ज्यादा नहीं हैं। क्योंकि, राजस्थान में हर चुनाव में सरकार बदलने का चलन रहा है। तो, शायद ही मतदाता फिर से अशोक गहलोत पर भरोसा जताएं। जिस तरह से अशोक गहलोत ने राजस्थान में विधायकों की बगावत पर नैतिक जिम्मेदारी लेते हुए कांग्रेस अध्यक्ष के चुनाव से खुद को दूर कर लिया। संभव है कि कांग्रेस आलाकमान के दबाव के आगे नैतिक जिम्मेदारी लेते हुए अशोक गहलोत खुद ही मुख्यमंत्री पद छोड़ दें। और, सचिन पायलट को मुख्यमंत्री बनाकर अपने किसी करीबी के लिए उपमुख्यमंत्री का पद मांग लें। वैसे, अशोक गहलोत को मिली क्लीन चिट के बाद ये भी संभावना है कि कांग्रेस आलाकमान उन्हें मुख्यमंत्री पद पर बनाए रखे। लेकिन, पायलट को प्रदेश अध्यक्ष बनाकर उनके पर कतरने की कोशिश करे। जैसा पंजाब में किया गया था। इसके साथ ही अगले साल होने वाले विधानसभा चुनाव से पहले कई महत्वपूर्ण जिम्मेदारियां सचिन पालयट को देकर गहलोत को सियासी रूप से साइडलाइन किया जा सकता है।

बुल्डोजर के साथ विकास भी

उप्र में योगी आदित्यनाथ की सरकार ने अपने दूसरे कार्यकाल के छह महीने पूर्ण कर लिए हैं। राज्य के राजनीतिक इतिहास में लगभग साढ़े तीन दशक के पश्चात किसी दल को दोबारा सत्ता में लाने का इतिहास रचने वाले योगी आदित्यनाथ ने अपने मुख्यमंत्रित्व कार्यकाल के दौरान बड़े धैर्य एवं साहस के साथ अनेक चुनौतियों का सामना किया। उन्हें जहां विरोधियों का प्रहार, आरोप-प्रत्यारोप एवं बुल्डोजर से मकान तोड़ने जैसे प्रकरणों का सामना करना पड़ा, वहीं अपनी जन हितैषी नीतियों से उन्होंने जनता का समर्थन एवं आशीर्वाद भी प्राप्त किया। उन्होंने आजमगढ़ एवं रामपुर लोकसभा क्षेत्र से उपचुनाव में विजय प्राप्त कर यह सिद्ध कर दिया कि वह वर्ष 2024 में होने वाले लोकसभा चुनाव के लिए पूर्ण रूप से तैयार हैं तथा विजयश्री प्राप्त करने के लिए समर्थ भी हैं।

वास्तव में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ भाजपा की रीतिनीति के अनुसार हिंदुत्व की छवि को सुदृढ़ करने का निरंतर प्रयास कर रहे हैं। प्राचीन शहरों के नाम परिवर्तित करना तथा काशी विश्वनाथ कॉरिडोर का लोकार्पण इसके उदाहरण हैं। अयोध्या में मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम के मंदिर के निर्माण का कार्य चल रहा है। सरकार नमामि गंगे योजना के अंतर्गत गंगा को स्वच्छ एवं निर्मल करने पर विशेष बल दे रही है। गंगा का प्रदूषण कम करने के लिए स्मार्ट गंगा सिटी परियोजना पर कार्य चल रहा है।

योगी सरकार ने राज्य में पर्यटन विशेषकर धार्मिक पर्यटन को भी बढ़ावा दिया है। राज्य में गौ संरक्षण और संवर्धन के लिए मुख्यमंत्री निराश्रित गौवंश सहभागिता योजना प्रारंभ की गई है। राज्य में बेघरों को आवास देने के लिए उप्र आवास विकास योजना प्रारंभ की गई। निर्धन परिवारों को आर्थिक सहायता उपलब्ध कराने के लिए राष्ट्रीय पारिवारिक लाभ योजना आरंभ की गई। प्रवासी श्रमिकों को रोजगार देने के लिए आत्मनिर्भर उप्र रोजगार अभियान प्रारंभ किया गया। बेरोजगारों को स्वरोजगार के लिए ऋण उपलब्ध कराने के लिए मुख्यमंत्री युवा स्वरोजगार योजना आरंभ की गई।

बेरोजगार युवाओं को प्रशिक्षण दिलाने के लिए उप्र कौशल विकास मिशन तथा मुख्यमंत्री शिक्षुता प्रोत्साहन योजना प्रारंभ की गई। राज्य के युवाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए मुख्यमंत्री ग्रामोद्योग रोजगार योजना प्रारंभ की गई। बेरोजगार युवाओं को बेरोजगारी भत्ता प्रदान करने के लिए उप्र बेरोजगारी भत्ता नामक योजना आरंभ की गई। राज्य के श्रमिकों को सरकारी योजनाओं का पूरा लाभ देने के लिए श्रमिक पंजीकरण योजना प्रारंभ की गई। श्रमिकों के भरण पोषण के लिए राज्य में श्रमिक भरण पोषण योजना आरंभ की गई है। इसके साथ ही राज्य की समृद्धि के लिए उद्योगों को बढ़ावा दिया जा रहा है।

निवेशकों की पसंद बना उप्र

पिछले पांच वर्षों में राज्य में आईटी एवं इलेक्ट्रॉनिक्स क्षेत्र में सबसे अधिक 94,632 करोड़ रुपए का निवेश हुआ है। पिछले साढ़े पांच वर्ष में योगी सरकार ने 4.68 लाख करोड़ रुपए के समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं, जिनमें से 3.82 लाख करोड़ रुपए की परियोजनाएं पूर्ण हो चुकी हैं। योगी सरकार के द्वितीय कार्यकाल में रोजगार मेलों के माध्यम से 93 हजार से अधिक युवाओं को रोजगार प्राप्त हुआ है। सरकार ने अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में पदक जीतने वाले और विभिन्न विभागों में 24 पदों की पहचान करने वाले खिलाड़ियों को राजपत्रित अधिकारी बनाने का भी निर्णय लिया है। एक जिला एक खेल योजना के अंतर्गत प्रत्येक जिले में खेलो इंडिया सेंटर स्थापित किए जा रहे हैं। राज्य में खेलो इंडिया की 15 परियोजनाएं पूर्ण हो चुकी हैं। स्वास्थ्य के क्षेत्र में भी योगी सरकार सराहनीय कार्य कर रही है। राज्य के सभी 4600 प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों में हेल्थ एटीएम लगाए जा रहे हैं। राज्य के 65 जिलों में चिकित्सा महाविद्यालय चल रहे हैं, जबकि गोरखपुर और रायबरेली में एम्स चल रहे हैं। इसके अतिरिक्त आयुष्मान कार्ड के माध्यम से राज्य के 6.51 करोड़ लोगों को 5 लाख रुपए तक के स्वास्थ्य बीमा के अंतर्गत लाया गया है।

योगी सरकार ने कृषि क्षेत्र पर भी विशेष ध्यान दिया है। राज्य में जैविक खेती को प्रोत्साहन देने के लिए परम्परागत खेती विकास योजना चलाई जा रही है। खेतों को पर्याप्त सिंचाई जल उपलब्ध कराने के लिए उप्र नि:शुल्क बोरिंग योजना तथा उप्र किसान उदय योजना संचालित की जा रही है। इनके अतिरिक्त बीज ग्राम योजना के अंतर्गत किसानों को धान एवं गेहूं के बीज पर विशेष अनुदान दिया जा रहा है। पारदर्शी किसान सेवा योजना के अंतर्गत किसानों को आर्थिक सहायता प्रदान की जा रही है। मुख्यमंत्री किसान एवं सर्वहित बीमा योजना के अंतर्गत किसानों को समुचित उपचार की सुविधा प्रदान की जा रही है। किसानों को ऋण के बोझ से मुक्त करने के लिए किसान ऋण मोचन योजना प्रारंभ की गई। मुख्यमंत्री कृषक दुर्घटना कल्याण योजना के अंतर्गत किसानों को वित्तीय सहायता प्रदान की जा रही है।

राज्य में अनाथ बच्चों को आसरा देने के लिए मुख्यमंत्री बाल सेवा योजना प्रारंभ की गई। महिला सशक्तिकरण के लिए भी सरकार अनेक योजनाएं चला रही है। मुख्यमंत्री कन्या सुमंगला योजना के अंतर्गत निर्धन परिवारों की पुत्रियों को शिक्षा के लिए वित्तीय सहायता प्रदान की जा रही है। उप्र भाग्यलक्ष्मी योजना के अंतर्गत पुत्री की शिक्षा और विवाह के लिए आर्थिक सहायता प्रदान की जा रही है। इसके अतिरिक्त लोगों को घर बैठे बैंकिंग सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिए बैंकिंग संवाददाता सखी योजना प्रारंभ की गई है। इससे जहां लोगों को घर पर बैंकिंग सुविधाएं प्राप्त हो रही हैं, वहीं महिलाओं को भी रोजगार प्राप्त हुआ है। राज्य में अनेक पेंशन योजनाएं संचालित की जा रही हैं, जिनमें उप्र पेंशन योजना, विधवा पेंशन योजना तथा उप्र दिव्यांगजन पेंशन योजना सम्मिलित हैं। सरकार लड़कियों और दिव्यांगों के विवाह के लिए अनुदान प्रदान कर रही है। उप्र विवाह अनुदान योजना के अंतर्गत लड़कियों के विवाह के लिए सरकार द्वारा अनुदान प्रदान किया जाता है। दिव्यांगजन विवाह प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत दिव्यांगजनों के विवाह लिए आर्थिक सहायता प्रदान की जाती है।

● **लखनऊ से मधु आलोक निगम**

बिहार में राजनीतिक प्रयोग

नीतीश कुमार और तेजस्वी यादव की मंजिलों के नाम बस अलग-अलग हैं। वास्तव में वे एक जैसी ही हैं। थोड़ी दूर, थोड़ी नजदीक। एक बड़ा सपना, एक, अपेक्षाकृत, छोटा सपना-और वे ही बिहार में सत्ता परिवर्तन का आधार बनी हैं। बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने आरजेडी नेता लालू यादव के साथ फिर से हाथ मिलाकर बिहार से बदलाव का बिगुल बजाने की कोशिश की है। बदलाव से मतलब केंद्र में सत्ता परिवर्तन से है। नीतीश कुमार और लालू यादव ही नहीं, तेजस्वी यादव भी कहने लगे हैं कि बिहार ने जो रास्ता दिखाया है, देश भी दिखा सकता है। लालू यादव के साथ नीतीश कुमार अब तो कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी से भी एक मुलाकात कर चुके हैं। चूंकि सोनिया गांधी कांग्रेस अध्यक्ष के चुनाव का इंतजार कर रही हैं, इसलिए 2024 में विपक्ष को एकजुट करने पर काम कुछ दिन के लिए होल्ड कर रखा है। ये बात अलग है कि कांग्रेस अध्यक्ष के चुनाव से पहले ही राजस्थान में भी पंजाब और छत्तीसगढ़ जैसा ही संकट खड़ा हो गया है, तीव्रता थोड़ी ज्यादा जरूर है।

नीतीश कुमार और लालू यादव के नए सिरे से हाथ मिलाने की जो वजह है वो भी बदली हुई है। 2015 में जो महागठबंधन हुआ था वो बिहार में सत्ता हासिल करने के लिए रहा, लेकिन नई पारी तेजस्वी यादव को मुख्यमंत्री बनाने के लिए मानी जा रही है। बदले में नीतीश कुमार को विपक्ष के नेतृत्व के लिए लालू यादव को सपोर्ट करना है। विपक्ष के नेतृत्व का मतलब तो सत्ता मिलने पर प्रधानमंत्री की कुर्सी का दावेदार भी होता है, लेकिन नीतीश कुमार अब तक ऐसी बातों से हर बार इनकार करते आए हैं। एक तरफ लालू यादव बेटे को बिहार का अगला मुख्यमंत्री बनाने में जुटे हुए हैं, दूसरी तरफ उपमुख्यमंत्री तेजस्वी यादव फिर से कानूनी मुश्किलों से जूझने लगे हैं। आईआरसीटीसी घोटाले के एक केस में तेजस्वी यादव को अब 18 अक्टूबर को स्पेशल कोर्ट में व्यक्तिगत रूप से पेश भी होना है। तेजस्वी यादव अक्टूबर, 2018 से जमानत पर चल रहे हैं।

सीबीआई ने कोर्ट में एक अर्जी देकर आरोप लगाया है कि तेजस्वी यादव ने एक पब्लिक मीटिंग के दौरान जांच एजेंसी को नतीजा भुगतने की धमकी दी थी। और तेजस्वी यादव के बयान का हवाला देते हुए सीबीआई ने उनकी जमानत रद्द करने की अदालत से गुजारिश की है। असल में, तेजस्वी यादव आरजेडी नेताओं के घर हुई छापेमारी पर रिएक्शन दे रहे थे। तेजस्वी यादव अधिकारियों को संवैधानिक संगठन के कर्तव्य का ईमानदारी से पालन करने की नसीहत देना चाहते थे, लेकिन तभी गुस्सा फूट पड़ा। और प्रेस कांफ्रेंस में कहने लगे, क्या सीबीआई अधिकारियों की मां-बहनें और बच्चे नहीं होते? क्या उनका परिवार नहीं है? क्या वे हमेशा सीबीआई अधिकारी ही रहेंगे? क्या वे रिटायर नहीं होंगे? एनडीए छोड़कर महागठबंधन में आने के बाद नीतीश कुमार ने तेजस्वी का बचाव भी किया था। केंद्र सरकार पर कटाक्ष करते हुए, नीतीश कुमार लोगों को समझाने की कोशिश कर रहे थे कि आरोप तो लगाए गए थे, लेकिन इतने दिनों तक कुछ साबित तो हुआ नहीं। अब वही चैलेंज लगता है तेजस्वी यादव के लिए मुसीबत बनकर मंडराने लगा है।

कोर्ट में पेशी के बाद अब तो अदालत तय करेगी कि जमानत देनी है या जेल भेजना है? मीडिया में तेजस्वी यादव को लेकर सवाल होने लगा है कि क्या अब उनको जेल जाना पड़ेगा? कानून के मुताबिक जो भी एक्शन हो, अभी तो नई मुश्किलों की आशंका होने ही लगी है। कांग्रेस की ही तरह आरजेडी में भी अध्यक्ष पद के लिए चुनाव होना है। लेकिन वहां परिवारवाद की राजनीति से बचने के लिए राहुल गांधी की तरह तेजस्वी यादव ने कोई शर्त नहीं रखी है। चारा घोटाले में सजा काट रहे लालू यादव जमानत पर रिहा हैं, और अध्यक्ष पद के लिए नामांकन भी दाखिल कर चुके हैं। समाजवादी पार्टी में भी अभी-अभी नए अध्यक्ष का चुनाव हुआ है और अखिलेश यादव फिर से भरोसा जताने के लिए कार्यकर्ताओं का आभार भी जता चुके हैं। दिल्ली में नामांकन के दौरान ही लालू यादव से हाल की राजनीतिक गतिविधियों को लेकर सवाल पूछे गए। सवाल तो 2024 में भाजपा को हराने जैसी स्थिति से लेकर पीएफआई पर पाबंदी लगाए जाने तक को लेकर हुए, लेकिन लालू यादव का सबसे ज्यादा दिलचस्प जवाब तेजस्वी यादव और नीतीश कुमार को लेकर रहा, इसलिए भी क्योंकि दोनों को लेकर लालू यादव एक जैसे आश्वस्त नहीं लगे। लालू यादव से दिल्ली में एक साथ दो सवाल पूछे गए थे। एक, तेजस्वी यादव को लेकर और दूसरा, नीतीश कुमार को लेकर। जाहिर है तेजस्वी यादव को लेकर बिहार के मुख्यमंत्री पद से जुड़ा सवाल ही पूछा जाएगा और जब नीतीश कुमार की बात होगी तो ध्यान प्रधानमंत्री पद की कुर्सी पर ही जाएगा।

● **विनोद बक्सरी**

नीतीश की जुबान फिसलना और लालू का एनडोर्समेंट

पटना में एक कार्यक्रम था। कार्यक्रम तो किसी भी सरकारी आयोजन जैसा ही रहा, लेकिन नीतीश कुमार की जुबान फिसलने के कारण आयोजन का एक वीडियो क्लिप वायरल हो गया। कार्यक्रम में मुख्यमंत्री नीतीश कुमार और उपमुख्यमंत्री तेजस्वी यादव दोनों ही मौजूद थे। हाल फिलहाल देखने को यही मिल रहा है कि ज्यादातर काम नीतीश कुमार और तेजस्वी यादव मिल जुलकर ही कर रहे हैं। सोशल मीडिया पर एक ऐसा वीडियो भी लोग शेयर कर रहे थे जिसमें दोनों लोग साथ ही फीता काट रहे हैं। कोई दोनों के अलग-अलग फीते काटने पर सवाल उठा रहा था, तो फीते के ऊपर नीचे होने के हिसाब से आंकलन कर रहा था। हुआ ये था कि उस दिन नीतीश कुमार की जुबान फिसल गई और तेजस्वी यादव को माननीय मुख्यमंत्री कहकर संबोधित कर दिया, जबकि वो उनकी सरकार में उपमुख्यमंत्री हैं। लोग ये भी मानकर चल रहे हैं कि नीतीश कुमार अपनी तरफ से तेजस्वी यादव के बिहार के मुख्यमंत्री बनने की राह आसान करने में लगे हुए हैं, नीतीश कुमार के भाषण के उस हिस्से को भाजपा ने भी सोशल मीडिया पर शेयर किया और नीतीश कुमार को रबर स्टांप मुख्यमंत्री बताते हुए आश्रम चले जाने की सलाह दे डाली है। लोग शायद नीतीश कुमार की बातों को नजरअंदाज भी कर देते, लेकिन मुख्यमंत्री ने भूल सुधार की भी कोई कोशिश नहीं की। मारकाट वाली राजनीति में बवाल तो मचना ही था, लेकिन अगर नीतीश कुमार ने भी राहुल गांधी की तरह तत्काल प्रभाव से सुधार कर लिया होता तो जेडीयू नेताओं के पास बचाव का ऑप्शन भी होता।

संकट खड़ा करते बांग्लादेशी घुसपैठिए

केंद्र सरकार ने 2020 में जब राष्ट्रीय नागरिकता पंजीयन यानी एनआरसी बनाने की बात कही तब बिहार विधानसभा में एक प्रस्ताव रखा गया कि 'बिहार में राष्ट्रीय नागरिकता पंजीयन की कोई आवश्यकता नहीं है।' वर्ष 1951 से 2011 के बीच राष्ट्रीय स्तर पर मुस्लिम जनसंख्या में 4.31 प्रतिशत की वृद्धि हुई, जबकि संयुक्त पूर्णिया जिले में उनकी आबादी में 13.58 प्रतिशत की वृद्धि हुई।

आम तौर पर इस तथ्य से सभी अवगत हैं कि बांग्लादेश से अवैध रूप से भारत आए लोगों ने असम, बंगाल आदि राज्यों के अनेक हिस्सों में जनसंख्या के असंतुलन को बढ़ाने का काम किया है, लेकिन ऐसी ही स्थिति बिहार और झारखंड में भी बन रही है। चिंता की बात यह भी है कि बांग्लादेशी नागरिकों के साथ रोहिंग्या लोगों की भी देश में घुसपैठ हो रही है। नेपाल और बंगाल से लगा बिहार का सीमावर्ती जिला पूर्णिया विभाजित होकर चार जिलों में बंट गया है। इसमें से एक किशनगंज मुस्लिम बहुल जिला है और कटिहार एवं अररिया में जिस प्रकार मुस्लिम जनसंख्या में वृद्धि हो रही है, उसे देखते हुए यह कहा जा सकता है कि निकट भविष्य में ये जिले भी मुस्लिम बहुल हो जाएंगे।

कटिहार जिले के बारसोई प्रखंड में 1961 में हिंदू जनसंख्या 43,549 थी, जो 1971 में बढ़ने के बजाय घटकर 40,969 रह गई। अगस्त 1979 में असम में जब बांग्लादेशी घुसपैठ के खिलाफ वहां के लोगों ने आंदोलन छेड़ा, तब बिहार में भी हो रही घुसपैठ पर यहां के लोगों का ध्यान गया। 22 जुलाई, 1981 को बिहार विधानसभा में एक चर्चा में तब जनता पार्टी के विधायक रहे गणेश प्रसाद यादव ने कहा था, 'पूर्णिया में बांग्लादेशी घुसपैठियों का आना जारी है और वे ऊंची कीमतों पर जमीन खरीद कर बसते जा रहे हैं।' 19 जुलाई, 1982 को भाजपा के जनार्दन तिवारी के एक प्रश्न पर तत्कालीन सरकार ने यह स्वीकार किया था कि कुछ घुसपैठियों को बांग्लादेश लौटाया गया है। बिहार सरकार ने यह भी स्वीकार किया था कि केंद्र सरकार के निर्देश पर उसने घुसपैठियों की पहचान एवं उनके निष्कासन की योजना बनाकर उन्हें भेज दिया है।

एक समय पूर्णिया से माकपा के पूर्व विधायक अजीत सरकार ने भी बिहार में हजारों की संख्या में घुसपैठियों के आने की बात स्वीकारी थी। जुलाई 1992 में विधानसभा में घुसपैठ का प्रश्न उठाते हुए सुशील कुमार मोदी ने बिहार के 12 जिलों में घुसपैठ की बात कही थी, लेकिन 2009 में मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने पूर्णिया की एक सभा में घुसपैठ को नकार दिया था। हालांकि पिछली सदी के अंतिम दशक में घुसपैठ विरोधी संघर्ष समिति के बैनर तले बिहार में बांग्लादेशी घुसपैठ के खिलाफ आंदोलन चला, लेकिन बाद में यह विषय ठंडे बस्ते में डाल दिया गया।

केंद्र सरकार ने 2020 में जब राष्ट्रीय नागरिकता पंजीयन यानी एनआरसी बनाने की बात कही तब बिहार विधानसभा में एक प्रस्ताव रखा गया कि 'बिहार में राष्ट्रीय नागरिकता पंजीयन की कोई आवश्यकता नहीं है।' वर्ष 1951 से 2011 के बीच राष्ट्रीय स्तर पर मुस्लिम जनसंख्या में 4.31 प्रतिशत की वृद्धि हुई, जबकि संयुक्त पूर्णिया जिले में उनकी आबादी में 13.58 प्रतिशत की वृद्धि हुई। 1956 में राज्य पुनर्गठन के बाद कुछ मुस्लिम बहुल प्रखंडों एवं पंचायतों को बंगाल को दे दिया गया। 1961 से 2011 तक के आंकड़ों का विश्लेषण करने पर पता चलता है कि इस दौरान राष्ट्रीय स्तर पर मुस्लिम जनसंख्या में 3.52 प्रतिशत की वृद्धि हुई, पर इस अवधि में पूर्णिया में मुस्लिम जनसंख्या 8.26 प्रतिशत बढ़ी।

1961 में वर्तमान किशनगंज के सात प्रखंडों में से दो प्रखंडों में हिंदू बहुमत में थे, जिसमें से एक प्रखंड अब नए जिले का न केवल मुख्यालय है, बल्कि यह पूर्वोत्तर के राज्यों को भारत से जोड़ने का एकमात्र रेलवे एवं सड़क मार्ग है। यहां पांच दशकों में मुस्लिम जनसंख्या 14.19 प्रतिशत बढ़ी है। इसे ही 'चिकन नेक' कहा जाता है और यह अब मुस्लिम बहुल प्रखंड हो गया है। घुसपैठ के कारण मुस्लिम बहुल हुए इस प्रखंड को ही भारत से काटने की धमकी जेल में बंद शरजील इमाम ने दी थी।

किशनगंज की ही तरह कटिहार जिले का बारसोई प्रखंड आवागमन की दृष्टि भारत के लिए महत्वपूर्ण है। यह रेलवे का जंक्शन है। उपरोक्त पांच दशकों में बारसोई प्रखंड में मुस्लिम जनसंख्या में 16.33 प्रतिशत वृद्धि हुई। सितंबर 2021 में बिहार सरकार में मंत्री रहे रामसूरत राय ने जब यह कहा था कि घुसपैठिए आकर मठ, मंदिर और भूदान की जमीन पर कब्जा कर रहे हैं तो उन्हें नीतीश सरकार से बाहर करने की मांग जदयू के लोगों ने भी उठाई थी। न केवल घुसपैठिए, बल्कि बांग्लादेश के किन्नर भी पटना में आकर भारतीय किन्नरों के रोजगार छीन रहे हैं। पिछले साल पटना में भारतीय किन्नरों ने इसे लेकर प्रदर्शन भी किया था।

पिछले महीने कटिहार रेलवे स्टेशन पर कई रोहिंग्या युवतियां पकड़ी गईं, जिन्हें बांग्लादेशी नजरूल दिल्ली भेज रहा था। पिछले साल अक्टूबर में दिल्ली में पकड़े गए पाकिस्तानी अशरफ के पास से जो पासपोर्ट मिला था, उसे किशनगंज के एक सरपंच ने बनवाया था। आधार कार्ड, राशन कार्ड, मतदाता पहचान पत्र बनवाकर देश की सुरक्षा को खतरे में डालने के इस षड्यंत्र को रोकने में सरकार असफल रही है। पूर्णिया जिले के मुस्लिम बहुल बायसी प्रखंड में गत वर्ष मई में अनुसूचित जाति के लोगों के घरों को एक भीड़ ने जला दिया था और उन्हें गांव छोड़ने की धमकी दी थी। जिले का माहौल कैसा है, इसका एक प्रमाण यह है कि पटना उच्च न्यायालय के आदेश के बाद भी सीमावर्ती जिलों में घुसपैठियों के बारे में सूचना देने के लिए कुछेक को छोड़कर किसी जिले के प्रशासन ने न तो कोई विज्ञापन दिया और न ही किसी ने यह कहा कि उसके यहां बांग्लादेशी घुसपैठिए हैं। साफ है बांग्लादेशी घुसपैठ के कारण पूर्णिया, किशनगंज, कटिहार तथा अररिया के अनेक प्रखंड मुस्लिम बहुल प्रखंड हो गए हैं। इससे हिंदू पलायन को बाध्य हैं।

● **ऋतेन्द्र माथुर**

यूरोप में नव राष्ट्रवाद का उदय?

क्या यूरोप में नव राष्ट्रवाद का उदय हो रहा है? यह प्रश्न इसलिए महत्वपूर्ण हो जाता है क्योंकि यूरोपियन यूनियन के 27 में से 13 राष्ट्रों में राष्ट्रवादी विचारधारा की समर्थक पार्टियों का दबदबा है और सभी राष्ट्र अप्रवासी मुस्लिम शरणार्थियों को अपने राष्ट्र में शरण देने के विरोध में मुखर हो चुके हैं। पिछले आधे दशक में इन सभी राष्ट्रों में नव राष्ट्रवाद की लहर चली है जो अपने समकालीन अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प की नीतियों से भी प्रभावित रही है। ट्रम्प हंगरी के राष्ट्रवादी नेता विक्टर ओर्बन को यूरोप का स्टार बता चुके हैं तो पोलैंड के राष्ट्रवादी राष्ट्रपति आंद्रेज डूडा भी ट्रम्प के समर्थक हैं। इस दौरान यूरोप में राष्ट्रवादी पार्टियों का वोट प्रतिशत लगभग 55 फीसदी बढ़ चुका है। यूरोप युद्ध प्रभावित व आतंरिक समस्याओं का सामना कर रहे मुस्लिम देशों के मुस्लिमों को शरण देने की अपनी उदारवादी छवि के दौर से निकलकर अब प्रतिकार करने लगा है। इतिहास भी यूरोप का इस्लाम से विरोधाभास का जटिल सा रिश्ता दिखाता है जिसकी पुष्टि ऑटोमन साम्राज्य के दौर से होती है।

हाल ही में इटली में हुए आम चुनावों में दक्षिणपंथी पार्टी ब्रदर्स ऑफ इटली पार्टी की नेता जियोर्जिया मिलोनी प्रधानमंत्री का चुनाव जीत गई हैं। मिलोनी इटली के फासीवादी तानाशाह बेनिटो मुसोलिनी की विचारधारा को मानने वाली नेता हैं। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद यह पहला अवसर है जब इटली जैसे ईसाई देश की सत्ता पर दक्षिणपंथी पार्टी का कब्जा हुआ है और एक महिला जियोर्जिया मिलोनी प्रधानमंत्री बनने जा रही हैं। भारत के परिपेक्ष्य में बात करें तो जियोर्जिया मिलोनी के भाषण यहां खूब सुने जा रहे हैं जिनमें इस्लाम और अप्रवासी शरणार्थियों को लेकर कटु बातें कही गई हैं। हंगरी, स्वीडन, ऑस्ट्रिया, फ्रांस जैसे राष्ट्र मुस्लिम अप्रवासी समस्या से इतने त्रस्त हो चुके हैं कि वे अब इस्लाम और उसकी मान्यताओं को अपने देशों में कुंद करके ईसाईयत को बढ़ावा दे रहे हैं। इन सभी राष्ट्रों के नायक भी द्वितीय विश्व युद्ध के वे किरदार हैं जिन्हें पश्चिम ने षड्यंत्र करके खलनायक बना दिया। जिन राष्ट्रों में अभी राष्ट्रवादी सरकारें नहीं हैं और वे अमेरिका में पूंजीवादी प्रभाव में हैं, वहां भी जनता अब राष्ट्र प्रथम की अवधारणा को आत्मसात कर वर्तमान सरकारों को मुश्किल में डाल रही है।

याद कीजिए, पिछले वर्ष ऑस्ट्रिया की मंत्री सुजैन राब ने एक वेबसाइट लॉन्च की थी जिसका नाम था नेशनल मैप ऑफ इस्लाम। उक्त वेबसाइट में ऑस्ट्रिया में स्थित 620 से भी अधिक मस्जिदों, मुस्लिम संगठनों व उनके अधिकारियों के नाम और पते दिए गए हैं। इसके साथ ही वेबसाइट में मस्जिदों, उनके मौलानाओं, मुस्लिम संगठनों इत्यादि के विदेशों में उनके संभावित गठजोड़ की जानकारी भी शामिल है। जब यह मामला सार्वजनिक हुआ तो ऑस्ट्रिया में अल्पसंख्यक समुदाय द्वारा विरोध के स्वर मुखर हुए। मुस्लिम राष्ट्रों में भी इस कदम की निंदा की गई और परोक्ष रूप से धमकाया भी गया। खासकर मुस्लिम समुदाय का खलीफा बनने की इच्छा पाले बैठे तुर्की की ओर से इस मामले में बड़ी ही तीखी प्रतिक्रिया आई जबकि सऊदी अरब इस मुद्दे पर थोड़ा संयत रहा।

दरअसल, ऑस्ट्रिया में मुस्लिम जनसंख्या आठ प्रतिशत के साथ सबसे बड़ा अल्पसंख्यक समुदाय है और उसकी चिंता है कि इससे उसका सामाजिक तानाबाना बिगड़ रहा है। मैप ऑफ इस्लाम के सामने आने से यह भी पता चला कि ऑस्ट्रिया में मात्र 206 मस्जिदें ही अनुमति प्राप्त हैं और शेष बिना अनुमति के अवैध रूप से संचालित की जा रही हैं। और फिर ऑस्ट्रिया ही क्यों, पूरे यूरोप में बिना अनुमति अवैध मस्जिदों का निर्माण हो रहा है ताकि इस्लाम का प्रचार-प्रसार हो सके। ऑस्ट्रिया की ही भांति अब अन्य यूरोपीय राष्ट्र भी नेशनल मैप ऑफ इस्लाम को अपने यहां लागू करने की कवायद करने लगे हैं जो निश्चित रूप से मुस्लिम राष्ट्रों की चिंता बढ़ाने वाला है। विश्व इतिहास इस तथ्य की गवाही देता है कि जिस राष्ट्र ने मुस्लिमों को मानवता के नाते शरण दी है वह कालांतर में उसी के लिए नासूर बना है। बीते कुछ दशकों में यह समस्या आम हुई है कि किसी भी मुस्लिम राष्ट्र में अशांति अथवा अराजकता फैलती है तो वे अन्य किसी मुस्लिम राष्ट्र में शरण न लेकर बड़े पैमाने पर यूरोप का रुख करते हैं। यूरोप के राष्ट्रों ने भी शुरुआत में अप्रवासी मुस्लिमों को अपने यहां शरण दी किंतु बाद में इन्हीं अप्रवासी मुस्लिम समुदाय ने शरण देने वाले राष्ट्र में अपने अधिकारों की मांग शुरू कर दी तथा स्थानीय आबादी के प्रति आपराधिक कृत्यों को अंजाम देना शुरू कर दिया।

● **कुमार विनोद**

पार्टियां ईसाईयत को भी दे रही जमकर बढ़ावा

संगठनात्मक स्तर पर मुस्लिम वर्ग स्वयं को मजबूत करने के साथ ही आसपास के पंथों को मानने वालों को इस्लाम में आने का प्रलोभन देने लगा है। युद्ध-प्रभावित मध्य-पूर्व से आए बहुत सारे मुस्लिम यूरोप के कई देशों में शरणार्थी बनकर आए थे और अब बहुतों को वहां की नागरिकता भी मिल चुकी है। जो मुस्लिम अप्रवासी यूरोप पहुंचते हैं वो पहले तो अप्रवासी बनकर आते हैं लेकिन नागरिकता मिलने के बाद इस्लाम के नाम पर ही वहां के नियम कानून को मानना बंद कर देते हैं। उस देश में जहां वो रहते हैं उसको सम्मान देने की बजाय उनकी श्रद्धा का केंद्र सऊदी, तुर्की या इराक होता है। हालांकि अब यूरोप के राष्ट्र मुस्लिम शरणार्थियों की इस नीति को समझ चुके हैं। अतः वहां की जनता ऐसे राष्ट्रवादी दलों का जमकर साथ दे रही है जो इनके खिलाफ बोल रहे हैं। यूरोप में नव राष्ट्रवाद का जागरण करने वाली पार्टियां ईसाईयत को भी जमकर बढ़ावा दे रही हैं ताकि इस्लाम की आक्रामक विस्तार नीति से निपटा जा सके। फिलहाल तो यूरोप ने इस्लामिक विस्तारवाद को सीधे-सीधे चुनौती दी है और पहली बार इस्लामिक ताकतें भी यूरोप को लेकर आक्रामक मुद्रा में नहीं बल्कि बचाव की मुद्रा में है।

मंगली लड़कियां अपशगुनी क्यों?

लड़कियों पर कई पाबंदियां

असल में ऐसा कई लड़कियों के साथ होता है कि जब वे कॉलेज में होती हैं और शादी नहीं करना चाहतीं तब तो एक से बढ़कर एक रिश्ते आते हैं। वहीं जब वे शादी करना चाहती हैं तो ऐसा लगता है लड़कों का अकाल ही पड़ गया है। उनकी उम्र बढ़ने लगती लेकिन शादी तय नहीं हो पाती। इसके बाद लोग उस लड़की से बोलने लगते हैं कि 30 साल के पहले शादी करके सेटल हो जाओ। वरना बच्चा नहीं होगा। बाद में कोई लड़का तुमसे शादी नहीं करेगा। लोग यह नहीं जानते कि वह किस परेशानी से गुजर रही है। शादी नहीं होती है तो लड़की को और उसके परिवार वालों को ब्लेम करते हैं। वे कहते हैं और करो कैरियर पर फोकस, देखो अब लड़का ही नहीं मिल रहा है।

गत दिनों मैंने एक लड़की की कहानी पढ़ी। वह 33 साल की हो चुकी है, लेकिन उसकी शादी नहीं हो रही है। उसके घरवाले परेशान हैं। मोहल्ले वाले ताना मारते हैं और उसकी सहेलियां भी उसका मजाक उड़ाती हैं। वह अच्छी नौकरी करती है। परिवार वाले उसके लिए 5-6 साल से लड़का देख रहे हैं लेकिन बात नहीं बन पा रही है। वजह यह है कि वह मंगली है। 33 साल की लड़की की शादी के लिए घरवाले परेशान हैं। जब भी लड़के वाले उसे देखने आते हैं उसे अच्छे से सजाया जाता है। वह लड़के वालों के लिए चाय का ट्रे लेकर गेस्ट रूम में जाती है। वह मुस्कुराकर सबका अभिवादन करती है। वह हर एक शख्स को प्यार से नमस्ते करती है और फिर नाश्ता सर्व करने लगती है। वह खुद को कॉन्फिडेंट दिखाने की कोशिश करती है, मगर अंदर से वह काफी डरी रहती है। वह पूरी कोशिश करती है कि उससे जरा भी कोई गलती ना हो। वह नहीं चाहती कि उसके कारण बात बनने से पहले ही बिगड़ जाए।

उसे कभी चलाकर तो कभी खड़ा करके परखा जाता है। कोई कहता है कि पैर की छोटी उंगली जमीन को छू रही है कि नहीं? कोई उससे पूछता है कि आप शहर में अकेले कैसे रहती हैं? कोई कहता है कि आप इतनी सुंदर हैं तो फिर अब तक शादी क्यों नहीं की? वह बड़े ही आदर से सभी के बातों का जवाब देती है। वह उन बातों पर भी मुस्कुराती है जो उसे पसंद नहीं आती। उसे पता है कि उसकी हर प्रतिक्रिया पर लड़के वालों की नजर है। सभी लोग उसे जज करते हैं और उस पर कमेंट करते हैं मगर वह फिर भी चुप रहती है। वह ऐसा तबसे कर रही है जबसे 20 साल की थी... इतने रिश्ते आए मगर कहीं बात नहीं बनी। सभी लड़की को पसंद करते, उसकी तारीफ करते मगर जैसे ही उन्हें पता चलता है कि उसकी कुंडली में मांगलिक दोष है वे तुरंत शादी के लिए लिए मना कर देते। वह दुखी हो जाती है मगर कुछ कर नहीं सकती है। उसके वश में कुछ नहीं बचा।

जमाना कहां से कहां पहुंच गया है मगर मंगली लड़कियों की शादी आज भी आसानी से नहीं हो पाती है। मां-बाप लड़का खोजते-खोजते परेशान हो जाते हैं। वे किसी भी हाल में बेटी की शादी कराना चाहते हैं इसलिए वे दहेज में मोटी रकम देने को भी तैयार हो जाते हैं। असल में कुछ लोग मानते हैं कि कुंडली में मांगलिक दोष होने से वैवाहिक जीवन में परेशानियां आती हैं और उम्र कम हो जाती है। आपने भी शायद कहीं देखा हो कि मांगलिक दोष दूर कराने के लिए कैसे पेड़, बकरी और कुत्ते से लड़की की जबरन शादी करा दी जाती है। यह भी मान्यता है कि मंगली लड़की के लिए लड़का भी मांगलिक ही होना चाहिए। दोनों की उम्र 28 साल से अधिक होनी चाहिए। इसी अंधविश्वास के चक्कर में कई लड़कियों की शादी नहीं हो पाती है। समाज के कुछ लोग मंगली लड़कियों को अपशगुनी मानते हैं। कई लोग तो ऐसी लड़कियों को किसी शुभ कार्य में बुलाने से बचते हैं।

इस लड़की के साथ भी ऐसा ही कुछ हुआ। मंगली होने के नाते पहले तो एक के बाद कई लड़के वालों ने शादी से इनकार कर दिया। इसके बाद लड़की ने शादी की उम्मीद छोड़ दी। तभी उसकी मुलाकात ऑफिस में काम करने वाले एक लड़के से हुई। वह उससे शादी करना चाहता था। लड़का, दूसरी जाति का था इसलिए लड़की को अपने घरवालों को मनाने में परेशानी हुई, हालांकि बाद में वे इस रिश्ते के लिए राजी हो गए। मगर इस बार भी वही हुआ। लड़के के परिवार वाले मंगली लड़की से अपने बेटे की शादी नहीं कराना चाहते। इसलिए उन्होंने इस शादी से इनकार कर दिया। इस प्रेम कहानी में भी मंगली होना लड़की की शादी में अड़चन बन गया। लड़की को लड़के से उम्मीद थी मगर उसने कहा कि वह अपने माता-पिता के खिलाफ जाकर शादी नहीं कर सकता। अब बताइए लड़की ऐसी स्थिति में आखिर क्या करे? इस बार तो वह रिश्ता टूटा जिसे वह प्यार करती थी। सोचिए इस लड़की की हालत क्या होगी?

ऐसे लड़के भी कितने अजीब होते हैं ना? जो प्यार करने से पहले परिवार वालों से परमिशन नहीं लेते मगर शादी के मामले में ममाज बॉय बन जाते हैं। घरवाले लड़की को देखते हैं और मना कर देते हैं। लड़का चुपचाप इस बात को मान लेता है। वह लड़की के लिए स्टैंड लेने की कोशिश भी नहीं करता। तो लड़का जब साथ नहीं दे सकता उससे शादी करने से पहले एक बार सोचने की जरूरी है। जो इंसान हमारे लिए सही है वह हमें हर रूप में अपना लेता है...तो आप उन लड़कियों से क्या कहेंगे जिनकी शादी मंगली होने का कारण नहीं हो पा रही है? जो भी आता है उसे देखने के बाद रिश्ते के लिए मना कर देता है। उसे इतने लड़के रिजेक्ट कर चुके हैं कि वह अपना आत्मविश्वास खोने लगी है। लोग उससे पूछते हैं कि वह कब शादी करेगी लेकिन कैरियर की बात बोलकर टाल देती है। अब तो उसे ऐसा लगने लगा है कि उसकी कभी शादी ही नहीं हो पाएगी।

● **ज्योत्सना अनूप यादव**

विपत्तियों व संकट से बचाव का मार्ग श्रीरामचरितमानस

हिंदू धर्म के पवित्र ग्रंथों में से एक है रामचरितमानस जिसे तुलसीदास जी ने लिखा। श्रीरामचरितमानस अवधी भाषा में गोस्वामी तुलसीदास द्वारा 16वीं सदी में रचित एक महाकाव्य है। श्रीरामचरितमानस भारतीय संस्कृति में एक विशेष स्थान रखता है। उत्तर भारत में रामायण के रूप में कई लोगों द्वारा प्रतिदिन पढ़ा जाता है। श्रीरामचरित मानस में इस ग्रंथ के नायक को एक महाशक्ति के रूप में दर्शाया गया है जबकि महर्षि वाल्मीकि कृत रामायण में श्रीराम को एक मानव के रूप में दिखाया गया है। तुलसी के प्रभु राम सर्वशक्तिमान होते हुए भी मर्यादा पुरुषोत्तम हैं।

इस ग्रंथ में रामायण को अच्छी तरह से चौपाईयों के माध्यम से बताया गया है किस तरह राम का जीवन रहा, कैसे महापुरुष बनें। इसीलिए रामचरित मानस की हर एक चौपाई का मंत्र सिद्ध है जिन्हें सच्चे मन से पढ़ने से सभी मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं। यदि आपके अशुभ दिन चल रहे है, जिसके कारण आपको कई समस्याओं का सामना करना पड रहा है, तो इन मंत्रों के प्रभाव से आपके घर समृद्धि बनी रहेगी। यह मंत्र सिर्फ सुख के लिए ही नहीं है बल्कि बारिश न होने पर, लक्ष्मी प्राप्ति के लिए हो या फिर ज्ञान प्राप्ति के लिए हो। इन मंत्रों का मनन करने से सभी मनोकामनाएं पूरी होंगी। जानिए रामायण के इन चौपाई मंत्रों के बारें में जिससे आपको रामायण कामधेनु की तरह मनोवांछित फल देती है।

रामचरितमानस में कुछ चौपाइयां ऐसी हैं जिनका विपत्तियों तथा संकट से बचाव और ऋद्धि-सिद्ध के लिए मंत्रोच्चारण के साथ पाठ किया जाता है। इन चौपाइयों को मंत्र की तरह विधि विधान पूर्वक एक सौ आठ बार हवन की सामग्री से सिद्ध किया जाता है। हवन चंदन के बुरादे, जौ, चावल, शुद्ध केसर, शुद्ध घी, तिल, शक्कर, अगर, तगर, कपूर नागर मोथा, पंचमेवा आदि के साथ निष्ठापूर्वक मंत्रोच्चार के साथ करें। इन चौपाई मंत्र को अधिक समझने के लिए तुलसी दर्शन कवितावली, दोहावली, विनय पत्रिका, बरवै रामायण आदि ग्रंथों का अध्ययन जरूर करें।

ऋद्धि-सिद्ध की प्राप्ति के लिए रामायण के इस मंत्र का जाप करें जो इस प्रकार है-

साधक नाम जपहिं लय लाएं।
होहि सिद्धि अनिमादिक पाएं।।

परीक्षा में सफलता के लिए

जेहि पर कृपा करहिं जनुजानी।
कवि उर अजिर नचावहिं बानी।।
मोरि सुधारहिं सो सब भांती।
जासु कृपा नहिं कृपा अघाती।।

लक्ष्मी की प्राप्ति के लिए
जिमि सरिता सागर मंहु जाही।
जद्यपि ताहि कामना नाहीं।।
तिमि सुख संपत्ति बिनहि बोलाएं।
धर्मशील पहिं जहि सुभाएं।।

धन सम्पत्ति की प्राप्ति हेतु
जे सकाम नर सुनहिं जे गावहिं।
सुख सम्पत्ति नानाविधि पावहिं

अकाल मृत्यु से बचनें के लिए
नाम पाहरू दिवस निसि ध्यान तुम्हार कपाट।
लोचन निज पद जंत्रित प्रान केहि बात।।

रोगों से बचने के लिए
दैहिक दैविक भौतिक तापा।
राम काज नहिं काहुहिं व्यापा।।

जहर को खत्म करनें के लिए
नाम प्रभाऊ जान सिव नीको।
कालकूट फलु दीन्ह अमी को।।

प्रेम वृद्धि के लिए
सब नर करहिं परस्पर प्रीती।
चलहिं स्वधर्म निरत श्रुतिनीती।।

सुख प्राप्ति के लिए
सुनहि विमुक्त बिरत अरू विबई।
लहहि भगति गति संपति नई।।

शास्त्रार्थ में विजय पाने के लिए
तेहि अवसर सुनि शिव धनु भंगा।
आयउ भृगुकुल कमल पतंगा।।

विद्या प्राप्ति के लिए
गुरु ग्रह गए पढ़न रघुराई।
अलपकाल विद्या सब आई।।

ज्ञान प्राप्ति के लिए
छिति जल पावक गगन समीरा।
पंचरचित अति अधम शरीरा।।

विपत्ति में सफलता के लिए
राजिव नयन धरैधनु सायक।
भगत विपत्ति भंजनु सुखदायक।।

दरिद्रता दूर करने हेतु
अतिथि पूज्य प्रियतम पुरारि के।
कामद धन दारिद्र दवारिके।।

पुत्र प्राप्ति के लिए
प्रेम मगन कौशल्या निसिदिन जात न जान।
सुत सनेह बस माता बाल चरित कर गान।।

खोई हुई वस्तु पानें के लिए
गई बहारे गरीब नेवाजू।
सरल सबल साहिब रघुराजू।।

शत्रु को मित्र बनाने के लिए
गरल सुधा रिपु करहि मिताई।
गोपद सिंधु अनल सितलाई।।
शत्रु को मित्र बनानें के लिए
वयरू न कर काहू सन कोई।
रामप्रताप विषमता खोई।।

● ओम

समय से पहले

आज सुभाष बाबू के पोते का अन्नप्राशन है। इसलिए गुप्ता-परिवार में काफी चहल-पहल है, परंतु सुभाष बाबू की दीदी गुमसुम सी एक कोने में बैठी हैं। शादी के आठ साल बाद भी बहू के मां नहीं बन पाने पर उसने साफ-साफ कह दिया था- बहू बांझ है। बेटे की दूसरी शादी करा दो भाई। वंश आगे तभी बढ़ेगा। अब वह किसी से आंखें भी नहीं मिला पा रही हैं।

दीदी, तुम भी थोड़ी मदद कर दो, देर हो रही है। सुभाष ने कहा।

तुम्हारी पत्नी रेखा और तुम्हारी बहू ने मिलकर विधि विधान की सारी तैयारियां कर ली है। अब मेरा क्या काम? पचास वर्षीया रानी ने भाई सुभाष को जवाब दिया। दरअसल वह समझ नहीं पा रही थीं कि वह बहू की नजरों का सामना कैसे कर पाएंगीं।

अपनी दीदी की उदासीनता और असहजता देख सुभाष बाबू ने पाकशाला में जाकर अपनी पत्नी को धीरे से कहा- दीदी के मन पर बोझ है। उन्हें हल्का करना होगा।

रेखा ने बहू की ओर देखा। मानो कह रही हों-'दीदी तो तुम्हारी गुनाहगार है बहू!'

बाबूजी आप निश्चिंत रहें। बुआजी को मैं देखती हूं। तीस वर्षीया बहू ने कहा। वह चहकते हुए बुआ के पास गई और उनका चरण स्पर्श करते हुए हंसकर बोली, बुआजी! आशीर्वाद दीजिए। मुझे आप से कोई गिला-शिकवा नहीं है। चलिए मम्मीजी रसोईघर में आपका इंतजार कर रही हैं।

- निर्मल कुमार डे

बदले रिश्ते

अचानक फोन की घंटी बजी सोनाक्षी ने लपककर फोन उठाया

हैलो, उधर से आवाज आई

भैया सोनाक्षी ने चहककर कहा

सोना तुम से कुछ बात करनी थी, अक्षय ने कहा

अक्षय सोनाक्षी को प्यार से सोना कहता था।

हां कहिए भैया, आपने कितने दिनों के बाद फोन किया है। क्या मेरी याद आती नहीं? सोनाक्षी का आवाज थोड़ा भर्रा गया।

अक्षय ने उसे नजरंदाज करते हुए कहा सोना अब हम बच्चे नहीं रहे, अब हमलोग की अपनी-अपनी गृहस्थी है, अपनी-अपनी जिम्मेदारी है, छोड़ो इन बातों को मुझे तुमको कुछ कहना है...

हां भैया कहिए, सोनाक्षी ने उत्सुकता वश कहा।

देखो सोना तुम हमारे घर के मामले में दखल देना बंद करो, बात-बात पर अपनी भाभी को सलाह देना बंद करो, वह क्या करती और क्या नहीं उससे तुम्हारा क्या लेना-देना।

सोनाक्षी थोड़ी देर के लिए आवाक रह गई, ऐसा क्या कह दिया मैंने भाभी को।

ये तुम्हारी भाभी की मर्जी वो अपने मायके वालों पर ज्यादा ध्यान दें अपने मम्मी-पापा को अपने पास रखें। तुम कौन होती हो उसे ये कहनेवाली अपने ससुराल वालों का ख्याल रखिएगा, पापा की देखभाल करना उसकी जिम्मेदारी। तुम अपनी सोच अपने पास रखो। आगे से उससे कुछ न कहना। इतना कहकर अक्षय ने फोन रख दिया। सोनाक्षी को कुछ कहने का मौका भी नहीं दिया।

सोनाक्षी सोचने लगी यही वो भैया है जो उससे इतना प्यार करते थे उसकी हमेशा परवाह किया करते थे। आज कितना बदल गए है, उनकी नजर उसकी कोई कीमत नहीं है। उसके जज्बातों की कोई परवाह नहीं है। ये सोचकर उसकी आंखें डबडबा गई।

- विभा कुमारी 'नीरजा'

बिना किए फिर क्या होगा

तुम कहते हो ये करने से,
भला आज क्या होगा,
तुम्हीं कहो बिना किए फिर,
आगे और क्या होगा?

बिन बनाए चाय न बनता,
बैठे-बैठे क्या होगा,
रख हाथ पर हाथ बैठा रहो,
रोने से फिर क्या होगा?

जीवन को तुम खेल न समझो,
करने से ही सब होगा,
आज किए तो जल्दी होगा,
कल किए तो विलंब होगा।

अजी आज लगाएंगे पौधा,
तभी तो कल वो फल देगा,
आज को केवल देखोगे तो,
बोलो कल फिर क्या होगा?

जो संघर्ष राह पर आए बिना,
हारोगे तो क्या होगा,
दुश्मन की गर्जन से कांप गए,
बोलो फिर क्या होगा?

ये जीवन एक लड़ाई है,
न समझोगे फिर क्या होगा,
नैनों से नीर बहाने से,
घर बैठकर बोलो क्या होगा?

चारो ओर अंधेरा है तो,
किसी को सूरज तो बनना होगा,
भटक रहे हैं दुनिया वाले तो,
सही राह दिखाना ही होगा।

जन्म लिए इस धरती पर तो,
फर्ज अदा करना होगा,
इस धरती पर भेदभाव का,
अंत हमें करना ही होगा।

जीवन है लड़ना होगा,
चुनौती स्वीकार करना होगा,
सबकी खुशियाली खातिर,
आज हमें सोचना होगा।

तुम कहते हो ये करने से,
भला आज क्या होगा,
तुम्हीं कहो बिना किए फिर,
आगे और क्या होगा?

- अमरेन्द्र

दिग्गजों की विदाई

दुनिया की टेनिस मानो अचानक सूनी-सी हो गई है। कुछ समय पहले तक हम यह सोच भी नहीं सकते थे कि टेनिस के मैदान में हम महान सेरेना और फेडरर को नहीं देख पाएंगे। लेकिन दोनों के लगभग एक ही समय में इस खेल से संन्यास ने टेनिस प्रेमियों में उदासी भर दी है। खिलाड़ी आएंगे और चले जाएंगे, लेकिन जीत के बाद सेरेना का खास अंदाज में ट्रॉफी के साथ फोटोशूट और फेडरर की मुस्कुराहट अब मैदान पर नहीं देखेंगे। ढेरों रिकॉर्ड्स से इतर इन दोनों ने दर्शकों को ढेर सारी और भी यादें दीं, जो भूले नहीं भुलाई जा सकेंगी। सेरेना और फेडरर के टेनिस से प्रेम और उनके स्टेमिना का इस बात से पता चलता है कि दोनों ने 41 साल की उम्र में संन्यास लिया, जिसे कड़े मुकाबले वाले अंतरराष्ट्रीय पटल पर बड़ी उम्र माना जाता है।

पहले बात फेडरर की, जिन्होंने कहा कि वह ग्रैंड स्लैम से संन्यास ले रहे हैं। बहुत कम को पता होगा कि यह महान खिलाड़ी स्कूल का ड्रॉप आउट था। लेकिन टेनिस में उसने जो किया, वह इतिहास बन गया। दर्जनों रिकॉर्ड उन्होंने अपने नाम किए और अपने व्यवहार से दर्शकों का दिल जीत लिया। स्विट्जरलैंड के फेडरर पशुओं को भी बहुत प्यार करते हैं और उनके फार्म में गाय भी है। जब 21 साल की उम्र में उन्होंने अपना पहला विंबलडन टाइटल जीता, तब किसी ने उन्हें तोहफे में एक दुर्लभ और महंगी नस्ल की गाय दी, जिसका नाम फेडरर ने जूलियट रखा।

फेडरर जब 16 साल के थे, उन्होंने स्कूल छोड़ दिया, लेकिन वे मातृभाषा स्विस के अलावा नौ और भाषाएं जानते हैं। वह इतने सहज और आम इंसान हैं कि उनके आलू-सब्जी खरीदते हुए दर्जनों फोटो या वीडियो आप इंटरनेट पर देख सकते हैं। कुल मिलाकर फेडरर विवादों से दूर ही रहे। उन्होंने टेनिस में जो हासिल किया, वह अपनी मेहनत और खेल के प्रति समर्पण से हासिल किया। और जो लोकप्रियता अर्जित की, वह अपने सौम्य व्यवहार से। फेडरर ग्रास कोर्ट के शहंशाह रहे। हालांकि लाल बजरी के कोर्ट में भी उन्होंने दिग्गजों को हराया। फेडरर अपने वचन के भी पक्के थे। एक बार उन्होंने 6 साल के एक बच्चे इजहान अहमद को दिया वचन वर्षों बाद निभाया। दरअसल फेडरर ने सन् 2017 में अपने इस फैन इजहान से टेनिस खेलने के वादा किया था। इजहान ने उनसे सवाल किया था कि क्या वह 7-8 साल और अपना खेल जारी रख सकते हैं, क्योंकि वे बड़ा होकर उनके साथ टेनिस खेलना चाहता है। फेडरर ने जब हां कहा, तो इजहान को विश्वास नहीं हुआ। लिहाजा उसने पूछा कि क्या आप वादा कर रहे हैं? इस पर फेडरर का जवाब था- 'यस, पिंकी प्रॉमिस।' यह महान खिलाड़ी पुरुष सिंगल्स में सबसे ज्यादा ग्रैंड स्लैम खिताब (20) जीतने के मामले में नडाल और जोकोविक के बाद तीसरे नंबर पर है। फेडरर ने 28 जनवरी, 2018 को ऑस्ट्रेलियन ओपन के रूप में आखिरी ग्रैंड स्लैम खिताब जीता था। हालांकि इस खिताब के बाद फेडरर पर उम्र का असर दिखने लगा और पहले वाले फेडरर नहीं रहे। फेडरर ने कैरियर में 8 विम्बलडन, 6 ऑस्ट्रेलियन ओपन, पांच यूएस ओपन और एक फेंच ओपन खिताब जीता। ओलंपिक में भी एक गोल्ड और एक सिल्वर मेडल भी उनके नाम है।

सेरेना विलियम्स- सेरेना को निर्विवाद रूप से ओपन ईरा की महानतम महिला टेनिस खिलाड़ी माना जाता है। अपने 27 साल के लंबे और लाजवाब कैरियर में विलियम्स ने कई रिकॉर्ड बनाए और अपने खेल से टेनिस प्रेमियों को मंत्रमुग्ध किया। यूएस ओपन उनका आखिरी ग्रैंड स्लैम रहा। महान होने के बावजूद कुछ विवाद भी उनके नाम जुड़े। लेकिन यह सेरेना विलियम्स ही थीं, जिन्होंने 16 की उम्र में डेब्यू किया और 17 की उम्र में ही पहला ग्रैंड स्लैम जीत लिया था। वह ढाई दशक तक टेनिस कोर्ट की महारानी रहीं। उन्होंने इस दौरान वह सब उपलब्धियां हासिल कीं, जिनकी एक खिलाड़ी कल्पना करता है। टेनिस कोर्ट से विदाई की स्पीच के दौरान विलियम्स का भावुक होना इस बात का प्रमाण है कि टेनिस से उन्हें कितनी मोहब्बत थी। लगभग रोते हुए सेरेना ने कहा- 'मैं सेरेना नहीं होती, अगर वीनस (सगी बहन और टेनिस स्टार) नहीं होती। मैं मां बनने और सेरेना के डिफरेंट वर्जन को एक्सप्लोर करने के लिए तैयार हूं।'

सेरेना ने महज चार साल की उम्र में ही रैकेट थाम लिया था। उनके पिता रिचर्ड विलियम्स चाहते थे कि कम से कम एक बेटी टेनिस स्टार बने। सेरेना का जन्म मिशिगन में हुआ था, लेकिन छोटी उम्र में ही उनका परिवार कैलिफोर्निया आ गया। सेरेना की मां ओरेसीन प्राइस और पिता रिचर्ड ने ही उन्हें ट्रेनिंग दी। जब वह 13 साल की थीं, तब पिता उन्हें 6-6 घंटे कड़ी धूप में ट्रेनिंग करवाते थे। सन् 1996 में पहला प्रोफेशनल टेनिस टूर्नामेंट खेलने वाली सेरेना ने 24 साल पहले मार्टिना हिंगिस को हराकर साल 1999 में कैरियर का पहला और सबसे कम उम्र में ग्रैंड स्लैम जीता। उन्होंने 39 मेजर टाइटल जीते, जिनमें 23 सिंगल्स और 14 महिला डबल्स और दो मिक्स्ड डबल्स शामिल हैं। सेरेना के नाम चार ओलंपिक मेडल भी हैं।

सेरेना ने साल 2017 में आखिरी ग्रैंड स्लैम टाइटल जीता था। सेरेना ने 6 ग्रैंड स्लैम 32 साल की उम्र के बाद जीते। उन्होंने 22 साल की उम्र तक टेनिस के चारों मेजर टूर्नामेंट जीत लिए थे। इस दौर में उनकी बहन वीनस विलियम्स ही उनकी सबसे बड़ी प्रतिद्वंद्वी रहीं। सेरेना मार्गरेट कोर्ट के 24 ग्रैंड स्लैम खिताब जीतने के रिकॉर्ड को तोड़ने का लक्ष्य हासिल नहीं कर पाईं। उन्होंने कैरियर में 23 ग्रैंड स्लैम एकल और बहन वीनस के साथ 14 युगल खिताब जीते। चार ओलंपिक स्वर्ण पदक भी जीते। सितंबर, 2017 में सेरेना ने बेटी को जन्म देने के सिर्फ ढाई महीने बाद ही कोर्ट पर वापसी की। उसके बाद विंबलडन साल 2018 और 2019, यूएस ओपन साल 2018 और 2019 के फाइनल खेले लेकिन जीत नहीं सकीं।

सेरेना के नाम दो गोल्डन स्लैम हैं। गोल्डन स्लैम हासिल करने वाली सेरेना पहली खिलाड़ी बनी थीं। बहन वीनस के साथ मिलकर डबल्स में भी उन्होंने यह कारनामा दोहराया। सेरेना विवादों के कारण भी चर्चा में रहीं। अंपायर को चोर कहने से लेकर पिता रिचर्ड विलियम्स पर मैच फिक्स के आरोप लगने तक। साल 2002 के यूएस ओपन में वह कैट सूट पहनकर खेलने उतरीं और इस ड्रेस पर काफी हंगामा हुआ।

● **आशीष नेमा**

बॉलीवुड इंडस्ट्री की मशहूर अदाकारा करीना कपूर अक्सर अपने फैशन सेंस को लेकर सुर्खियों में बनी रहती हैं। अपने स्टाइल स्टेटमेंट के लिए मशहूर बेबो रील ही नहीं रियल लाइफ में भी काफी स्टाइलिश रहती हैं। करीना कपूर अक्सर किसी ना किसी वजह से चर्चा में रहती हैं।

...जब एक फिल्म के लिए करीना ने महज दो घंटे में बदले 130 जोड़ी कपड़े

अपनी स्टाइलिंग और ड्रेसिंग को लेकर चर्चा में रहने वाली करीना इस मामले में रिकॉर्ड तक कायम कर चुकी हैं। दरअसल, करीना से जुड़ा यह एक ऐसा किस्सा भी है, जिसे सुन शायद आप हैरान रह जाएंगे। हर फिल्म में अपनी खूबसूरती से लोगों का दिल जीतने वाली अभिनेत्री करीना कपूर सिर्फ दो घंटे 100 से ज्यादा ड्रेसेस पहनने का रिकॉर्ड अपने नाम कर चुकी हैं। दरअसल, बात साल 2012 की है, जब अभिनेत्री की फिल्म हीरोइन पर्दे पर आई थी। इस फिल्म के दौरान एक्ट्रेस ने 20-30 नहीं बल्कि कुल 130 ड्रेसेस पहनने का कीर्तिमान बनाया था। मधुर भंडारकर की इस फिल्म में कई बड़े डिजाइनर्स की 130 ड्रेस पहनी थी। इस फिल्म से जुड़ा एक और मजेदार किस्सा भी है, जिसके बारे में खुद फिल्म के निर्देशक ने बताया था। फिल्म की बात करें तो साल 2012 में आई ये फिल्म चकाचौंध से भरी फिल्मी दुनिया के काले सच पर आधारित है। फिल्म में ग्लैमर वर्ल्ड की चकाचौंध में छिपी हस्तियों के पर्दे की पीछे की जिंदगी दिखाया गया है। इस फिल्म में करीना कपूर के अलावा अभिनेता अर्जुन रामपाल बतौर मुख्य अभिनेता नजर आए थे।

कितना पैसा खर्च हुआ कपड़ों पर... एक बार फिल्म के बारे में खुलासा करते हुए मधुर भंडारकर ने बताया था कि हीरोइन फिल्म में जितना पैसा उन्होंने करीना के कपड़ों पर खर्च किया था, उससे भी कम बजट में उन्होंने अपनी फिल्म चांदनी बना ली थी। इस फिल्म में करीना कपूर की स्टाइलिंग और उनके आउटफिट भी खूब चर्चा हुई थी। एक्ट्रेस ने इस दौरान बॉलीवुड के कई बड़े-बड़े डिजाइनर्स की 130 ड्रेसेस पहनी थीं।

जब 10 से 12 दिनों तक नहीं नहाए आमिर खान

बॉलीवुड के मिस्टर परफेक्ट आमिर खान बहुत ही सोच-समझकर फिल्मों करते हैं। इसी वजह से वे बेहद ही कम फिल्में करते हैं लेकिन हर एक फिल्म में वे हमेशा की तरह शानदार नजर आते हैं और अपने हर किरदार में फिट बैठते हैं। लेकिन क्या आप जानते हैं कि मुख्य अभिनेता के तौर पर फिल्म 'कयामत से कयामत तक' से अपना फिल्मी सफर शुरू करने वाले आमिर खान ने कई फिल्में कीं जिन्होंने बॉक्स ऑफिस पर सफलता के नए पैमाने बनाए मगर क्या आपको पता है कि एक फिल्म के लिए उन्होंने 12 दिन तक नहीं नहाया था।

आपको बता दें विक्रम भट्ट के निर्देशन में बनी फिल्म 'गुलाम' के एक एक्शन सीन में आमिर को ट्रेन के सामने झंडा लेकर दौड़ना था। फिल्म मेकर्स ने आमिर को ट्रेन के पास आने से पहले ही कूदने को कहा था लेकिन आमिर इसे परफेक्ट बनाने की खातिर दौड़ते-दौड़ते ट्रेन के करीब पहुंच गए थे। इसके अलावा इस फिल्म के क्लाइमेक्स सीन शूट करने में करीब 12 दिन लग गए थे। फाइटिंग सीन में आमिर को फिल्म के विलेन ने खूब पीटा जिसकी वजह से आमिर का चेहरा खून से लथपथ और गंदगी से सन गया था। इस बात को सुनकर आपको ताज्जुब जरूर होगा लेकिन 12 दिनों तक न नहाना आमिर खान के लिए कोई बड़ी बात नहीं हैं। आमिर की इससे जुड़ी एक आदत है जिसका खुलासा उनकी एक्स वाइफ किरण खेर ने कॉफी विद करण शो के इंटरव्यू के दौरान किया था।

शाहरुख नहीं बल्कि कोई और था डीडीएलजे के लिए पहली पसंद

दिलवाले दुल्हनियां ले जाएंगे शाहरूख की उन फिल्मों में से एक है जिनसे उनको काफी पॉपुलैरिटी हासिल हुई जो आज तक बरकरार है। इस फिल्म में शाहरूख ने राज नाम के एक लड़के का किरदार निभाया था, जो सिमरन के प्यार में पागल होता है। वहीं राज और सिमरन की केमेस्ट्री लोगों का काफी पसंद आई थी और फिल्म हिट साबित हुई थी। और इस कदर हिट हुई थी कि लोग आज भी इसे देखना बेहद पसंद करते हैं। लेकिन यहां पर आपको जानकर हैरानी होगी कि भले ही शाहरूख ने इस फिल्म में राज का किरदार निभाया हो, और हिट भी रहे। लेकिन वो इस किरदार के लिए मेकर्स की पहली पंसद नहीं थे। बल्कि राज के किरदार के लिए मेकर्स सैफ अली खान को इस फिल्म में लेना चाहते थे।

हालांकि किसी कारण से बात नहीं सकी। यह बात सुनने में आपको थोड़ी अजीब लगेगी लेकिन सैफ अली खान के अलावा डीडीएलजे के लिए मेकर्स ने हॉलीवुड एक्टर टॉम क्रूज को भी ऑफर दिया था। हालांकि बाद में शाहरूख के साथ बात बनी, और उन्हें ही राज के किरदार में लिया गया।

भांग में पड़ा कुंआ

घड़ी हमारा आभूषण है, शृंगार है। इसके बिना नर-नारी का जीना दुश्वार है। इसीलिए गांवों की नई दुल्हिनें उसे झाड़ू-पोंछा लगाते समय, पानी भरते समय, दही बिलोते हुए, पालतू पशुओं को चारा पानी करते हुए तथा इसी प्रकार के अन्य सैकड़ों गृह-कार्य निबटाते हुए अपनी कलाई की शोभा बढ़ाने में कभी नहीं चूकतीं। पता नहीं कब घड़ी देखने की आवश्यकता पड़ जाए? बिना पढ़ी-लिखियों को तो और भी ज्यादा जरूरत है, ताकि देखने वाले उन्हें सुशिक्षित समझें। भले ही घड़ी देखना नहीं आता हो। घड़ी हमारा एक अनिवार्य शृंगार है। तभी तो उसे मोबाइल, टीवी, लैपटॉप, कंप्यूटर और बहुत से खिलौनों आदि में दिया जाने लगा है। क्योंकि बच्चों को भी तो समय देखने की आवश्यकता पड़ सकती है। इसलिए निर्माताओं ने सबका ध्यान रखा है। हम सभी समय-प्रिय नागरिक जो हैं।

यह तो हुई घड़ी की बात। अब आते हैं समय की प्रियता पर। हमारे देशवासियों की घुट्टी में यह घोल-घोल कर पिलाया जाता है कि कहीं भी समय से मत पहुंचना। यदि भूल से भी समय से जा पहुंचे तो नेता को सुनने-देखने के लिए भीड़ नहीं मिलेगी। इसलिए नेताजी का अटल नियम है कि चार-छ: घंटे विलम्ब से ही जाओ। अन्यथा तुम्हारे नारे और जयकारे कौन लगाएगा। भीड़ है तो नेता है, अन्यथा उसे भला कौन पूछता है! इस प्रकार नेता का विलम्ब से पहुंचना एक नियम बन गया। अब जनता भी कम होशियार नहीं। वही पहले जाकर क्यों धूप और धूल खाए? इसलिए टेंट, माला, माइक लगाने वालों को छोड़कर वह भी आराम से सविलम्ब ही पहुंचती है। और यदि सौभाग्य से आ भी गए तो उनके जाने तक भी आने वालों का तांता समाप्त नहीं होता। नेताजी तो अपने गुर्गों से मोबाइल से भीड़ का जायजा पहले से ही लेते रहते हैं कि हां भाई गुप्ता जी कितने लोग आ गए? उनकी सूचना पर ही नेताजी का कार या हेलीकॉप्टर का चालक आहूत किया जाता है कि अब चलें। मैदान भर गया है।

नेताजी के संबंध में एक महत्वपूर्ण तथ्य यह भी है कि यदि वे समय से पहुंच गए तो उन्हें छोटा नेता माना जाता है। बड़ा नेता वही है जो या तो जनता को दिन में ही प्रतीक्षा के बड़े-बड़े तारे गिनवा दे अथवा छह घंटे बाद न आने वाली ट्रेन की तरह सूचना भेज दे कि नेताजी अन्यत्र व्यस्त हैं, इसलिए आने का कार्यक्रम रद्द कर दिया है। अब जनता गाली दे, तो देती रहे। जिस नेता को जितनी गालियां मिलती हैं, वह उनके लिए च्यवनप्राश की तरह यौवन वर्द्धक ही होता है। वह गाली प्रूफ जो होता है।

स्कूल-कॉलेज में पढ़ने जाते समय प्राय: वे विद्यार्थी जिनका घर संस्था के समीप ही स्थित होता है, घर से तब निकलते हैं, जब चपरासी का घंटा टन-टन की ध्वनि के साथ उन्हें आमंत्रित करने लगता है। कुछ अध्यापक तो अपना खेत जोतकर या दुकान चलाकर तब जाते हैं, जब उनका पीरियड निकल चुका होता है। परंतु उन्हें इसका कोई गिला-शिकवा नहीं। क्योंकि कोई भी देखने, सुनने और कहने वाला ही नहीं तो नई बहू भी तब उठती है, जब सूरज की किरणें उसकी खिड़की में पैर पसारने लगती हैं। चिड़ियों का मादक संगीत उन्हें आहूत करने लगता है कि अब तो उठ जाओ। मुर्गे ने तो कब से बांग लगा-लगा कर थक हार कर बोलना बंद कर दिया।

शादी विवाह के निमंत्रण पत्रों में प्रतिभोज का समय 3 या 4 बजे का छपवाया जाता है, लेकिन शाम सात बजे से पहले जीमने वाले नहीं जाते। इससे भी उनका महत्व बढ़ता है। ज्यादा बड़े लोग तो केवल पांच मिनट के लिए खुशबू सूंघने जाते हैं। उनके न खाने के कई रहस्यपूर्ण कारण हो सकते हैं। लेकिन हमें और आपको इससे क्या लेना-देना कि नेताजी ने क्यों नहीं भोजन किया? खाएं तो ठीक और नहीं खाएं तो भी ठीक। यदि नेताजी की राजनीति हमारी आपकी समझ में आ जाए तो उसकी नेतागिरी बेकार और राजनीति दो कौड़ी न हो जाएगी?

इस स्थान पर यह भी बतला देना परम् आवश्यक है कि एक आध अंगुलियों के पोरों पर गिना जाने वाला स्थान ऐसा भी है, जहां हम भारतीय बेचारों को समय से पहुंचना ही पड़ता है। जैसे ट्रेन छूटने के भय से स्टेशन पर, राशन या अन्य अंध रेवड़ी जैसी चीज खत्म न हो जाए, इसलिए वितरण स्थल पर, मुफ्त वितरण स्थल पर समय से नहीं, समय-पूर्व जा धमकना हमारा स्वभाव है। प्रकृति है। सुकृति है। यह सभी स्थल भारतीय जन मानस की बेचारगी के सशक्त प्रमाण हैं। इसीलिए तो हम भारतीय धन्य हैं और अपनी पीठ अपने आप थपथपाने में नहीं चूकते, नहीं थकते।

हमारे देश में मुहूर्त देखने और पत्रा देखने का विशेष पवित्र संस्कार है। शुभ मुहूर्त के अनुसार तेल, ताई, लग्न, भांवर आदि संस्कारों को नियोजित किया जाता है। किंतु कोई भी शुभ कार्य करते समय उसे विस्मृत कर उसे उठाकर ताक पर सजा दिया जाता है। सभी कार्य घर वालों की मनमर्जी से सुविधानुसार किए जाते हैं। समय के महत्व को ताड़ के पेड़ पर टांगने के चाहे जो नतीजे हों, लेकिन उसका विवाह, शादी, गृह-प्रवेश, दुकान आदि के मुहूर्त, उद्घाटन आदि में कोई भी महत्व नहीं माना जाता। भारतीय समय-प्रियता के कारण भारतीय-समय (आईएसटी) एक सजीला मजाक बनकर रह गया है। बना रहे। जो समय को नष्ट करता है, समय भी अपनी करनी में नहीं चूकता। देश के मुहूर्त, पत्रा, कुंडली, सब का ऐसा घालमेल देश के वासियों की छवि में चार नहीं, चार सौ चालीस चांद से चमका रहा है। हमें ऐसे ही भारतीय होने पर गर्व करने का परामर्श ही नहीं दिया जाता, हमें फूलकर कुप्पा होने के लिए भी प्रेरित किया जाता है। कुएं में भांग नहीं पड़ी, भांग में कुंआ पड़ा हुआ है।

● **डॉ. भगवत स्वरूप 'शुभम'**

HEIDELBERGCEMENT

149 वर्षों का अतुलनीय अनुभव

माईसेम सीमेन्ट की सर्वश्रेष्ठ गुणवत्ता, मज़बूती और टिकाऊपन के पीछे उसके विश्व प्रख्यात उत्पादनकर्ता जर्मन कंपनी हाइडलबर्ग सीमेन्ट का 149 वर्षों का अतुलनीय अनुभव है जो 50 देशों में लगातार सुनिश्चित करता आया है कि उसके द्वारा उत्पादित सीमेन्ट का हर कण गुणवत्ता के मापदंड पर खरा उतरे ताकि उनका नारा "सर्वोत्तम निर्माण के लिए" उसके ग्राहकों का विश्वास पात्र बना रहे।

क्योंकि जब सीमेन्ट की गुणवत्ता का सवाल हो,
तो सीमेन्ट का हर कण मायने रखता है..

माईसेम सीमेन्ट | सर्वोत्तम निर्माण के लिए

सस्ता सीमेन्ट या बढ़िया सीमेन्ट - फैसला आपका

For all licenses and BIS standards please refer to www.bis.gov.in
HeidelbergCement India Limited CIN: L26942HR1958PLC042301 Phone +91-124-4503700 e-mail - assistance@mycem.in

SCIENCE HOUSE MEDICAL PVT. LTD.

D-10™ Hemoglobin Testing System

For HbA_{1c}, HbA_2 and HbF

Flexible
to solve more testing needs

Comprehensive
B-thalassemia and diabetes testing

Easy
for simple operation

Dependability is about more than keeping your laboratory running smoothly; It's about the quality diabetes care you support. That's why we developed the D-10™ System with reliability and efficiency in mind.

A simple, fully-automated solution, the D-10™ System Combines diabetes and B-thalassemia testing, enabling rapid HbA_{1c} or $HbA_2/F/A_{1c}$ testing using pripary tube sampling-so you can accomplish more in fewer steps, With the D-10™ System, It's easier to deliver a full picture of diabetes treatment progress-and that can be the difference for the people who count on you most.

Add:- C-65, Gautam Nagar, Near Chetak Bridge, Bhopal-462023
GST.No. : 23AAPCS9224G1Z5 Email : shbple@rediffmail.com
Phone : +91-0755-4241102, 4257687, Fax : +91-0755-4257687